Tni आवाज़

राजस्थान की राजनीति

E-mail: tniawaz.news@gmail.com

आपकी आवाज के साथ....

RAJHIN/2012/43137

हिन्दुस्तान पत्रिका
HINDUSTAN KI AWAZ

जयपुर, दौसा, करौली, अलवर, टोंक, अजमेर, भरतपुर, धौलपुर, बीकानेर, कोटा, सवाईमाधोपुर से प्रसारित

www.hpnews.in/www.tniawaaz.in | जयपुर, सोमवार 22 अप्रैल, 2024 | » वर्षः 2 | » अंकः 177 | » पृष्ठः 8 | » मूल्यः 2.00 रू.

झालावाड़ में दर्दनाक सड़क हादसा, शादी समारोह से लौट रही वैन की ट्रक से भीषण टक्कर, 9 लोगों की मौत

झालावाड़

राजस्थान के झालावाड़ जिले में एक बड़ा सड़क हादसा हो गया. बारातियों से भरी वैन को ट्रक ने टक्कर मार दी. जिससे 9 लोगों की मौत हो गई. झालावाड़ जिले के अकलेरा के पास पांचोला में मध्य प्रदेश से लौट रहे बारातियों की वैन दुर्घटना का शिकार हो गई. मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल में भेज दिया गया है. वहीं एक घायल का अस्पताल में इलाज चल रहा है. झालावाड़ जिले के अकलेरा कस्बे में एक लड़के का विवाह समारोह था. जिसकी बारात मध्य प्रदेश के खिलचीपुर इलाके में गई थी. शनिवार को देर रात 10 दोस्त एक मारुति वैन में सवार होकर वापस अकलेरा लौट रहे थे. इस दौरान जब उनकी वैन अकलेरा के हा॥-52 पर खुरी पचोला के पास पहुंची तो सामने से आ रहे ट्रक से उनकी भिड़ंत हो गई. हादसे के बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई. सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची और राहत-बचाव का काम शुरू किया गया. वैन से निकालकर घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया जहां डॉक्टरों ने 9 लोगों को मृत घोषित कर दिया. वहीं एक घायल का अस्पताल में इलाज किया जा रहा है. मृतकों के शवों को अकलेरा अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया गया है. वहीं आरोपी ट्रक चालक को हिरासत में ले लिया गया और आगे की कार्रवाई की जा रही है. झालावड़ एसपी ऋचा तोमर के अनुसार, हादसे का शिकार हुए लोग बागरी समाज के थे जो अपने रिश्तेदार के शादी समारोह में शामिल होने के लिए मध्य प्रदेश गए थे. वापस लौटते समय रविवार तड़के 3 बजे के करीब ट्रक की टक्कर से हादसा हो गया. जिससे वैन की परखच्चे उड़ गए. वहीं जयपुर-अजमेर एक्सप्रेस वे पर भी एक बड़ा हादसा हो गया. बाइक को टक्कर मारती हुई एक कार सर्विस लेन में खड़े ट्रक में घुस गई. जिससे कार सवार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई. वहीं गंभीर रूप से घायल बाइक सवार की भी अस्पताल ले जाते समय मौत हो गई.

अब खली और खलबली काम नहीं आएगा, ढाई किलो नहीं पाव हाथ काफी हैः भाटी

बाड़मेर/जयपुर

राजस्थान में लोकसभा के दूसरे चरण को लेकर सियासी पारा लगातार चढ़ा हुआ है। इस दौरान बहुचर्चित बाड़मेर जैसलमेर लोकसभा सीट पर काफी रोचक मुकाबला बना हुआ है। बीजेपी की तरफ से कैलाश चौधरी, कांग्रेस की तरफ से उम्मेदाराम बेनीवाल और निर्दलीय प्रत्याशी रविंद्र सिंह भाटी के बीच जोर आजमाइश चल रही है। इसके चलते इस सीट पर स्टार प्रचारकों का जमावड़ा लगा हुआ है। इस दौरान रविवार को भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में प्रसिद्ध W W F के रेसलर द ग्रेट खली ने प्रचार अभियान में हिस्सा लिया और चौधरी के लिए वोट मांगे।

स्टार प्रचारकों को लेकर भाटी का जोरदार हमला

बाड़मेर जैसलमेर लोकसभा सीट पर बीजेपी ने अपनी पूरी ताकत झोंक रखी है। पीएम मोदी की सभा के बाद यहां स्टार प्रचारकों की फौज लगी हुई है। रविवार को भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में W W F के सुपरस्टार ग्रेट खली ने वोट मांगे। बताया जा रहा है कि अब बॉलीवुड स्टार सनी देओल और कंगना रानोट भी प्रचार अभियान में आने वाली है। इसको लेकर रविंद्र सिंह भाटी ने जमकर हमला करते हुए तंज कसा। उन्होंने कहा कि रेसलर द ग्रेट खली यहां आ रहे हैं, वैसे मैं सबसे कहूंगा। आप देखने जरूर जाना, लेकिन 26 तारीख को आप सोच समझकर वोट करना और आपको यह भी पता है कि किसे वोट देना है। भाटी ने दावा किया है कि किसी के आने या जाने से यहां कोई फर्क नहीं पड़ने वाला हैं।

सनी देओल को लेकर भाटी का तंज, जनता का पांव पड़ेगा भारी

फिल्म स्टार सनी देओल के दौरे पर भाटी ने कहा कि फिल्म गदर में हैंडपंप उखाड़ने वाले भी कुछ दिनों में आने वाले हैं। वह यहां आएंगे और कहेंगे कि यह ढाई किलो का हाथ है, लेकिन उन्हें कैसे बताएं कि आपके ढाई किलो के हाथ के सामने जनता का पांव भारी है। भाटी ने कहा कि मौजूदा सांसद के पास 5 सालों में बाड़मेर के लिए क्या किया? उसका हिसाब देने जैसा कुछ नहीं है। इसलिए वह अब लोगों का मनोरंजन शुरू कर रहे हैं।

भाटी ने कैलाश चौधरी पर तंज झूठे वादे करके जनता को ठगा है

मंत्री कैलाश चौधरी पर तंज कंसते हुए भाटी ने स्पीच में कहा कि आप हर पांच साल से आते हो और नए-नए वादे कर और झूठे वादे करके ठग कर जा रहे हो। अब यह दौर खत्म हो गया। कई सारे नेता है जो कह रहे है कि रविंद्र ने क्या किया है। हम लोग एसी में आराम से बैठे थे। अब गली-गली घूमना शुरू कर दिया है। ज्यादा दिन हो गए ड्राई फ्रूट खाते हो रहे है। अब वो दिन गए। अब जनता के बीच जाओ बाड़मेर, जैसलमेर और बालोतरा की जनता की समस्याओं का सुनो। हर बार आप विश्वास जता देश की सबसे बड़ी पंचायत (संसद) में भेजते है। लेकिन दुर्भाग्य है यहां से जीत कर जाते और वहां जाकर जयपुर और दिल्ली का पानी पीकर वहां पर नींद लेने लग जाते हो। पता नहीं उस पानी में ऐसा क्या है।

भाटी के लिए आम जनता ही बनी स्टार प्रचारक

बाड़मेर जैसलमेर लोकसभा सीट पर त्रिकोणीय मुकाबला है। इसके कारण कांग्रेस और बीजेपी दोनों ने अपनी पूरी ताकत लगा रखी है। इसके चलते दोनों ही दलों के स्टार प्रचारकों की फौज अपने अपने प्रत्याशियों को जीताने में लगी हुई हैं, लेकिन खास बात है कि निर्दलीय प्रत्याशी रविंद्र सिंह भाटी के लिए कोई स्टार प्रचारक नहीं है, उनके तो स्टार प्रचारक लोकसभा क्षेत्र की आम जनता ही है। इस दौरान भाटी के प्रशंसक, बुजुर्ग, युवा, आमजन खुद उनके प्रचार प्रसार की कमान को संभाले हुए हैं। इसको लेकर सोशल मीडिया में काफी वीडियो सामने आए। जिसमें आम जन गांव गांव घूम कर रविंद्र सिंह भाटी के लिए प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

बोले- चुनाव नजदीक आने के साथ कई जादूगर आएंगे

स्पीच में कहा कि जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आएंगे वो मोटा-मोटा कलाकार, जादूगर आगे आएंगे। वो सब खुद की जादू, विद्या और कला बताएंगे। उनके कई तरह के काले जादू है। मेरा आपसे निवेदन है कि इन कलाकारों के चक्कर में मत आना। 26 तारीख को टाबर के ऊपर आशीर्वाद रखना।

4 जून बाद कांग्रेस में होंगे किरोड़ीलाल, पीएम मोदी का चेहरा उड़ा हुआ हैः डोटासरा

टोंक

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि 4 जून के बाद किरोड़ीलाल मीणा कांग्रेस में होंगे। राजस्थान में 15 से 20 सीटों पर मोरिया बोलेगा। पीएम का चेहरा उड़ा हुआ है। इंडिया गठबंधन में कांग्रेस का प्रधानमंत्री बनेगा। डोटासरा ने यह बात सवाईमाधोपुर-टोंक लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी हरीश मीना के समर्थन में मालपुरा में हुई चुनावी सभा में कही। उन्होंने जनता की तरफ इशारा करते हुए कि हम आपकी खातिर आए हैं और आप भाजपा का मोरिया बुलाओ। 25 सीटों में से 15-20 मोरिया बोल गए तो सीएम भजनलाल शर्मा की कुर्सी जाती हुई दिखेगी। इसके बाद बीजेपी वालों को दूसरी पर्ची निकालनी होगी। इसकी जिम्मेदारी जनता की है। लोकसभा चुनाव में देशभर में कांग्रेस की लहर चल रही है। पहले चरण के हुए मतदान में कांग्रेस को अप्रत्याशित समर्थन प्राप्त हुआ है, जिससे भाजपा के मोदी और अमित शाह के चेहरे मुरझा गए हैं। इंडिया गठबंधन की सरकार में यहां से जीतकर जाने वाले हरीश मीना मंत्री बनेंगे। सभा के दौरान डोटासरा ने लीलण घोड़ी गीत पर डांस भी किया। उन्होंने मीडिया से वोटिंग कम होने को लेकर कहा कि डबल इंजन की सरकार और मोदी की गारंटी फेल हो गई है। लोगों ने कहा कि यह तो फर्जी हैं और झूठ बोलते हैं। किरोड़ीलाल मीणा के ईआरसीपी से जुड़े एक पत्र के सवाल पर डोटासरा ने कहा कि किरोड़ीलाल मीणा तो 4 जून के बाद हमारे साथ आने वाले हैं। उन्होंने भाजपा को झूठों की पार्टी बताया और कहा कि भाजपा ने किसानों के लिए कोई काम नहीं किया। वे केवल चुनिंदा धन्नासेठों के लिए काम कर रहे है। झूठ सुन- सुनकर लोग परेशान हो गए हैं, दवाई डालने पर भी सही से सुनाई नहीं दे रहा है।

राहुल ने मैदान छोड़ दिया, खड़गे जी भी खड़ग जाएंगेः ग्रेट खली

बाड़मेर

इंटरनेशनल रेसलर और भाजपा नेता द ग्रेट खली उर्फ दलीप सिंह राणा रविवार को बाड़मेर में थे। यहां बायतु में शाम करीब पांच बजे उन्होंने भाजपा प्रत्याशी कैलाश चौधरी की जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा- डॉयलागबाजी अच्छी लगती है और वे भी बचपन में सुनने जाते थे, लेकिन निर्णय हमेशा वो लेना चाहिए, जो स्वयं को अच्छा लगे और देश हित में हो। डॉयलागबाजी का कोई फायदा नहीं है, अगर जरूरत पड़ी हम भी डॉयलागबाजी कर सकते है। खली ने कहा- किड़ी को सोफे पर बैठाएंगे तो वो सुराख ही ढूंढती है और वो नीचे सुराख में ही घुसना चाहती है। उसी तरह से कुछ लोगों का काम ही कमियां ढूंढना होता है। पहले जब हम लोग बाहर जाते थे तो वो हमें ऐसी नजर से देखते थे कि यह भारत के लोग है। गरीब देश है, इनको कुछ पता नहीं है। लेकिन अब वह सोच हमारे प्रधानमंत्री ने चेंज कर दी है। जहां भी भारतीय जाता है, वहां भारतीयों को सम्मान मिलता है। आज की तारीख में पीएम मोदी बाहर जाते है तो लोग उनके पैर छूते है, उनसे आशीर्वाद लेते है। यह गर्व की बात है।

भ्रष्टाचार और श्रीराम की भक्ति का सर्टिफिकेट बांट रही बीजेपीः गहलोत

कोटा

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत रविवार को हाड़ौती पहुंचे। इस दौरान उन्होंने भाजपा पर भ्रष्टाचार और श्रीराम की भक्ति का सर्टिफिकेट बांटने का आरोप लगाया, उन्होंने कहा कि जबकि देश का हर व्यक्ति राम भक्त है। गहलोत ने यह बयान बारां झालावाड़ संसदीय सीट की कांग्रेस प्रत्याशी उर्मिला जैन भाया के समर्थन में सभा संबोधित करते छीपाबड़ोद कस्बे में दिया। अशोक गहलोत बोले कि क्या हम राम भक्त नहीं हैं ? देश का हर व्यक्ति राम भक्त है, लेकिन बीजेपी नहीं मानती है। बीजेपी सर्टिफिकेट देती है। बीजेपी ने एक वॉशिंग मशीन लगाई हुई है, जिसके लिए पहले वह कांग्रेस और अन्य दलों के नेताओं को भ्रष्टाचारी बताती है। इसके बाद में यह नेता जब बीजेपी ज्वॉइन कर लेते हैं, तब मशीन में घुल जाते हैं। ऐसा कब तक चलेगा। देश के दो-दो मुख्यमंत्री जेल में बैठे हुए हैं। इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिए इन्होंने देश लूट लिया। सीबीआई और

ईडी के जरिए धमकाया, इसके बाद हजारों-करोड़ों रुपए इकट्ठा कर लिया। पूर्व सीएम गहलोत ने कांग्रेस के घोषणा पत्र को गारंटी कार्ड बताते हुए कहा कि यह एक ऐतिहासिक डॉक्यूमेंट बन गया, जिसमें हर महिला को एक लाख रुपए सालाना मिलेंगे। नौजवानों को रोजगार की बात इसमें कही गई है। स्किल डेवलप करने के लिए भी सरकार युवाओं की मदद करेगी। अशोक गहलोत ने इस दौरान पूर्व मंत्री प्रमोद जैन भाया और उर्मिला जैन भाया की तारीफ की। बोले कांग्रेस ने इन्हें उम्मीदवार बनाया और शानदार कैंपेनिंग यह लोग कर रहे हैं। राजनीतिक साथ-साथ सेवाभावी दंपती हैं। पशु, पक्षी, गायों की सेवा कर रहे हैं। चुनावी सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि यह चुनाव साधारण चुनाव नहीं है और देश की जनता ने मन बना लिया।

टीचर बनने के लिए देना होगा सिर्फ एक टेस्ट, प्राइवेट और सरकारी स्कूलों में होगी एक जैसी यूनिफॉर्मः शिक्षा मंत्री

जयपुर/जोधपुर

राजस्थान में सरकारी टीचर बनने के लिए अब अलग-अलग एग्जाम देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। शिक्षा विभाग एक एंट्रेंस टेस्ट पॉलिसी तैयार कर रहा है। इसके तहत अलग-अलग ग्रेड और सब्जेक्ट में टीचर्स की भर्ती की जाएगी। यह बात जोधपुर में स्कूल शिक्षा परिवार के कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कही है। दिलावर ने कहा- सरकार गवर्नमेंट और प्राइवेट स्कूलों की यूनिफॉर्म एक जैसी करने की भी तैयारी कर रही है। इसे जल्द ही लागू कर दिया जाएगा। शिक्षा मंत्री ने कहा- शिक्षा विभाग में नौकरी के लिए युवाओं को भविष्य में अलग-अलग टेस्ट नहीं देने होंगे। हमारी सरकार इसको लेकर प्लानिंग कर रही है। वैसे फिलहाल जो प्रक्रिया है, इसमें अलग-अलग टेस्ट देने के साथ बीएड भी करनी होती है। उसके बाद भी एक और टेस्ट होगा। तब जाकर नौकरी लगेगी। उसमें संशोधन होना चाहिए। मुझे लगता है, इसकी जगह एक बार परीक्षा होनी चाहिए। इसमें ग्रेड फर्स्ट, ग्रेड सेकेंड, ग्रेड थर्ड के साथ अलग-अलग सब्जेक्ट के टीचर्स का सिलेक्शन किया जाए। इसके साथ ही उसकी मेरिट भी तैयार हो। उन्हें बीएड करके आने के बाद परमानेंट किया जा सकता है। दिलावर ने कहा- मेरे मन में यह विचार इसलिए आया क्योंकि मैं अलग-अलग परीक्षाओं में युवाओं को परेशान होते देखता

था। बीएड करने के बाद भी उनकी नौकरियां नहीं लग रही थी। उनके परिवार पर क्या बीतती होगी। क्योंकि, इन परीक्षाओं के चक्कर में उनके जीवन के तीन से चार साल बर्बाद हो जाते हैं। अगर उनकी पहले ही नौकरी तय हो जाए। उसके बाद अगर उनका प्रशिक्षण होगा तो उनके जीवन के तीन से चार साल बर्बाद होने से बच जाएंगे। शिक्षा मंत्री ने कहा- जब मेरे सेक्रेटरी को इस दिशा में काम करने के लिए कहा था तो उन्होंने मुझे कहा कि यह आइडिया तो काफी यूनीक है। इसके बाद मैंने उनसे कहा कि मुझे यूनीक काम ही करना है। अगर इसमें कोई लीगल समस्या नहीं आई तो इसे जल्द तैयार कर लागू करेंगे। देश में कभी न कभी कोई न कोई तो इस तरह की शुरुआत करेगा ही। फिर हम यह क्यों नहीं कर सकते हैं। ऐसे में जल्द ही इसको लेकर कोई नीति तैयार हो जाएगी

कांग्रेस आपका सोना-चांदी हड़पना चाहती है, आपकी मेहनत की कमाई उनमें बांटेगी, जिनके ज्यादा बच्चे हैंः पीएम मोदी

जयपुर

राजस्थान में लोकसभा चुनाव के पहले चरण के मतदान के बाद एक बार फिर से प्रधानमंत्री दूसरे चरण की वोटिंग में बीजेपी के लिए वोट अपील करने पहुंचे। पीएम मोदी इसी क्रम में रविवार को जालोर लोकसभा सीट के लिए चुनाव प्रचार करने पहुंचे। इस सीट से बीजेपी से लुंबाराम चौधरी और कांग्रेस से अशोक गहलोत के बेटे वैभव चुनावी मैदान में हैं। यहां जालोर के भीनमाल क्षेत्र में पीएम मोदी ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधते हुए एक बार फिर उन पर परिवादवाद और अवसरवादी होने का आरोप लगाया।

कांग्रेस का मुंह दोबारा नहीं देखना चाहता युवा

प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि इस पार्टी ने 60 साल देश पर राज किया। लेकिन माता बहनों को छोटी- छोटी चीजों के लिए तरसाया, जिनमें घरेलू गैस, बिजली- पानी और बैंक अकाउंट शामिल है। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस से युवा इतने परेशान है कि युवा दोबारा इनका मुंह नहीं देखना चाहती। बीजेपी प्रत्याशी लुंबाराम चौधरी के समर्थन में जनसभा करने आए पीएम मोदी ने कहा कि जालोर आना, हम गुजरात वालों को लगता है कि अपने घघर ही आ गए हैं। पीएम मोदी ने कहा कि जब मैं पार्टी संगठन में काम करता था और सीएम था। तब भी आप सबके बीच आने का मुझे अवसर मिला।

राजस्थान में कांग्रेस सरकार ने पानी का घोटाला किया

पीएम मोदी ने कांग्रेस पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए कहा कि इतिहास में पहली बार जल जीवन मिशन कार्यक्रम चला। इसके तहत 11 करोड लोगों को नल से जल दिया। लेकिन अफसोस राजस्थान में इसे लेकर भ्रष्टाचार किया गया। पानी में घोटाला किया गया। अब भजनलाल सरकार घोटाले की जांच कर रही है। अब हम हर पाइप से पानी पहुंचाने की काम कर रहे हैं। पीएम मोदी ने रैली में आए लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि मेरा एक काम करना। मोदी की ओर से लोगों को गारंटी देना । माता- बहनों को जो तीन करोड़ नए घर में मैं बनाने वाला हूं , उनका उनका नंबर लगेगा ही लगेगा। कहना मोदी जो घर देगा वो मां- बहनों के नाम से देगा। पीएम मोदी ने इशारों में राहुल गांधी पर निशाना साधा। उन्होंने यहां कैबिनेट में पारित हुए अध्यादेश को फाड़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि कल्पना करिए कि कैबिनेट ने जो निर्णय पास किया हो, देश की संवैधानिक संस्था ने जो निर्णय पास किया हो, उसको उनकी पार्टी के ही नेता भरे मीडिया की मीटिंग बुलाकर बड़े रौब से फाड़कर फेंक देते हैं।

कभी 400 सीट जीती, आज उम्मीदवार नहीं मिल रहे

पीएम मोदी ने कांग्रेस पर अवसरवादी होने का आरोप लगाते हुए कहा कि जिस पार्टी ने कभी 400 सीट जीती थी, वो आज 300 सीट पर चुनाव नहीं लड़वा पा रही। आज कांग्रेस की हालत ऐसी है कि उन्हें उम्मीदवार नहीं मिल पा रहे हैं। इसलिए इन्होंने अवसरवादी इंडी अलायंस (इंडिया गठबंधन) बना लिया। पीएम मोदी ने आगे कहा कि कहने को तो यह गठबंधन है, लेकिन आपस में ही लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव में 25 सीटें ऐसी है, जहां लड़ाई जारी है। जनता को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि लंबाराम को वोट करने का मतलब है कि मोदी को मजबूत करने की गारंटी। देश और राजस्थान को विकसित बनाने का काम करना। किसानों के मुद्दे पर अपनी बात करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस की कभी भी नीयत नहीं रही कि वो किसानों को पानी पहुंचाए। उन्होंने कहा कि इसका उदाहरण है सालगांव बांध परियोजना। ये परियोजना तब बनी थी, जब हर जगह कांग्रेस ही कांग्रेस थी। ये बांध तक बन जाता तो इसकी लागत 30 लाखख आती जो अब 250 करोड़ पहुंच गई है।

जो लोग चुनाव नहीं जीत सकते वो राज्यसभा से आए

पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस की जो हालात हुई उससके गुनहगार वो खुद हैं। देखिए आपके यहां राज्यसभा से एक नेता दक्षिण से हैं। पीएम मोदी ने कहा कि आपने उदारता पूर्वक भूतपूर्व पीएम मनमोहन सिंह को सम्मान देते हुए राजस्थान से राज्यसभा भेजा, वो लंबे समय ससे बीमार रहे। अब उनके एक और नेता को बचाने की कोशिश की राजस्थान वालों ने। पीएम मोदी ने आगे तंज कसते हुए कहा कि जो लोग चुनाव नहीं लड़ सकते , मैदान छोड़ कर इस बार राजस्थान से राज्यसभा में आए हैं। पीएम मोदी ने आगे कहा कि राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत राजस्थान जानता है कि कांग्रेस कभी भी मजबूत भारत नहीं बना सकती। उन्होंने कहा कि देश में 2014 से पहले के हालात वापस नहीं होने चाहिए। हर कोई कांग्रेस की कमजोर सरकार को धमकाते थे। हर कोई देश को लुटने में जुटा था। प्रधानमंत्री को तो कई पूछता ही नहीं था।

हनुमान जी के जन्मोत्सव पर अखंड रामायण पाठ एवं देशी घी के विशाल भंडारे का होगा आयोजन

राजस्थान की राजनीति

कोटकासिम (चेतराम सैनी)। हनुमान जी के जन्मोत्सव पर कस्बे के रामलीला मैदान स्थित संकट मोचन हनुमान मंदिर के प्रांगण में मंगलवार को विशाल देशी घी के भंडारे का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर सोमवार को प्रातः 7 बजे अखंड रामायण पाठ का आयोजन किया जायेगा। वही मंगलवार को अखंड रामायण पाठ के समापन पर हवन यज्ञ का आयोजन मंदिर के प्रांगण में होगा। साथ ही हवन यज्ञ के समापन पर विशाल देशी घी के भंडारे का आयोजन किया जायेगा। रामलीला कमेटी के निर्देशक अरूण मुद्गल ने बताया की इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लाडपुर सोमनाथ आश्रम के महंत बाबा दीपकनाथ होगे। वहीं अतिविशिष्ठ अतिथि गुरूग्राम के समाजसेवी धर्मबीर डागर होगे।

जयपुर में 1200 किलो मांस जब्त किया गया

30 दुकानों पर निगम ने किया एक्शन, तीन को सीज किया गया

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर में महावीर जयंती के मौके पर मीट और मांस बेचा जा रहा था। इसकी शिकायत मिलने पर नगर निगम की टीम ने कार्यवाही करते हुए 1200 किलो मीट जब्त किया है। टीम ने शहर के वैशाली नगर, मानसरोवर, इंडिया गेट, कुंभा मार्ग, प्रताप नगर, खातीपुरा, झोटवाड़ा और जगतपुरा में 30 से ज्यादा दुकानों पर कार्रवाई की। फिलहाल नगर निगम के पशु प्रबंधन दस्ते की कार्रवाई शहर में जारी है। दरअसल, महावीर जयंती के मौके पर मीट और मांस की दुकान बंद करने का प्रावधान होता है। बावजूद इसके शहर में बड़ी जगह पर मीट और मांस खुलेआम बेचा जा रहा था। आम जनता ने जब इसकी शिकायत नगर निगम टीम को की।

तीन दुकान सीज की गईं

नगर निगम की पशु प्रबंधन और नियंत्रण शाखा की टीम ने औचक निरीक्षण कर 30 से ज्यादा दुकानों पर 1200 किलो से ज्यादा मीट और मांस जब्त किया। इस दौरान निगम की टीम ने तीन दुकानों को सीज भी किया है। जहां नियमों के विपरीत मीट और मांस को काटकर और बेचा जा रहा था। जयपुर नगर निगम ग्रेटर के पशु प्रबंधन शाखा उपयुक्त हरेंद्र सिंह चिराना ने बताया कि आज महावीर जयंती के मौके पर नियमों के विपरीत मीट और मांस बेचा जा रहा था। इसकी शिकायत मिलने के साथ ही पूरे शहर में नगर निगम की टीम ने औचक निरीक्षण कर कार्रवाई शुरू कर दी गई। इस दौरान निगम की टीम को कुछ दुकानों पर भारी अनियमित भी मिली। जिनके खिलाफ चालान बनाकर सीज की कार्रवाई को अंजाम दिया गया है। वहीं, कुछ दुकानों से अवैध मीट को जब्त कर नष्ट करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। फिलहाल पशु प्रबंधन शाखा की यह कार्रवाई शहर के अलग-अलग इलाकों में जारी है। ऐसे में आज देर रात तक जहां भी अवैध तरीके से मीट और मांस बेचा जाएगा उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

घरवालों को बिना बताए मॉडलिंग करने जयपुर पहुंची युवती

बोली- छोटे शहर की रहने वाली हूं, मॉडलिंग इंडस्ट्री को अच्छा नहीं माना जाता

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर के ब्यूटी पेजेंट मिस दीवा राजस्थान में युवतियों ने ऐसे ही सवालों के बेबाक जवाब दिए। दरअसल, रविवार को जयपुर में स्टेट लेवल ब्यूटी पेजेंट मिस दीवा राजस्थान का पहला ऑडिशन किया गया। मालवीय नगर स्थित मसाला मिनिस्ट्री में आयोजित हुए ऑडिशन में प्रदेशभर से 150 से अधिक गर्ल्स पहुंची। इसमें कई ऐसी गर्ल्स भी शामिल थी, जो पढ़ाई करने के लिए जयपुर आई हुई हैं। वहीं, एक मॉडल घर पर बिना बताए झुंझुनूं से जयपुर ऑडिशन देने पहुंची। झुंझुनूं की नेहा ने बताया- मैं एक छोटे शहर की रहने वाली हूं। फैशन और मॉडलिंग इंडस्ट्री को बेहतर नहीं माना जाता है। मैं घरवालों को इस बारे में बताती तो वे कभी नहीं भेजते, ऐसे में बिना बताएं ऑडिशन देने आई हूं। मेरा मानना है कि यह एक ऐसा माध्यम है, जहां आप खुद को बेहतर तरीके से एक्सप्रेस कर सकते हैं। मिस दीवा राजस्थान में हिस्सा लेने पहुंची मुस्कान सैनी ने बताया- मैं अभी बीए सेकेंड ईयर की स्टूडेंट हूं। इससे पहले भी एक पेजेंट के लिए हिस्सा ले चुकी हूं। उसमें टॉप 20 तक पहुंची थी। मिस दीवा की जानकारी इंस्टाग्राम से मिली और इनके पांच शो हो चुके है, ऐसे में इससे जुड़ पाई। अपने आप को प्रूव करने के लिए इस शो में आई हूं।

सवाई माधोपुर की मृदुल अग्रवाल ने बताया कि मैं मॉडलिंग में कॅरियर बनाना चाहती हूं, इसलिए मैं इस शो में आई हूं।

आयोजक सुरेश प्रधान और डॉ आलोक गुप्ता ने बताया- पहले ऑडिशन राउंड में गर्ल्स ने अपने टैलेंट को यूनीक अंदाज में प्रस्तुत किया। इस बार काफी संख्या में मॉडल्स ग्रामीण अंचल से आई। मॉडल्स ने रैम्प वॉक के जरिए अपना स्टाइल दिखाया। वहीं, जजेज के सवालों का कॉन्फिडेंस अंदाज में जवाब दिया। जजेज में मॉडल हिमांश जैन, कविता चौधरी, कोमल सिंह, अनुष्का गुप्ता, अंकुर गर्ग और बसंत जैन मौजूद रहे।

जयपुर में बदमाशों ने युवक से 12 हजार रुपए लूटे

विरोध करने पर मुंह पर वार कर किया लहूलुहान, लोगों के आने पर हो गए फरार

जयपुर। जयपुर में बदमाशों के एक युवक से लूट करने का मामला सामने आया है। इस दौरान युवक ने धक्का मारकर बदमाशों को बाइक के साथ नीचे गिरा दिया। इस पर बदमाशों ने युवक के मुंह पर वार कर लहूलुहान कर दिया और फरार हो गए। विधायकपुरी थाना पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर बाइक सवार लुटेरों की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि लूट की वारदात चांदपोल निवासी विक्रम गुर्जर (24) के साथ हुई। उसने बताया- रात करीब 8 बजे विक्रम गुर्जर गाड़ी का सामान लेने एमआई रोड पर जा रहा था। इसी दौरान बाइक सवार तीन लड़कों ने पीछे से आकर पर्स निकाल लिया। पर्स निकालने का पता चलने पर विरोध कर विक्रम ने धक्का मारकर बदमाशों को बाइक सहित नीचे गिरा दिया। इस दौरान बदमाशों ने रुपए निकालकर पर्स को रोड पर फेंक दिया। पर्स उठाने के दौरान बदमाशों ने उसके मुंह पर वार किया। हमले से होंठ कटने पर लहूलुहान होने पर वह चिल्लाया तो आसपास के लोग मौके पर आए। तभी बदमाश फरार हो गए। प्राथमिक इलाज के बाद पीड़ित युवक विधायकपुरी थाने पहुंचा और बाइक सवार बदमाशों के 12 हजार रुपए लूटने का मामला दर्ज कराया। पुलिस वारदातस्थल के आस-पास लगे सीसीटीवी फुटेजों को खंगालने के साथ ही लुटेरों की तलाश में जुटी है।

आचार संहिता का उलंघन कर बिना किसी टेंडर के गौवंश ले जाने पर गौसेवकों ने कि सयुंक्त निदेशक रामलाल मीणा व अधिशाषी अभियंता अरुणेश शर्मा के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग

राजस्थान की राजनीति

बुंदी/पुरुषोत्तम। गोपाल गौ सेवा संस्थान के गौ सेवकों ने थाना सिटी कोतवाली में परिवाद पेश कर रामलाल मीणा कार्यवाहक सयुक्त निदेशक पशु पालन विभाग बुंदी तथा अरुणेश शर्मा अधिशाषी अभियंता नगर परिषद बूंदी गौशाला संचालक पप्पूलाल मेघवाल व श्री जयनिवास गौशाला ठीकरदा के खिलाफ परिवाद पेश कार्यवाही की मांग की है।

गोपाल गौसेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रहलाद मीणा ने बताया कि दिनांक 20.04.2024 को सुबह गौशाला संचालक पप्पू मेघवाल द्वारा अपने साथियों के साथ मिलकर शहर बूंदी से बिना किसी नियम कायदे, बिना किसी टेंडर के पशु चिकित्सालय बुंदी में उपचाररत गंभीर घायल गोवंशों सहित शहर से करीब 100 गोवंशों को लाठियों को पीटते हुए दलेलपुरा रोड होते हुए, पैदल घेर कर ले जाकर ठीकरदा गौशाला में छोड़ दिए गए। तथा जानकारी करने पर रामलाल मीणा कार्यवाहक सयुक्त निदेशक पशु पालन विभाग बुंदी तथा अरुणेश शर्मा अधिशाषी अभियंता नगर परिषद बूंदी के निर्देश पर ले जाना बताया जबकि चुनाव आचार संहिता होने से किसी प्रकार का टेंडर नहीं किया जा सकता परंतु उक्त अधिकारीयों व गौशाला संचालक पप्पू मेघवाल ने नियमों को ताक पर रखकर गाँवशों को नगर परिषद क्षेत्र के बाहर ले गए। जबकि जिस गौशाला में ले जाकर गोवंश को छोड़ा गया वहां पूर्व में ही क्षमता से अधिक गोवंश मौजूद है जो पशु क्ररुता है।उपचाररत गोवंश को भी इन लोगों ने मिली भगत कर नियम विरुद्ध तरीके से ठीकरदा जय निवास गणेश गौशाला में ले जाकर छोड़ दिया जिसके कारण उन गोवंश की जान जोखिम में आ चुकी है। क्षमता से अधिक गोवंश भरकर रखने से बीमार व कमजोर गौवंशी को पर्याप्त भौजन पानी नहीं मिल पाने से उनकी आये दिन विभिन्न गौशालाओं में अकाल मृत्यु हो रही है तथा नियमानुसार क्षमता से अधिक गोवंश रखना पशु क्रूरता है जो कानूनन अपराध है। गौसेवक गौपाल माहेश्वरी ने कहाँ कि नगर परिषद बूंदी को नंदीशाला अथवा गौशाला हेतु भूमि आवंटित है जिन पर आवश्यक व्यवस्था करवाई जाकर शहर बूंदी के गोवंशों को वहां शिफ्ट किया जाना चाहिए। जो जनहित में है। इस दोरान गौपाल माहेश्वरी लोकतंत्र गुर्जर ओमप्रकाश मेघवाल कौशल यादव भवानी शंकर कालूलाल आदि मोजूद रहे।

मोबाईल चिकित्सा योजना शुरू होने से पहले लडखडाई

राजस्थान की राजनीति

कोटकासिम (चेतराम सैनी)। राज्य सरकार की ओर से खुशहाल पशुपालक समृद्ध राजस्थान की थीम को लेकर शुरू की गई मोबाईल पशु चिकित्सा योजना शुरू होने के साथ ही ठप हो गई है। मजेदार बात तो यह है की इस योजना में पिछले दिनो तक वैन में दवा तक नही थी। जिससे पशुपालक ठगा सा महसूस कर रहे है। सरकार द्वारा यह योजना शुरू की गई उस समय पशुपालको को समय पर पशुओ का उपचार होने की उम्मीद जागी थी। लेकिन यह योजना शुरू हेने से पहले ही पूरी तरह लडखडा गई है। यह मोबाईल बस सेवा नाम की ही है। लेकिन सूत्रो के अनुसार जानकारी मिली है की योजना के संचालन का ठेका किसी निजी कम्पनी को दिया गया था। लेकिन मोबाईल वैन मे लगे पशु चिकित्साकर्मियो व टीम को वेतन, कार्य ग्रहणर आदेश सहित अन्य समस्याओ के आने पर जिले सहित प्रदेशभर में ये कार्मिक हडताल पर चले गये थे। ऐसे में कोटकासिम उपखंड सहित क्षेत्र में मोबाईल पशु चिकित्सा वैन के पहिये चलने से पहले ही थम गये है। बताया जा रहा है की राज्य सरकार ने केन्द्र को योजना को लागू करते हुए राज्य में पशु चिकत्सा योजना शुरू की। योजना के तहत वैन में एक-एक पशु चिकित्सक, पशुधन सहायक व पशु परिचय क्रम ड्राईवर को लगाया गया। इस योजना में राज्य सरकार द्वारा जिलेभर में वैन उपलब्ध कराई गयी। उसमें भी पशु चिकित्सक व अन्य कार्मिक मांगो को लेकर हडताल पर चले गये। कोटकासिम उपखंड में भी एक वैन मिली है। लेकिन इस वैन की सेवाए अभी तक शुरू नही की गईहै।

नियम की अनदेखी

जानकारी के अनुसार मोबाईल वैटनरी युनटि योजना से संबंधि नियमो की पालना ही नही की गई। वैन में सभी दवाईया भी उपलब्ध नही कराई गयी। आपातकाल में दवाईयों के लिए चिकित्सको को इधर-उधर भटकना पडता है। इतना ही नहीं कोटकासिम उपखंड मुख्यालय पर पशु चिकित्सालय में भी पिछले करीब 6 माह से पशुओ के लिए निःशुल्क दवा योजना का पशुपालको को कोईलाभ नही मिल रहा है। निःशुल्क दवा पशुचिकित्सालय में उपलब्ध नही मिलने से पशुपालको को खासी परेशानियो का सामना करना पड रहा है।

विधायक समेत 6 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज

रेंजर राजेश शर्मा ने इस्तगासे के जरिए दर्ज कराया मामला

राजकार्य में बाधा पहुंचाने का लगाया आरोप

राजस्थान की राजनीति

बाँदीकुई(दौसा)। बसवा पुलिस थाने में विधायक समेत 6 लोगों के खिलाफ राजकार्य में बांधा पहुंचाने का मामला दर्ज हुआ है। वन विभाग बांदीकुई के रेंजर ने कोर्ट इस्तगासे के जरिए अधिवक्ता राजेंद्र गुर्जर के माध्यम से मामला दर्ज कराया है। आपको बता दे कि इस पूरे मामले की कोर्ट में पैरवी अधिवक्ता राजेंद्र गुर्जर ने की है। जिसमें रेंजर राजेश शर्मा ने आरोप लगाया कि 6 अप्रैल को वे सरकारी वाहन से अपनी टीम के साथ वनपाल नाका झांझीरामपुरा का निरीक्षण करने गए थे। वापस लौटते समय शाम 4:30 बजे बसवा कालेड तिराहे पर एक अवैध बजरी से भरा ट्रैक्टर आता दिखाई दिया। हम ट्रैक्टर को रुकवाया और जब्त कर बसवा थाने ला रहे थे। इस दौरान बसवा बस स्टैंड पर बांदीकुई विधायक भागचंद टांकडा समेत अन्य लोग आए और ट्रैक्टर-ट्रॉली को छोड़ने के लिए कहने लगे। इस पर रेंजर ने कहा कि ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया है, नियमानुसार ही छूटेगी। इस पर विधायक टांकडा समेत अन्य लोगों ने धक्का मुक्की कर ट्रैक्टर में से बजरी खाली करवाकर ट्रैक्टर को हमसे छुडवा लिया। इस दौरान वन कर्मचारी घटना का वीडियो बनाने लगे तो आरोपियों ने मोबाइल छीन लिए। रेंजर ने विधायक टांकडा, कमलेश मीणा जयसिंहपुरा, नीरु सैनी झाज्यावाला बास झाडला, हीरालाल निवासी झाज्यावाला बास झाडला, मोनू सैनी झाज्यावाला बास झाडला, मुकेश सैनी निवासी पंडितपुरा के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। इस सबंध में विधायक भागचंद टांकडा का कहना है कि रेंजर द्वारा लगाए गए आरोप झूठे है। इनके पास अवैध रुपए भी मिले थे, जिन्हें पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जब्त भी किया है।

जयपुर में ढाई घंटे में 3 लोगों की हुई मौत: परिवार के साथ कार में जा रही महिला टीचर ने दम तोड़ा, दो बाइक सवारों की भी हुई मौत

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर में अलग-अलग हुई तीन घटनाओं में 3 लोगों की मौत हो गई। जो एक के बाद एक ढाई घंटे में हो गई। तीनों घटना दुर्घटना थाना वेस्ट क्षेत्र में हुई। इसमें एक महिला टीचर की भी मौत हो गई। जो कार में सवार होकर परिवार के साथ जा रही थी। तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने उन्हें टक्कर मार दी।

पहला हादसा

दुर्घटना थाना वेस्ट के सीआई जयदेव सिंह ने बताया- पहली घटना रात करीब 11 बजे वीकेआई थाना इलाके में हुई। चेतक से जानकारी मिली की रोड नंबर 17 पर एक्सीडेंट हो गया। इस पर दुर्घटना थाने के हेड कॉन्स्टेबल महावीर प्रसाद मौके पर पहुंचे। मौके पर कोई वाहन नहीं मिला। जानकारी जुटाने पर पता चला की मोटरसाइकिल चालक का एक्सीडेंट हुआ था। बाइक सवार को कांवटिया अस्पताल भेजा गया। बाइक को पुलिस चौकी रोड नंबर 17 पर रख दिया हैं। उपचार के दौरान हरि नारायण पुत्र धन्नालाल निवासी 14 गुर्जर मोहल्ला अलीगढ टोंक की मौत हो गई।

दूसरी घटना भी साढ़े 11 बजे हुई

सीआई ने बताया- दूसरी घटना भी इसी दौरान हुई। विश्वकर्मा थाने से साढ़े 11 बजे फोन आया कि भगवती नर्सरी के पास दुर्घटना हुई है। इस पर दुर्घटना थाना पुलिस मौके पर पहुंची। जहां नखरालो राजस्थान के सामने एक्सप्रेस हाईवे पर क्षतिग्रस्त बाइक मिली। घायल को लोगों ने 108 की सहायता से एमएमएस ट्रोमा सेंटर पहुंचाया। जहां इलाज के दौरान शक्ति सिंह (30) पुत्र रणजीत सिंह निवासी प्लॉट नंबर 34 सन सिटी सीकर रोड की मौत हो गई। जिस पर मृतक के परिजनों को दुर्घटना की जानकारी दी। परिजनों के आने के बाद शव को एसएमएस मोर्चरी में रखवाया।

तीसरी घटना रात 1.30 बजे हुई

तीसरी घटना रात 1.30 बजे खिरणी फाटक आरओबी पुलिया के पास हुई। तेज रफ्तार स्कॉर्पियो कार ने आगे चल रही ऑल्टो कार को टक्कर मार दी। टक्कर मारने के बाद चालक मौके पर कार छोड़कर भाग गया। हादसे में कार सवार पति-पत्नी, बेटा-बहू और पोता- पोती घायल हो गए। लोगों ने सभी घायलों को इलाज के लिए कांवटिया अस्पताल में भर्ती कराया। इलाज के दौरान बिंदू कुमावत(40) की मौत हो गई। अन्य की हालत गंभीर होने पर एसएमएस अस्पताल रैफर कर दिया। मृतका बिंदू कुमावत (41) राजीव विहार न्यू सांगानेर रोड मानसरोवर की रहने वाली थी। प्राइवेट स्कूल में टीचर थीं। बिंदू अपने पति भारत प्रकाश (42), बेटे ध्रुवीत (14), बेटी गौरीशा (9), सास सुशीला और ससुर सुरेन्द्र के साथ निवारू रोड पर रहने वाले भाई के कार्यक्रम में शामिल होने आई थी।

वापस घर जाते समय आरओबी पर हादसा हो गया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार के पीछे का हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। पुलिस ने टक्कर मारने वाली कार को जब्त कर चालक की तलाश शुरू कर दी है।

जयपुर में 6 साल के बच्चे का किडनैप

घर के बाहर खेलते समय हुआ लापता, मासूम को ढूंढने में जुटी पुलिस टीमें

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर में 6 साल के बच्चे के किडनैप का मामला सामने आया है। घर के बाहर खेलते समय अचानक मासूम लापता हो गया। विद्याधर नगर थाने की टीमें मासूम को ढूंढने में जुटी है। सीसीटीवी फुटेजों को खंगालने के साथ ही पुलिस टीमों को टॉस्क देकर बच्चे की तलाश में लगाया गया है। इसके बाद एक सीसीटीवी में बच्चा और आरोपी दिख रहे हैं। एसएचओ (विद्याधर नगर) राकेश ख्यालिया ने बताया- उड़ीसा निवासी तुलसी मुण्डा (37) ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। वह विद्याधर नगर के अम्बाबाड़ी में किराए से परिवार सहित रहती है। शनिवार सुबह वह घर पर 6 साल के बेटे रोहन को छोड़कर काम पर गई थी। बेटा रोहन मकान में बच्चों के साथ खेल रहा था। सुबह करीब 10 बजे घर के बाहर खेलते समय अचानक लापता हो गया।

पुलिस टीमों को अलग-अलग टॉस्क देकर बच्चे की तलाश में लगाया

घर लौटने पर बेटे के गुम होने का पता चलने पर काफी ढूंढा, लेकिन उसका पता नहीं चला। रहस्यमयी तरीके से 6 साल के मासूम के गायब होने पर परिजनों ने विद्याधर नगर थाने में शिकायत दी। बच्चे के लापता होने का पता चलने पर पुलिस टीमें तुरंत तलाश में जुट गई। पुलिस टीमों को अलग-अलग टॉस्क देकर बच्चे की तलाश में लगाया गया है। घर के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेजों से लेकर रूट मैप बनाकर बच्चे को ढूंढने में पुलिस टीम जुटी है। सीसीटीवी फुटेज में बच्चा एक आदमी के साथ पैदल जाते हुए दिखाई दे रहा है।

जयपुर में दिनदहाड़े सूने मकान में चोरी

खिड़की की ग्रिल खोलकर अंदर घुसा बदमाश, लाखों के गहने-कैश चुराकर भागा

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर में दिनदहाड़े सूने मकान में चोरी का मामला सामने आया है। खिड़की की ग्रिल खोलकर बदमाश घर के अंदर घुसा था। बदमाश ने अलमारी का लॉक तोड़कर लाखों रुपए के गहने और कैश चुरा लिए और फरार हो गया। वारदातस्थल के पास लगे सीसीटीवी फुटेज में कार सवार साथी के साथ आए चोर की करतूत कैद हो गई। प्रताप नगर थाना पुलिस फुटेज के आधार पर चोर की तलाश कर रही है। एसआई सुरेन्द्र कुमार ने बताया- नंदपुरी-बी प्रताप नगर निवासी वीरेंद्र सिंह शेखावत (46) के घर चोरी हुई। उन्होंने बताया- वह नेशनल इंश्योरेंस कंपनी में प्रशासनिक अधिकारी है। 17 अप्रैल को दोपहर करीब 2 बजे वह परिवार सहित अपने माता-पिता के घर सांगानेर गए थे। इस दौरान पीछे से सूने मकान की दीवार कूदकर बदमाश मकान में पहुंचा और मेन गेट के पास खिड़की को तोड़ा और लोहे की ग्रिल को खोलकर अंदर घुसा। इन बदमाशों ने कमरों में रखी अलमारी-तिजोरी का लॉक तोड़कर उसमें रखे सोने-चांदी के गहने और करीब 1.25 लाख रुपए चोरी कर लिए।

सीसीटीवी में कैद मिला चोर

करीब 2 घंटे बाद शाम करीब 4 बजे परिवार वापस घर लौटा और दरवाजा खोलकर अंदर घुसा तो सामान बिखरा हुआ मिला। अलमारी-तिजोरी के लॉक टूटे मिलने के साथ गहने-कैश गायब मिला। चोरी की सूचना पर पहुंची प्रताप नगर थाना पुलिस ने मौके से सबूत जुटाए। वारदातस्थल के आस-पास लगे सीसीटीवी फुटेजों को खंगालने पर घर में चोरी करने आया बदमाश कैद मिला। दिनदहाड़े चोरी करने वाला बदमाश स्विफ्ट कार से आया था। कुछ दूरी पर स्विफ्ट कार में बैठकर उसका साथी निगरानी करता रहा। दोनों बदमाश चोरी कर कार में फरार हो गए।

जयपुर में घर से डॉलर और सोने-चांदी के गहने चोरी

दीवार कूदकर अंदर आए बदमाश, आराम से घर के दो कमरों के ताले तोड़कर लूट ले गए

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर में बदमाश सूने मकान का ताला तोड़कर 12 लाख रुपए के गहने और करीब 3 लाख रुपए नकदी चोरी कर ले गए। परिवार एक पारिवारिक कार्यक्रम के लिए उदयपुर गया था। इस दौरान पीछे से बदमाश घर की दीवार कूदकर अंदर आए और मेन गेट का ताला तोड़कर अंदर घुसे। घर के सामने के मकान में लगे सीसीटीवी कैमरों में बदमाशों के घर में घुसने की फुटेज कैद हो गई।

घर के ताला लगाकर उदयपुर गया था परिवार

पीड़ित दीपक शर्मा निवासी रानी सती नगर, थाना श्याम नगर ने बताया- कुछ दिन पहले घर में बेटी का मुंडन का कार्यक्रम था। इसके लिए बैंक लॉकर से पूरे परिवार के गहने लेकर आए थे। बच्ची का कार्यक्रम पूरा होने के बाद पूरा परिवार घर के ताला लगाकर 15 अप्रैल को उदयपुर गया था। 19 अप्रैल को सुबह जब पूरा परिवार घर पहुंचा तो मेन गेट और कमरों के ताले टूटे हुए थे और अलमारी में रखे गहने गायब थे।

2 बेड रूम की अलमारी के ताले तोड़े

पीड़ित ने बताया- सामने वाले घर में लगे सीसीटीवी कैमरों में घर में चोरों के घुसने की फुटेज कैद हो गई थी। फुटेज के अनुसार 19 अप्रैल को सुबह करीब 3.20 बजे पर 2 चोर दीवार कूदकर उनके घर में घुसे और दरवाजे के ताले तोड़कर अंदर घुसे। इन बदमाशों ने मेरे और मेरे पिता के बेड रूम की अलमारी के ताले तोड़कर गहने और नकदी चुरा ली। इसके अलावा दूसरे कमरों में कुछ भी नहीं ढूंढा। जैसे उन्हें पता था कि यहीं पर जेवरात और पैसा रखा है।

1.5 किलो चांदी और 11 तोला सोने के साथ नकदी ले गए

दीपक शर्मा ने बताया- बदमाशों ने घर से 1.5 चत्र चांदी (15 जोड़ी पायल, सिक्के आदि), सोना 11 तोला (हाथ के कड़े, गले का सेट, झुमका सेट, चेन और सोने के कड़े) के साथ 2 लाख 85 हजार रुपए नकदी, 1800 यूएस डॉलर, पानी की मोटर और पैन कार्ड-आधार कार्ड के साथ अन्य दस्तावेज चोरी कर ले गए। उन्होंने बताया- बदमाशों के घर में घुसने का सीसीटीवी फुटेज के साथ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। श्याम नगर थाना पुलिस ने चोरी की रिपोर्ट पर दर्ज कर अज्ञात बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है।

जयपुर में 10वीं क्लास की छात्रा से रेप

बर्थडे पार्टी के बहाने दोस्त ने मिलने बुलाया, नशीली कोल्ड ड्रिंक पिलाकर बनाया न्यूड वीडियो

जयपुर। जयपुर में 10वीं क्लास की छात्रा से रेप का मामला सामने आया है। आरोपी ने खुद की बर्थडे पार्टी के बहाने छात्रा को बुलाया और नशीली कोल्ड ड्रिंक पिलाई। इसके बाद बेहोशी की हालत में रेप कर न्यूड वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने लगे। आरोपी शादी करने का झांसा देकर देहशोषण करने लगा। नाबालिग पीड़िता ने जवाहर सर्किल थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। मामले की जांच साह (जवाहर सर्किल) विनोद सांखला कर रहे हैं। पुलिस ने बताया कि जगतपुरा निवासी 16 साल की लड़की ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। उसने बताया- 10वीं क्लास में पढ़ने के दौरान मालवीय नगर में उसकी मुलाकात जनिश से हुई थी। बातचीत के दौरान दोस्ती होने पर आरोपी ने उसे प्रपोज किया। 3 दिन बाद खुद के बर्थडे पार्टी में आने के लिए इनवाइट किया। बर्थडे पार्टी में बाकी फ्रेंड्स के आने के इंतजार के दौरान आरोपी ने उसे कोल्ड ड्रिंक पिलाई। नशा मिला होने के कारण वह बेहोश हो गई। बेहोशी की हालत में आरोपी ने उसके साथ रेप किया और अश्लील वीडियो बना लिया। होश में आने पर उसने विरोध किया तो आरोपी ने उसके साथ शादी करने का वादा किया। इसके बाद उसके अश्लील वीडियो दिखाकर ब्लैकमेल कर देहशोषण करने लगा। जब उसने शादी के लिए दबाव बनाया तो आरोपी ने उससे दूरी बना ली। धोखे का एहसास होने पर पीड़िता ने जवाहर सर्किल थाने में मामला दर्ज करवाया है। पुलिस ने पोक्सो एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अलवर में ट्रैक्टर ने बाइक सवार को कुचला, फैक्ट्री से लौटते वक्त हुआ हादसा

अलवर

अलवर शहर के उद्योग नगर थाना क्षेत्र के भजीट मदनपुरी रोड के समीप तेज रफ्तार से आते ट्रैक्टर ने 28 वर्षीय बाइक सवार को कुचल दिया। जिसकी मौके पर मौत हो गई। जानकारी के अनुसार सालपुर निवासी राकेश यादव पुत्र सुखदेव उद्योग नगर एशियन पेंट्स कंपनी से काम करके शाम को अपने घर

बाइक से आते वक्त की घटना है। तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने बाइक को टक्कर दी। मदनपुरी रोड के समीप ट्रैक्टर घसीटता हुआ बाइक सवार को ले गया। जिसे गंभीर हालत में अलवर लेकर आए। रात को युवक ने दम तोड़ दिया। मृतक राकेश यादव को जिला अस्पताल राजीव गांधी सामान्य चिकित्सालय में उपचार के लिए भर्ती करवाया गया लेकिन यहां उपचार के चलते दम टूट गया। जिसके पिता की 5 साल पहले मौत हो गई। अब मां अकेली रह गई। मां का इकलौता बेटा था। एक बेटी है। जिसकी शादी कर रखी है। परिवार ही नहीं गांव में शोक छा गया।

चूरू से लक्ष्मणगढ़ जा रही बस से गहने चोरी, चोरों ने मदद के बहाने महिला से सूटकेस लिया

सीकर

ससुराल से पीहर जा रही महिला के सूटकेस से लाखों रुपए के सोने-चांदी के जेवरात व कैश चोरी हो गया। बस में महिला के सूटकेस से गहने चोरी हुए। मामला सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ थाना क्षेत्र का है। पुलिस को दी रिपोर्ट में शिवानी दाधीच (28) निवासी वार्ड नम्बर 17 लक्ष्मणगढ़ ने बताया- मेरा ससुराल छापर (चूरू) में और पीहर

लक्ष्मणगढ़ में है। मैं अपनी बहन भावना व बेटी कनिष्का को साथ लेकर छापर से लक्ष्मणगढ़ जा रही थी। सालासर से लक्ष्मणगढ़ जाने के लिए सूर्या ट्रैवल्स की बस में सवार हो गई। यह बस झुंझुनू तक जाती है। मैं सालासर बस स्टैंड से इस बस में बैठी। बस में बैठते समय पास में एक शख्स आया और हेल्प करने को कहा। अनजान शख्स ने मेरा सूटकेस हाथ में लेकर कहा कि मैं इसे बस में आगे रख देता हूं। आरोपी ने पिछली सीट के आगे सूटकेस रख दिया और अगली सीट पर मुझे बैठा दिया। पिछली सीट पर पहले से 2 शख्स बैठे थे। मैंने लक्ष्मणगढ़ पहुंच कर देखा कि सूटकेस से लाखों रुपए के जेवरात व 6 हजार कैश चोरी हो चुके हैं। इसके बाद मामला दर्ज कराया। फिलहाल हेड कॉन्स्टेबल हरिराम मामले की जांच कर रहे हैं।

दौसा में सवारियों से भरी बस- कार में भीषण भिड़ंत, तीन लोगों के शव बुरी तरह फंसे

दौसा

दौसा जिले से गुजर रहे मनोहरपुर-कौथून नेशनल हाईवे पर रविवार की दोपहर एक भीषण सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई। हादसा सैथल रोड पर हरिपुरा गांव के पास हुआ, जहां सवारियों से भरी बस प्राइवेट बस और कार की आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें शव फंस गए। आसपास के लोगों ने सरिए से गेट तोड़कर मृतक व घायलों को बाहर निकाल और उन्हें अस्पताल पहुंचाया। हादसे में दौसा की सिर्रा की ढाणी निवासी सुखलाल मीणा(45) व हरिनारायण मीणा(45) तथा पटवा मोहल्ला निवासी राजकुमार सैन(55) की मौत हो गई। वहीं गणपत मीणा निवासी सिर्रा की ढाणी घायल हो गए, जिसे जिला अस्पताल में इलाज के बाद गंभीर हालत में जयपुर रेफर किया गया है। सदर थाने के एएसआई रमेश चंद ने बताया- कार सवार सभी लोग सैथल से दौसा शहर की तरफ आ रहे थे, जबकि प्राइवेट बस शहर से मनोहरपुर होते हुए झुंझुनू के लिए जा रही थी। इस दौरान हरिपुरा गांव के पास दोनों वाहनों में आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। अचानक हुए घटनाक्रम से बस में सवार लोगों में चीख-पुकार मच गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया दोनों वाहनों में भिड़ंत इतनी जबरदस्त थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और क्षतिग्रस्त हो गई। उसमें सवार लोग बुरी तरह फंस गए। लोगों ने लोहे की रॉड से गेट तोड़कर कार सवारों को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया। सदर थाना पुलिस ने मौके पर पहुंच क्षतिग्रस्त वाहनों को हाईवे से हटवाकर ट्रैफिक सुचारू करवाया।

अवैध शराब से भरी थार जीप पकड़ी, 24 हजार की नकदी भी जब्त

टोंक

टोंक की घाड़ पुलिस और डीएसटी टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए अवैध शराब से भरी एक थार जीप पकड़ी है। साथ ही एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए थार जीप से अवैध 10 पेटी बीयर और 23 हजार 900 रुपये जब्त किए है। मामले में गाड़ी के ड्राइवर को गिरफ्तार किया है। जब्त किये गए वाहन, शराब और नकदी की कुल कीमत 10 लाख 43 हजार सो रुपये है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है। यह कार्रवाई शनिवार देर रात की हैं। घाड़ थाना प्रभारी देवेंद्र सिंह ने बताया कि शनिवार रात को पुलिस टीम को मुखबीर से सूचना मिली थी कि भरनी की ओर जा रही एक सफ़ेद रंग की थार में शराब की पेटियां है। पुलिस टीम ने देर रात को थार का पीछा कर भरनी सरकारी स्कूल के पास गाडी को रुकवाया। बाद में उसकी तलाशी ली गई तो उसमे अवैध 10 कार्टन बीयर और 23 हजार 900 रुपये मिले। इनका संतोषप्रद जवाब नहीं देने पर गाड़ी के ड्राइवर आरोपी अनिल कुमार मीणा (45)पुत्र सुखपाल मीणा निवासी खेमा का झोपडा थाना हनुमाननगर जिला शाहपुरा को गिरफ्तार किया गया।

पाली में ऊंट से टकराई बाइक, एक की मौत

पाली

पाली में ऊंट से टकराने से बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई और दूसरा घायल हो गया, जिसे जोधपुर रेफर किया गया। पुलिस ने रविवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। सिरियारी थाने की एसएचओ गीता सिंह ने बताया- हादसा शनिवार की रात को निम्बली मांडा गांव के पास हुआ। सड़क पर अचानक आए ऊंट से एक बाइक पर सवार तीन युवक टकरा गए। हादसे में तीनों बाइक से उछलकर नीचे गिरे। इसके कारण सिर में चोट लगने से सवराड गांव निवासी दिनेश(22) पुत्र भानाराम मेघवाल की मौत हो गई और कालूनाथ पुत्र लालवन नाथ समेत एक अन्य घायल हो गया। पुलिस ने बताया कि घायल युवक को प्राथमिक उपचार के बाद जोधपुर रेफर किया गया। जबकि एक अन्य युवक हादसे को देखकर घबराकर भाग गया। पोस्टमॉर्टम के बाद रविवार को मृतक की बॉडी परिजनों को सौंपने की कार्रवाई की गई।

कांग्रेस ने सेना को संसाधन नहीं दिए, पाक सेना को बिरयानी खिला कर छोड़ दिया, अब अभिनंदन को पूरा देश जानता है: यूडीएच मंत्री

अजमेर

यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने कहा कि पाक अधिकृत कश्मीर 2024 से 2029 के काल खंड के बीच भारत का हिस्सा बनेगा। खर्रा ने कांग्रेस पर देश की सेना को कमजोर करने व संसाधन मुहैया नहीं कराने के आरोप भी लगाए। खर्रा ने कहा कि युद्ध के दौरान बंदी बनाए गए 93 हजार पाक सैनिकों को महीनों बिरयानी खिलाकर वापस सौंप दिया। लेकिन, भारतीय सेना के जवानों की सुध नहीं ली, जो पाक जेल में बंद थे।

आज पूरा देश अभिनंदन को जानता है

खर्रा अजमेर के भाजपा कार्यालय में ओबीसी प्रकोष्ठ सम्मेलन में शामिल होने के लिए आए थे। यहां उन्होंने पत्रकारों से कहा- कांग्रेस की सरकार के समय भारतीय सेना सरकार से मदद मांगती रही। लेकिन, उन्हें मदद नहीं भेजी गई। ऐसे में शर्मनाक हार हुई। इतिहास पढ़ोगे तो पूरा पता चलेगा। साल 1971 के युद्ध में भारत जीता और पाकिस्तान के 93 हजार सैनिक बंदी बनाए। लेकिन, उनको छोड़ दिया। लेकिन पाक की जेल में बंद सैनिकों का कुछ नहीं किया। सरबजीत की हत्या हुई तो खुलासा हुआ। अब समय बदल चुका है। पिछले दस साल में अभिनंदन को सब जानते है। पाक में घुसकर मारा, ये भी जानते है। चीन सीमा पर मुकाबला किया। भारतीय सेना धूल चटाने में सक्षम हुई है।

जातिगत जनगणना की बात करना देश को खंडित करना

यूडीएच मंत्री ने जातिगत जनगणना के सवाल पर कहा- वैसे ही देश जातियों में बंटा है और वर्तमान में एकता की आवश्यकता है। इसे अनावश्यक तूल देना, देश की एकता व अखंडता को खंडित करने का प्रयास है। अब जो काम होंगे वो न किसी अधिकारी के कहने से होंगे और न किसी जनप्रतिनिधि के कहने से, केवल जनता जो काम चाहेगी, वो ही होंगे। जनता ने भाजपा पर विश्वास जताया है और इसे कायम रखा जाएगा। उन्होंने कहा- जब पहलवान बराबर का नहीं हो तो सामने वाला भी ढीला पड़ जाता है। लेकिन, भाजपा जीतेगी और चार जून को इसका पता चल जाएगा। यूडीएच मंत्री ने कहा पिछली राज्य सरकार के कार्यकाल के दौरान स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट में गड़बड़ी हुई। अजमेर की सुन्दरता खराब हुई। सरकार बनने व आचार संहिता के बीच समय कम मिला। लेकिन आचार संहिता हटते ही इन कार्यों की जांच कराकर दोषियों की जिम्मेदारी तय की जाएगी। खर्रा ने कहा- अब सरकार बदल गई है और जो भी खराब काम हुए हैं, आचार संहिता हटने के बाद उनके लिए जिम्मेदारी तय की जाएगी।

अलवर में बारातियों पर लाठी-डंडों से हमला, पथराव, धार्मिक स्थल के सामने डीजे बंद कराने को लेकर विवाद

महिला समेत 8 बाराती घायल

रामगढ़

बारात में बज रहे डीजे को लेकर एक धार्मिक स्थल के बाहर लोगों ने बारातियों पर हमला कर दिया। हमले में 8 बाराती घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला समेत 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। मामला अलवर के नौगांवा का रविवार दोपहर 2.30 बजे का है। पुलिस ने बताया कि रामदास निवासी नाहरपुर ने मामला दर्ज कराया।

उन्होंने बताया- मेरे पोते की बारात लेकर मंदुका बास गांव पहुंचे थे। यहां बारात सजकर डीजे और घोड़े बग्गी के साथ श्यामलाल के घर के लिए रवाना हुई। बारात एक धार्मिक स्थल के पास पहुंची तो वहां खड़े जावेद और मुश्ताक ने डीजे बंद करने को कहा। बारातियों ने विरोध किया। इसी बात को लेकर विवाद हो गया। विवाद बढ़ने पर उनके परिवार की महिलाएं भी हाथों में लाठी-डंडे लेकर आ गई। उन्होंने आते ही बारातियों पर हमला कर दिया। इससे वहां अफरा-तफरी मच गई। इसके बाद आरोपियों ने पथराव कर दिया। हमले और पथराव में खुशी पुत्री दिलीप, उसके भाई सागर, कुलदीप, दीप, संदीप, पवन, रमेश और आशा प%ी बंटू घायल हुए। घायलों को नौगांवा के सरकारी अस्पताल में ले गए, जहां से महिला आशा को हालत गंभीर होने पर अलवर रेफर कर दिया। घटना की सूचना पर एएसपी तेज सिंह, डीएसपी ओमप्रकाश बिश्नोई और कई थानों का पुलिस जाब्ता मौके पर पहुंचा। एएसपी तेज सिंह का कहना है कि मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस ने मुशर्रफ,अनवर, मुनासिब, नजाकत, महिला जाहिदा को गिरफ्तार कर लिया गया है। अन्य आरोपियों को पकड़ने के लिए गांव में दबिश दी जा रही है। एएसपी ने कहा- पीड़ित पक्ष ने डीजे बंद करने को लेकर विवाद होना बताया है। जबकि 2 कारण और सामने आए हैं। पहला यह कि मोटसाइकिल से टक्कर के बाद विवाद हुआ और दूसरा बच्चा नीचे गिरे रुपए उठा रहा था, इस दौरान उसे चोट लग गई। मामले में जांच की जा रही है, उसके बाद ही सही कारण सामने आएगा।

होटल के ब्यूटी पार्लर में मिला युवती का शव, पिता ने लगाया हत्या का आरोप, तीन युवक हिरासत में

चूरू

होटल के लेडीज ब्यूटी पार्लर में एक युवती का शव पंखे से लटका मिला। युवती उसी ब्यूटी पार्लर में काम करती थी। मौके पर पहुंचे परिजनों ने शव को नीचे उतारा। पिता ने होटल संचालक पर हत्या का आरोप लगाया है। परिजनों ने शव का पोस्टमॉर्टम कराने से इनकार कर दिया है। आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सैन समाज के लोगों ने मॉर्च्युरी के बाहर धरने पर बैठ गए हैं। कोतवाली थाना पुलिस ने 4 नामजद आरोपियों में से तीन को हिरासत में लिया है। पार्लर को सीज कर दिया है। नई सड़क, वार्ड नंबर 27 निवासी राजकुमार ने कोतवाली थाना पुलिस को रिपोर्ट दर्ज करवाई है, जिसमें बताया कि होटल संचालक अरशद, मुजफर, वाहिद और अमजद आदि होटल स्टाफ ने मिलकर मेरी बेटी बुलबुल रक्षक (24) की हत्या की है या सुसाइड करने के लिए मजबूर किया है। परिवार के विकास रक्षक ने बताया कि मेरे ताऊ राजकुमार की बेटी बुलबुल रक्षक(24) होटल सनसिटी के लेडीज ब्यूटी पार्लर में काम करती थी। उसे होटल की ओर से ही वेतन दिया जाता था। शनिवार सुबह अन्य दिनों की तरह वह ब्यूटी पार्लर गई थी। जो देर शाम तक घर नहीं लौटी। ताऊ ने उसे कॉल किया, लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। रात करीब दस बजे ताऊ स्कूटी लेकर ब्यूटी पार्लर गए। उसी समय पार्लर के दरवाजे पर अरशद खान, वाहीद और मुजफर दौड़कर आए और ताऊ को पार्लर में जाने से रोकने लगे। ताऊ जबरदस्ती अंदर घुस गए। देखा तो बुलबुल पंखे से लटकी हुई थी, उसके गले और हाथ पर चोट के निशान थे। ताऊ ने घटना की सूचना दी तो हम लोग मौके पर पहुंचे और शव को फंदे से उतारा। कोतवाली थाने के एएसआई गिरधारीलाल सैनी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी लेकर शव को डीबी अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया। डीएसपी सुनील झाझड़िया ने बताया कि चार आरोपियों में से अरशद, वाहिद और अमजद को राउंडअप कर लिया गया है। सनसिटी होटल के ब्यूटी पार्लर को सीज कर दिया है। एसपी जय यादव के निर्देश पर एफएसएल टीम को भेज कर महत्वपूर्ण साक्ष्य जुटाए गए हैं।

आरोपियों की गिरफ्तारी पर अड़े परिजन

अस्पताल में मॉर्च्युरी के सामने बैठे परिजनों ने कहा कि बेटी की हत्या या मरने के लिए मजबूर करने वाले आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद ही शव को उठाएंगे। सैन समाज के लोग मॉर्च्युरी के सामने दरी बिछाकर बैठे हुए हैं। समाज के लोगों ने भी आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की परिवार के लोगों ने बताया कि कुछ दिन पहले बुलबुल ने किसी कारण से अपना मोबाइल और ब्यूटी पार्लर में होटल संचालकों की ओर से ?दिए गए मोबाइल को तोड़ दिया था। जिसका कारण आज तक समझ में नहीं आया। बाद में घर में पड़ा दूसरा मोबाइल यूज कर रही थी। परिवार के लोगों ने बताया कि बुलबुल हंसमुख और हंसी मजाक करने वाली लड़की थी। बुलबुल ने एमए तक पढ़ाई की थी। दो साल से पार्लर का काम कर रही थी। तीन महीने से पार्लर में अकेले ही थी। परिवार के लोगों ने बताया कि हमारी बुलबुल इतनी कायर नहीं थी कि वो फांसी लगा ले।

इमरजेंसी वार्ड के बाहर महिला ने बच्चे को दिया जन्म, परिजनों ने लगाया लापरवाही का आरोप

दर्द से तड़पी प्रसूता; अस्पताल स्टाफ ने नहीं संभाला

बूंदी

बूंदी के नैनवां में रविवार को एक बार फिर अस्पताल की अव्यवस्था सामने आई। जहां एक महिला इमरजेंसी वार्ड के बाहर बच्चे को जन्म दे दिया। दर्द से तड़प रही महिला को संभालने के लिए अस्पताल स्टाफ मौके पर नहीं पहुंचा, तो परिजनों को ही महिला को वार्ड में शिफ्ट करना पड़ा। नैनवां उपखंड के फुलेता

निवासी अनिता प%ी सत्य नारायण को प्रसव पीड़ा होने पर परिजन नैनवां अस्पताल लेकर पहुंचे थे। महिला की जांच के बाद डॉक्टरों ने उसे रेफर करते हुए कहा कि इसे टोंक या बूंदी ले जाओ। इसी दौरान अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड के बाहर बैंच पर बैठी महिला के तेज प्रसव पीड़ा होने लगी। परिजन सहायता के लिए डॉक्टर और स्टाफ के पास पहुंचे, लेकिन दर्द से तड़पती महिला को संभालने के लिए अस्पताल की ओर से कोई नहीं आया। महिला की पीड़ा देखकर परिजन और परिचित महिलाओं ने उसे संभाला, इसी दौरान महिला ने बच्चे को जन्म दे दिया। घटना को लेकर परिजनों में काफी नाराजगी बढ़ गई। परिजनों का आरोप है कि यह तो गनीमत रही कि कोई अनहोनी नहीं हुई, वरना अस्पताल स्टाफ की इस लापरवाही से महिला औा बच्चे के जीवन पर संकट आ सकता था। उन्होंने कहा कि जब प्रसव कभी भी हो सकता था तो पीड़िता को रेफर करने के बदले अस्पताल में प्रसव कराने की कोशिश की जानी चाहिए थी। गौरतलब है कि पिछली सरकार मे ही नैनवां अस्पताल को उप जिला अस्पताल का दर्जा दिया गया, लेकिन सुविधाओं के नाम पर कोई बदलाव नहीं हुआ। पर्याप्त डॉक्टर नहीं होने से समस्या खड़ी होती रहती है। इस मामले पर अस्पताल प्रभारी डॉ. समुद्र लाल मीणा का कहना है कि प्री मैच्योर डिलीवरी थी, महिला को अंदर ले जाने के दौरान यह घटनाक्रम हुआ। बच्चा काफी कमजोर है, इसलिए रेफर किया है।

श्रीगंगानगर में नहरबंदी खत्म, पंजाब से छोड़ा पानी, दो दिन दिन में शहर में हो सकेगी नियमित पानी की सप्लाई

श्रीगंगानगर

श्रीगंगानगर में नहरबंदी रविवार को समाप्त हो गई। इसके साथ ही पंजाब से नहरों में पानी छोड़ दिया गया है। यह पानी रविवार आधी रात या अल सुबह तक खखां हैड तक पहुंच पाएगा। हालांकि अब भी नहरों में साफ पानी आने में थोड़ा समय लगेगा। ऐसे में अगले दो-तीन दिन में पीएचईडी पानी का स्टोरेज कर सकेगा और लोगों को पानी की नियमित सप्लाई मिल सकेगी। नहर बंदी के चलते इलाके में पिछले बीस दिन से पानी एक दिन के अंतराल से दिया जा रहा है। निर्धारित समय पर दिन में तीन से पांच घंटे तक पानी देकर शहर की पेयजल संबंधी जरूरत पूरी की जा रही है। अब नहरबंदी समाप्त होने और नहरों में पानी आने के बाद अगले दो से तीन दिन में पानी की सप्लाई सामान्य कर दी जाएगी। गंगनहर के एसई धीरज चावला ने बताया कि पंजाब ने नहरों में पानी छोड़ दिया है। यह रविवार देर रात या अल सुबह तक श्रीगंगानगर जिले में पहुंच पाएगा। इसके बाद पीएचईडी पानी का स्टोरेज करेगी और इसके बाद सामान्य रूप से पानी दिया जा सकेगा। वहीं पीएचईडी एक्सईएन एमएल अरोड़ा ने बताया कि पानी की सप्लाई अभी 24 अप्रैल तक एक दिन के अंतराल से ही मिलेगी। इसके बाद सप्लाई सामान्य रूप से दी जा सकेगी।

एक ही मंदिर में होंगे 24 जैन तीर्थंकरों के दर्शन, देश का पहला मंदिर जिसके गुंबद में पिलर नहीं

अजमेर

देश का पहला जैन मंदिर, जिसमें बिना पिलर का गुफा मंदिर भी होगा। पहाड़ी की तलहटी में स्थित डोम के आकार का गुफा मंदिर 90 फीट चौड़ा और 135 फीट लंबा है। इसे बनाने में लाल पत्थरों का इस्तेमाल किया जा रहा है। करीब साढ़े पांच सौ एकड़ के कैंपस में जैन धर्म से जुड़े तमाम मंदिर और प्रतिमाएं हैं। महावीर जयंती के मौके पर हम आपको ले चलते हैं अजमेर के ज्ञानोदय तीर्थ क्षेत्र नारेली। नारेली तीर्थ क्षेत्र कमेटी के कोषाध्यक्ष मिश्रीलाल जैन ने बताया कि 150 मीटर ऊंची पहाड़ी की तलहटी में बना यह बहुउद्देशीय क्षेत्र करीब साढ़े पांच सौ बीघा भूमि पर फैला है। ज्ञानसागर महाराज की समाधि नसीराबाद (अजमेर) में है। संत शिरोमणी पूज्य आचार्य 108 विद्यासागरजी की दीक्षा स्थली भी अजमेर ही है। दोनों महान आदर्श संतों की यशोगाथा

को चिर स्थायी बनाने के लिए 'ज्ञानोदय तीर्थ' बनाया गया। इसी कैंपस में 11 मंजिला मंदिर भी बन रहा है। इसका काम भी लगभग पूरा हो चुका है। यहां भगवान आदिनाथ से महावीर स्वामी तक 24 तीर्थंकरों की 3-3 प्रतिमाएं विराजेंगी। हर मंजिल पर 72 और 10 मंजिलों में चारों ओर 720 प्रतिमाएं तीर्थंकरों की लगेंगी। गौशाला, स्कूल, हॉस्पिटल के अलावा भक्तों के ठहरने के लिए धर्मशाला को भी बनाया गया है। साल 1997 में सुधासागरजी महाराज का प्रथम चातुर्मास भी इसी क्षेत्र पर हुआ था। इस साल कई योजनाएं शुरू की गईं और विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास किया गया। नारेली तीर्थ में एंट्री पर लाल पत्थरों से बना सिंहद्वार है। इसकी ऊंचाई 51 फीट है। इसके दोनों तरफ सुरक्षाकर्मियों के लिए 2 मंजिले कमरे बने हैं। इस द्वार से क्षेत्र के प्रमुख मंदिर आदिनाथ जिनालय में स्थापित विशाल और भव्य मनोहारी आदिनाथ की प्रतिमा के दर्शन होते हैं। इसका उद्घाटन 16 सितम्बर, 2000 को आर. के.मार्बल परिवार किशनगढ़ ने किया। पहाड़ी की तलहटी में अक्षरधाम की तर्ज पर आदिनाथ जिनालय बना है। मंदिर भव्य और कलात्मक है। फव्वारे, गार्डन, धर्म आधारित कलाकृतियां आदि इसकी सुंदरता को बढ़ाती हैं। इसमें भूतल पर वृत्ताकार आकृति में 'ज्ञानसागर सभागार' है। इसके चारों तरफ दरवाजे हैं। यह खुला-खुला और हवादार है। बीच में शानदार स्टेज है। दूसरी मंजिल पर विशाल जिनालय है। हॉलनुमा इस मंदिर में लाल पत्थर से बनी विशालकाय मूर्ति स्थापित है। लाल पत्थरों के कमलासन पर मूर्ति पद्मासन में विराजमान है। प्रतिमा एक ही पत्थर से बनी है, जिसकी ऊंचाई 21 फीट और वजन करीब 40 मीट्रिक टन है। इस मंदिर का शिलान्यास सुधासागरजी महाराज के सानिध्य में 11 अगस्त, 1997 को आरके मार्बल परिवार ने किया था। यहां सुधार सागर पब्लिक स्कूल भी बनाया गया है, जिसका भवन तैयार हो चुका है। स्कूल में 40 कमरों को बनाया गया हैं। मान्यता को लेकर कार्रवाई चल रही है। बच्चों के लिए 35 कमरों के हॉस्टल की भी व्यवस्था है।

आखिर क्यों धधक रही है पृथ्वी?

योगेश कुमार गोयल

अगर प्रकृति से खिलवाड़ कर पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर हम स्वयं इन समस्याओं का कारण बने हैं और हम वाकई गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर चिंतित हैं तो इन समस्याओं का निवारण भी हमें ही करना होगा ताकि हम प्रकृपि के प्रकोप का भाजन होने से बच सकें अन्यथा प्रकृति से जिस बड़े पैमाने पर खिलवाड़ हो रहा है, उसका खामियाजा समस्त मानव जाति को अपने विनाश से चुकाना पड़ेगा।

न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी तथा मौसम का निरन्तर बिगड़ता मिजाज गंभीर चिंता का सबब बना है। हालांकि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विगत वर्षों में दुनियाभर में दोहा, कोपेनहेगन, कानकुन इत्यादि बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन होते रहे हैं किन्तु उसके बावजूद इस दिशा में अभी तक ठोस कदम उठते नहीं देखे गए हैं। दरअसल वास्तविकता यही है कि राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रकृति के बिगड़ते मिजाज को लेकर चचाएं और चिंताएं तो बहुत होती हैं, तरह-तरह के संकल्प भी दोहराये जाते हैं किन्तु सुख-संसाधनों की अंधी चाहत, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, अनियंत्रित औद्योगिक विकास और रोजगार के अधिकाधिक अवसर पैदा करने के दबाव के चलते इस तरह की चचाएं और चिंताएं अर्थहीन होकर रह जाती हैं।

प्रकृति पिछले कुछ वर्षों से बार-बार भयानक आंधियों, तूफान और ओलावृष्टि के रूप में यह गंभीर संकेत दे रही है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहां किस कदर बदल जाए, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते दुनियाभर में मौसम का मिजाज किस कदर बदल रहा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उत्तरी ध्रुव के तापमान में एक-दो नहीं बल्कि बड़ी बढ़ोतरी देखी गई। मौसम की प्रतिकूलता साल दर साल किस कदर बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है कि कहीं भयानक सूखा तो कहीं बेमौसम अत्यधिक वर्षा, कहीं जबरदस्त बर्फबारी तो कहीं कड़ाके की ठंड, कभी-कभार ठंड में गर्मी का अहसास तो कहीं तूफान और कहीं भयानक प्राकृतिक आपदाएं, ये सब प्रकृति के साथ हमारे खिलवाड़ के ही दुष्परिणाम हैं और हमें यह सचेत करने के लिए पर्याप्त हैं कि अगर हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का बुरे तरीके से दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है।

हालांकि प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें चेतावनी भी देती रही है किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने

से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। हिन्दी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित पुस्तक ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्ल के अनुसार हम यह समझना ही नहीं चाहते कि पहाड़ों का सीना चीरकर हरे-भरे जंगलों को तबाह कर हम जो कंक्रीट के जंगल विकसित कर रहे हैं, वह वास्तव में विकास नहीं बल्कि विकास के नाम पर हम अपने विनाश का ही मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। पहाड़ों में बढ़ती गर्माहट के चलते हमें अक्सर घने वनों में भयानक आग लगने की खबरें सुनने को मिलती रहती हैं। पहाड़ों की इसी गर्माहट का सीधा असर निचले मैदानी इलाकों पर पड़ता है, जहां का पारा अब हर वर्ष बढ़ता जा रहा है।

धरती का तापमान यदि इसी प्रकार साल दर साल बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा क्योंकि हमें यह बखूबी समझ लेना होगा कि जो प्रकृति हमें उपहार स्वरूप शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध मिट्टी तथा ढ़ेरों जनोपयोगी चीजें दे रही है, अगर मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पैदा किए जा रहे पर्यावरण संकट के चलते प्रकृति कुपित होती है तो उसे सब कुछ नष्ट कर डालने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। करीब दो दशक पहले देश के कई राज्यों में जहां अप्रैल माह में अधिकतम तापमान औसतन 32-33 डिग्री रहता था, अब वह 40 के पार रहने लगा है। मौसम विभाग का तो अनुमान है कि अगले तीन दशकों में इन राज्यों में तापमान में वृद्धि 5 डिग्री तक दर्ज की जा सकती है और इसी प्रकार तापमान बढ़ता रहा तो एक ओर जहां जंगलों में आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी, वहीं धरती का करीब 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे की चपेट में आ जाएगा तथा एक चौथाई हिस्सा रेगिस्तान बन जाएगा, जिसके दायरे में भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य अमेरिका, दक्षिण आस्ट्रेलिया, दक्षिण यूरोप इत्यादि आएंगे।

सवाल यह है कि धरती का तापमान बढ़ते जाने के प्रमुख कारण क्या हैं? ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्ल पुस्तक के मुताबिक इसका सबसे अहम कारण है ग्लोबल वार्मिंग, जो तमाम तरह की सुख-सुविधाएं व संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों की ही देन है। पैट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड मौजूद है, जिसकी मौसम का मिजाज बिगाड़ने में अहम भूमिका है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील किया जाता रहा है। एक और अहम कारण है बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि। जहां 20वीं सदी में वैश्विक जनसंख्या करीब 1.7 अरब थी, अब बढ़कर 8 अरब से भी ज्यादा हो चुकी है। अब सोचने वाली बात यह है कि धरती का क्षेत्रफल तो उतना ही रहेगा, इसलिए कई गुना बढ़ी आबादी के रहने और उसकी जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है, इससे पर्यावरण की सेहत पर जो जबरदस्त प्रहार हुआ है, उसी का परिणाम है कि धरती बुरी तरह धधक रही है। ब्रिटेन के प्रख्यात भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग की इस टिप्पणी को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है कि यदि मानव जाति की जनसंख्या इसी कदर बढ़ती रही और ऊर्जा की खपत दिन-प्रतिदिन इसी प्रकार होती रही तो करीब 600 वर्षों बाद पृथ्वी आग का गोला बनकर रह जाएगी। धरती का तापमान बढ़ते जाने का ही दुष्परिणाम है कि ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्रों का जलस्तर बढ़ने के कारण दुनिया के कई शहरों के जलमग्न होने की आशंका जताई जाने लगी है। बहरहाल, अगर प्रकृति से खिलवाड़ कर पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर हम स्वयं इन समस्याओं का कारण बने हैं और हम वाकई गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर चिंतित हैं तो इन समस्याओं का निवारण भी हमें ही करना होगा ताकि हम प्रकृपि के प्रकोप का भाजन होने से बच सकें अन्यथा प्रकृति से जिस बड़े पैमाने पर खिलवाड़ हो रहा है, उसका खामियाजा समस्त मानव जाति को अपने विनाश से चुकाना पड़ेगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, पर्यावरण मामलों के जानकार तथा पर्यावरण पर बहुचर्चित पुस्तक ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्ल के लेखक हैं)

संपादकीय

जनादेश की गारंटी

सर्वोच्च न्यायालय ने लोक सभा सभा के प्रथम चरण के मतदान से एक दिन पहले चुनावी मशीन की विसनीयता के बारे में यही कहा। एडीआर और अन्य की तरफ से जारी जनहित याचिकाओं पर दूसरे दिन सुनवाई करते हुए ईलेक्ट्रिक वोटिंग मशीन पर संदेह जताने को सही नहीं बताया। इस पर फैसला अभी आना है। पर इन टिप्पणियों से ईवीएम पर न्यायालय के रु ख का पता चलता है। स्वदेश निर्मित ईवीएम मशीन से चुनाव बीसवीं सदी के नौवें दशक से ही कराया जा रहा है। इसके पहले, 1982 में केरल की परवूर विधानसभा उपचुनाव में उसे कुछ बूथों पर आजमाया गया था। इसकी खामियों को दुरु स्त कर इसे प्रयोग-सक्षम बनाया गया। ईवीएम के जरिए यूपीए ने दो आम चुनाव जीते हैं और केंद्र में उनकी दो सरकारें बनी हैं। इसके पहले एनडीए की भी सरकार बनी है। विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के चुनाव ईवीएम से ही हुए हैं। इसके बावजूद हारे हुए दल या गठबंधन हर आम चुनाव के वक्त ईवीएम को हटाने या उसे वीवीपीएटी से लैस करने की मांग चुनाव आयोग से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक करते रहे हैं। आयोग की तरफ से हर चुनाव के पहले उनके समक्ष ईवीएम के फूलप्रूफ डेमो के जरिए चिंताओं के निराकरण के बावजूद सवाल उठाते रहना एक रस्मी कवायद है। उनका आरोप होता है कि इसमें डाले गए वोट भाजपा को मिलते हैं। पहले के कुछ उदाहरण इसकी तस्दीक भी करते थे पर यह तो मशीनी गड़बड़ी हो सकती थी। अब तो इसमें पर्याप्त सुधार किया गया है। तभी तो सर्वोच्च न्यायालय ने चार करोड़ टेस्टेड डेटा पर अपना भरोसा जताया है। यह सही भी है। ऐसा नहीं होता तो यूपीए ही लगातार जीतता होता या एनडीए का राज बदस्तूर रहता। दलों को चुनावों में इतना पैसा और पसीना नहीं बहाना पड़ता। ईवीएम अपने आका को तश्तरी में नतीजे परोस देती। न्यायालय ने रस्मी याचियों से स्पष्ट कर दिया है कि बैलेट पेपर और बक्से की झीना-झपटी वाले प्रतिगामी चुनावी दौर में भारत जैसे महादेशइ को नहीं लौटाया जा सकता। यह जर्मनी नहीं है। अलबत्ता, इस मसले पर फिर उंगली न उठे इस लिहाजन हर वोट का हिसाब रखने के लिए ईवीएम को वीवीपीएटी के साथ जोड? पर विचार किया जा सकता है। अंतिम परिणाम में देरी के बावजूद। चुनाव बिल्कुल शुद्ध-पवित्र तरीके से होना चाहिए ताकि उसके जनादेश की गारंटीइ हो। सर्वोच्च अदालत की टिप्पणी में अवाम का मत है।

चिंतन-मनन

मृत्यु का अर्थ

मृत्यु एक शात सत्य है। यह अनुभूति प्रत्यक्ष प्रमाणित है, फिर भी इसके संबंध में कोई दर्शन नहीं है। अब तक जितने ऋषि-महर्षि या संत-महंत हुए हैं, उन्होंने जीवन दर्शन की चर्चा की है। जीवन के बारे में ऐसी अनेक दृष्टियां उपलब्ध हैं जिनसे जीवन को सही रूप में समझा जा सकता है और जिया जा सकता है। किंतु मृत्युक को एक अवश्यंभावी घटना मात्र मानकर उपेक्षित कर दिया गया। मृत्यु के पीछ भी कोई दर्शन है, इस रहस्य को अधिक लोग पकड़ ही नहीं पाए। यही कारण है कि जीवन दर्शन की भांति मृत्यु दर्शन जीवन में उपयोगी नहीं बन सका।

जैन दर्शन एक ऐसा दर्शन है जिसने जीवन को जितना महत्व दिया, उतना ही महत्व मृत्यु को दिया। बशत्रे कि वह कलात्मक हो। कलात्मक जीवन जीने वाला व्यक्ति जीवन की सब विसंगतियों के मध्य जीता हुआ भी उसका सार तत्व खींच लेता है। इसी प्रकार मृत्यु की कला समझने वाला व्यक्ति भी मृत्यु से भयभीत न होकर उसे चुनौती देता है। जैन दर्शन में इसका सवार्गीण विवेचन उपलब्ध है।

मृत्यु का अर्थ है- आयुष्य प्राण चुक जाने पर जीव का स्थूल शरीर से वियोग।इसके कई प्रकार हैं। उन सबका संक्षिप्त वर्गीकरण किया जाए तो मृत्यु के दो प्रकार होते हैं- बाल मरण और पंडित मरण. असंयम और असमाधिमय मरण बाल मरण है।अकाल मृत्यु, आत्महत्या, अज्ञान मरण आदि सभी प्रकार के मरण बाल मरण में अंतर्निहित हैं। संयम और समाधिमय मृत्यु पंडित मरण है। जीवन के अंतिम क्षणों में भी संयम और समाधि का स्पर्श हो जाए तो वह मरण पंडित मरण की गणना में आ जाता है। कुछ व्यक्ति मौत के नाम से ही घबराते हैं। वे जीवन को महत्व देते हैं। अपना-अपना चिंतन है। मुझे इस संबंध में अपने विचार देने हों तो मैं मृत्यु को वरीयता दूंगा। क्योंकि जीवन की सार्थकता भी मृत्यु पर ही निर्भर करती है। किसी व्यक्ति ने तपस्या की है और जागरुकता के साथ धर्म की आराधना की है, तो उसका फल समाधिमय मृत्यु ही है।

झूठ के हलफनामे और हलफनामों का झूठ

राकेश अचल

भारत के नेता कितना झूठ बोल सकते हैं ,इसकी कल्पना दुनिया का कोई मनोवैज्ञानिक,चिकित्स्क या वैज्ञानिक नहीं कर सकता । भारत के नेताओं की पोल उस वक्त खुलती है जब देश में चुनाव होते है। देश में इस समय लोकसभा के चुनाव चल रहे है। इन चुनावों में जो प्रत्याशी हैं उनके सम्पत्ति के बाबद दिए जा रहे हलफनामें देखकर हंसी आती है। लेकिन केंचुआ के पास ऐसी कोई दूरबीन नहीं है जो इन हलफनामों की जांच कर सके। इस मामले में सभी दलों के नेता एक से बढ़कर एक हैं।

लोकसभा चुनाव में भाजपा का नेतृत्व करने वाले देश के गृहमंत्री श्री अमित शाह के हलफनामे से ही बात शुरू करते हैं। गांधीनगर से भाजपा उम्मीदवार और गृह मंत्री अमित शाह के पास 20 करोड़ की चल और 16 करोड़ की अचल संपत्ति है लेकिन शाह के पास खुद की कार नहीं है। आयोग में दाखिल चुनावी हलफनामे के अनुसार, उनके पास 72 लाख के गहने हैं। इनमें उनके खरीदे हुए सिर्फ 8.76 लाख के हैं। पत्नी के पास सोने के 1620 ग्राम और हीरे के 63 कैरेट के गहने हैं।गृह मंत्री के पास 24,164 रुपये नकद, 42 लाख का लोन भी। शाह साहब करोड़पति होकर भी कार क्यों नहीं खरीद पाए ये एक रहस्य है। इसका उद्घाटन वे खुद कर सकते हैं या राम जी।

कहते हैं कि राजनीति में आने से पहले वे मनसा में प्लास्टिक के पाइप का पारिवारिक व्यवसाय संभालते थे। वे बहुत कम उम्र में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए थे। 1982 में उनके अपने कॉलेज के दिनों में शाह की भेंट नरेंद्र मोदी से हुई। 1983 में वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े और इस तरह उनका छात्र जीवन में राजनीतिक रुझान बना।शाह साहब 1997 सेचुनाव लड़ रहे है। पहले वे विधायक हुआ करते थे,अब देश के गृहमंत्री है। उनका खानदानी पेशा दलाली [ब्रोकरेज] का है। शाह जी ने अब तक 5 विधानसभा चुनाव लाडे और जीत। लोकसभा का पहला चुनाव उन्होंने 2019 में लड़ा और जीते,जीते ही नहीं सीधे गृहमंत्री भी बनाये गए ,लेकिन बेचारे 27 साल में एक कार नहीं खरीद पाए।

अब आपको मै पूरे 543 नेताओं के हलफनामे तो दिखा नहीं सकता किन्तु जो दिलचस्प हैं उनकी बात अवश्य करता हूँ । अल्पसंख्यकों के नेता औबेसी का चुनावी हलफनामा औबेसी की सम्पत्ति का खुलासा करता है। चुनाव आयोग में भरे अपने हलफनामे में असदुद्दीन ओवैसी ने अपनी संपत्ति को लेकर खुलासा किया है. इसके मुताबिक उनके पास 2.80 करोड़ रुपए की चल संपत्ति हैं. इसमें कैश, सोना, बीमा जैसे चीजें शामिल हैं। ओवैसी की पत्नी के नाम पर 15.71लाख रुपए की चल संपत्ति दर्शाई गई है , जबकि उनके पास 16.01 करोड़ रुपए की अचल संपत्ति भी है। 1994 से चुनावी राजनीति में सक्रिय औबेसी ओवैसी पर 7 करोड़ रुपए का लोन भी है। उन्होंने एक घर लोन पर लिया है जिसकी कीमत 3.85 करोड़ रुपए है।

सबसे दिलचस्प हलफनामा मध्यप्रदेश के 18 साल मुख्यमंत्री रहे मामा शिवराज सिंह चौहान का है।विदिशा लोकसभा के बीजेपी प्रत्याशी नामांकन दाखिल करने वाले शिवराज सिंह चौहान ने चुनाव आयोग को दिए हलफनामे में बताया है कि उनके पास 1,24,85,475 रुपये की चल और 2,17,60,000 रुपये की अचल संपत्ति है. शिवराज की पत्नी साधना सिंह की संपत्ति भी 5 महीनों में 15 लाख रुपए बढ़ी है. अगर नकदी की बात करें तो शिवराज सिंह चौहान के पास कुल 2 लाख 5 हजार रुपये नकद हैं, वहीं उनकी पत्नी साधना सिंह के पास करीब 1 लाख 65 हजार रुपये नकद हैं. शिवराज सिंह चौहान के पास कोई कर्ज भार नहीं है, वहीं उनकी पत्नी साधना सिंह के ऊपर करीब 64 लाख रुपये का कर्ज है। मजे की बात ये की हमारे मामा के पास भी कोई कार नहीं है। मामा कार लेकर करते भी क्या? उन्होंने तो पूरे १८ साल सरकारी हवाई जहाज और हैलीकाप्टर को स्कूटर की तरह जोता था।

हमारे देश में गरीबी अभिशाप और अमीरी वरदान है। लोकसभा चुनाव के पहले चरण के लिए चुनाव मैदान में उतरे प्रत्याशियों के हलफनामे देखकर आप चौंक सकते है। लेकिन मै आपको अभी तक आये हलफनामों के आधार पर बता सकता हूँ कि सबसे अमीर और सबसे गरीब प्रत्याशी कौन रहा । केंचुआ के आंकड़ों के मुताबिक सबसे अमीर उम्मीदवार मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा से मौजूदा सांसद और कांग्रेस नेता नकुल नाथ हैं। वे मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के बेटे हैं और उनके पास 716 करोड़ रुपये की सम्पत्ति है। 2019 के लोकसभा चुनाव में नकुलनाथ मध्य प्रदेश से जीतने वाले इकलौते उम्मीदवार थे। दूसरी ओर, तमिलनाडु के थूथुकुडी से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे पोनराज के सबसे गरीब उम्मीदवार हैं, क्योंकि चुनावी हलफनामे के अनुसार, उनके पास सिर्फ 320 रुपये की संपत्ति है।

भारतीय लोकतंत्र की यही विशेषता है कि यहां गरीब से गरीब और अमीर से अमीर व्यक्ति चुनाव लड़ सकता है। लोग बेकार ही चुनाव लड़ने के लिए इलेक्टोरल बांड के फेर में पड़ते हैं। हमारे शहर ग्वालियर से चाय बेचने वाले एक सज्जन सिर्फ इसलिए लोकसभा का चुनाव लड़ रहे हैं कि कहीं उन्हें भी मोदी जी की तरह कोई मौका मिल जाये। जाहिर है कि जितने भी प्रत्याशी हैं वे चुनाव आयोग की ही नहीं बल्कि देश की जनता की आँखों में धुल झौंकते हुए अपनी समपत्ति की जानकारी सार्वजनिक करते हैं। लेकिन इन हलफनामों की न किसी ने शिकायत की और न कभी किसी ईडी या किसी अदालत ने स्वयं संज्ञान लेकर इनकी जांच करने की जरूरत समझी। इस मामले में अज्ञानी रहने में ही समझदारी है। हमारे यहां झूठी हलफ उठाने की पुरानी रिवायत है । लोग चुनाव लड़ते हैं तो संविधान की हलफ उठाते हैं और जब पंचायतों में जाते हैं तो गंगाजल को हाथ में लेकर हलफ उठाते हैं ,लेकिन सच कभी नहीं बोलते। नेताओं का सच तो लाइ डिटेक्टर मशीन भी नहीं उगलवा पाती । हलफनामें केवल देने के लिए होते हैं और गंगाजल हलफ उठाने के लिए। अदालतों में पवित्र गीता के नाम पर हलफ उठाई जाती है। इसके पीछे भी यदि सरकार खोज कराये तो पाएगी कि किसी सनातनी का दिमाग होगा ,अन्यथा अदालतों में हलफ उठाने के लिए गीता के साथ ही रामायण,कुरान ,बाइबल और गुरु ग्रन्थ साहिब को भी सूची में शामिल न किया जाता।

वैश्विकी : संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन

डॉ. दिलीप चौबे

संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन की सदस्यता को लेकर रखा गया प्रस्ताव अमेरिका के वीटो के कारण पारित नहीं हो सका। प्रस्ताव के पक्ष में बारह मत पड़े और केवल अमेरिका ने इसके विरोध में वोट दिया। ब्रिटेन और स्विटजरलैंड ने मतदान में भाग नहीं लिया। जातीय एकजुटता के कारण ब्रिटेन अमेरिका का विरोध नहीं कर सकता लेकिन स्विटजरलैंड का रवैया विचारणीय है। स्विटजरलैंड आम तौर पर पूरी तरह तटस्थता का रवैया अपनाता रहा है, लेकिन फिलिस्तीन की सदस्यता पर उसका मौन रहना समझ से परे है। इससे यह पता लगता है कि यूक्रेन संघर्ष के बाद दुनिया में शांति की बजाय युद्ध की भावना बलवती हो रही है। अमेरिका के दबाव में जापान और स्कैंडिनेवियाई देशों स्वीडन और नाव्रे जैसे देशों ने भी संघर्ष और युद्ध की मनोवृत्ति को अपनी विदेश नीति का मानो हिस्सा बना लिया है।

करीब पैंतीस हजार लोगों की मौत और लाखों लोगों के घायल होने के बावजूद अमेरिका मानवीय रवैया अपनाने की बजाय इजराइल के युद्ध प्रयासों का समर्थन कर रहा है। दो राज्यों (इजराइल और फिलिस्तीन) की स्थापना के पक्ष में बयानबाजी करने

के बावजूद यह जाहिर है कि अमेरिका का सत्ता प्रतिष्ठान इजराइल की ही तरह स्वतंत्र फिलिस्तीन के पक्ष में नहीं है। राष्ट्रपति चुनाव के दौर में मतदाताओं के दबाव में बाइडन प्रशासन फिलिस्तीन में मानवीय संकट को लेकर बयानबाजी अवश्य कर रहा है, लेकिन कोई ठोस कदम उठाने में दिलचस्पी नहीं रखता। अमेरिका में फिलिस्तीन के पक्ष में युवा वर्ग और छात्र समुदाय सड़कों पर उतरा है। लेकिन सत्ता प्रतिष्ठान इसे लगातार नजरअंदाज करता रहा है।

कुछ विश्लेषक आरोप लगाते हैं कि अमेरिका में 'यहूदी लॉबी' हावी है। कोई भी राष्ट्रपति इस लॉबी का विरोध नहीं कर सकता। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू स्वतंत्र फिलिस्तीन राज्य के पूरी तरह खिलाफ हैं। निकट भविष्य में कभी फिलिस्तीन पूर्ण एवं स्वतंत्र राज्य बन सकेगा, इसकी संभावना नहीं है। इस बीच, पश्चिम एशिया में संघर्ष के इस मुख्य मुद्दे का समाधान हो सकेगा, इसकी संभावना अभी नहीं है।

ईरान और इजराइल के बीच संघर्ष ने पश्चिम एशिया के पूरे परिदृश्य को भयावह कर दिया है। चिंता की बात यह है कि अमेरिका में राजनीतिक नेतृत्व अब ईरान-रूस-चीन के शैतानी त्रिगुट की बात कर रहा है। इसमें उत्तर कोरिया को भी शामिल किया जा सकता है जिसके बाद यह शैतानी क्वाड बन जाएगा। एक क्षेत्रीय मुद्दा विश्व नेताओं की लापरवाही के कारण किस तरह विश्वव्यापी अशांति का कारण बन सकता है, इसका यह सटीक उदाहरण है। फिलहाल, ईरान और इजराइल के बीच अखाड़े में युद्ध का पहला राउंड खत्म हो गया है और दोनों पहलवान सुस्ताने की मुद्रा में हैं। पूरी संभावना है कि पूरे दम-खम के साथ वे फिर अखाड़े में उतरेंगे। विश्व समुदाय दर्शक गैलरी से तब तक तमाशा देखेगा जब तक कि यह भयावह खेल उनके लिए प्रत्यक्ष खतरा नहीं बनता।

हाल के महीनों में रूस ने इजराइल के खिलाफ तीखे तेवर अपनाए हैं। उसने इजराइल के विरुद्ध प्रतिबंध लगाने तक की मांग की है। वास्तव में रूस इजराइल से अधिक उसके पैरोकार अमेरिका को निशाना बना रहा है। भारत ने ईरान और इजराइल के संघर्ष में अपनी संतुलन की नीति को कायम रखा है। जिहादी आतंकवाद का सामना करने वाला भारत इजराइल का एक स्वाभाविक सहयोगी है, लेकिन साथ ही भारत ग्लोबल साउथ के अन्य देशों की तरह फिलिस्तीन का समर्थक भी है। ईरान के बारे में भी भारत इजराइल का साथ देने की स्थिति में नहीं है।

ईरान में इस्लामी क्रांति के बावजूद भारत और ईरान एक ही सभ्यागत भू-भाग के हिस्से हैं। सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से अरब देशों की तुलना में ईरान हमारे अधिक नजदीक है। साथ ही, मध्य एशिया और रूस तक संपर्क सुविधा के लिहाज से भी ईरान का केंद्रीय महत्त्व है। ईरान में चाबहार बंदरगाह का एक हिस्सा भारत संचालित करता है। अंतरराष्ट्रीय दक्षिण-उत्तर परिवहन गलियारा इसी बंदरगाह पर निर्भर है। अमेरिका यदि चाबहार बंदरगाह के संदर्भ में प्रतिबंध लगाता है, तो यह भारत के लिए बहुत चिंता की बात होगी।

पाकिस्तान में 21 सीटों पर उपचुनाव के लिए मतदान

इस्लामाबाद, । पाकिस्तान में कड़ी सुरक्षा के बीच नेशनल असेंबली और प्रांतीय असेंबली की कुल 21 सीटों पर उपचुनाव के लिए रविवार को मतदान किया गया। मतदान के दौरान पंजाब और बलूचिस्तान प्रांत के कुछ जिलों में मोबाइल और इंटरनेट सेवा वाधित रही है। इसके जानकारी दे रहे पाकिस्तान निर्वाचन आयोग ने बताया कि सुबह आठ बजे से शुरू हुआ मतदान शाम पांच बजे तक जारी रहा। मतदान की आधिकारिक समय अवधि खत्म होने के बाद जो मतदाता केंद्र में मौजूद रहे उन्हें वोट डालने की अनुमति दी जाएगी। यहां बतला दें कि पाकिस्तान में नेशनल असेंबली और चार प्रांतीय असेंबली के लिए 08 फरवरी को चुनाव संपन्न हुआ था। विभिन्न कारणों से नेशनल असेंबली की एक सीट और पंजाब असेंबली की दो और खैबर-पख्तूनख्वा असेंबली की एक सीट के लिए मतदान रद्द कर दिया गया था। इसके अलावा, जिन प्रत्याशियों ने एक से अधिक सीट जीत लीं थीं उनके एक सीट छोड़ने के कारण पाकिस्तान निर्वाचन आयोग को 21 सीट पर उपचुनाव कराना पड़ रहा है। इनमें नेशनल असेंबली की 05 और प्रांतीय असेंबली की 16 सीटें शामिल हैं। पाकिस्तान निर्वाचन आयोग ने सरकार से अनुरोध किया था कि उपचुनाव के दौरान पंजाब और बलूचिस्तान प्रांत के कुछ जिलों में मोबाइल फोन सेवाएं अस्थायी रूप से निलंबित कर दी जाएं, जिसके चलते सरकार ने चुनिंदा जिलों में इसे लागू कर दिया था। उपचुनाव के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने सेना के जवान और संबंधित अधिकारियों द्वारा कड़े सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं।

चिपचिपी खदान विस्फोट एक की मौत, तीन जख्मी

काबुल। पश्चिमी काबुल शहर में एक खदान में हुए विस्फोट से एक व्यक्ति की मौत हो गई वहीं तीन अन्य घायल हो गए हैं। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्थानीय मीडिया ने जादरान के हवाले से कहा कि पुलिस डिस्ट्रिक्ट-3 के कोट-ए-संगी इलाके में एक चिपचिपी खदान में विस्फोट हुआ जिसकी चपेट में एक कार आ गई जिसमें सवार लोगों में कार चालक की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। सभी घायल आम नागरिक हैं। पुलिस घटनास्थल पर पहुंच जांच शुरू कर दी है। घटना शनिवार की बताई जा रही है। अबतक किसी भी समूह या व्यक्ति ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

ताइवान में समुद्री क्षेत्र में आया भूकंप, जानमाल का नुकसान नहीं

ताइपे। ताइवान के हुलिएन काउंटी शहर में आज भूकंप के झटके लगे। भूकंप के कारण किसी भी तरह के नुकसान की खबर नहीं है। जानकारी के अनुसार ताइवान के हुलिसन काउंटी में सुबह 10:40 बजे समुद्री क्षेत्र में 5.0 तीव्रता वाले भूकंप के इटके महसूस किए गए। भूकंप की जानकारी चीन भूकंप नेटवर्क केंद्र ने दी। जानकारी में बताया गया है कि भूकंप का केंद्र 23.49 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 121.60 डिग्री पूर्वी देशांतर पर था और इसकी गहराई 20 किमी थी। भूकंप में अब तक किसी के हताहत होने या अन्य नुकसान की खबर नहीं है। ताइवान में लोगों को अलर्ट कर दिया गया है।

नाव डूबने से 58 लोगों की मौत, कई लापता, तलाश जारी

बांगुई। मध्य अफ्रीकी गणराज्य में नाव पलटने से 58 लोगों की मौत हो गई। नाव खचाखच भरी हुई थी और उसमें सवार लोग किसी के अंतिम संस्कार में जा रहे थे। यह दुर्घटना शुक्रवार को सीएआर की राजधानी बांगुई के पास मपोको नदी में हुई। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, 20 मीटर लंबी और तीन मीटर चौड़ी नाव में 300 से ज्यादा लोग सवार थे, जो ग्राम प्रधान के अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहे थे। नाव खचाखच भरी हुई थी। क्षमता से अधिक लोगों के नाव पर सवार होने से नाव अनियंत्रित होकर नदी में पलट गई जिसमें कम से कम 58 लोगों की मौत हो गई है। शनिवार को स्थानीय रेडियो स्टेशन गुइरा द्वारा जारी जानकारी से पता चला है कि अबतक 58 शवों को नदी से निकाला जा चुका है और अभी तक पानी में डूबे लोगों की संख्या का पता नहीं चल सका है। डूबे लोगों की तलाश की जा रही है।

जापान नेवी के दो हेलिकॉप्टर हुए दुर्घटनाग्रस्त, एक की मौत, 07 लापता

टोकियो। टोकियो के दक्षिण में प्रशांत महासागर में जापानी नौसेना के दो हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गए। इसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि 07 अन्य लोग लापता बताए गए हैं। इस घटना की जानकारी रक्षा मंत्रालय ने रविवार 21 अप्रैल को दी है। आशंका जाहिर करने वालों का कहना है कि शनिवार रात प्रशिक्षण के दौरान दोनों हेलीकॉप्टर एक दूसरे से टकरा गए होंगे। इन हेलीकॉप्टर में चालक दल के 08 सदस्य मौजूद थे। रक्षा मंत्री मिनोरू किहारा ने घटना की जानकारी देते हुए प्रेस को बताया कि समुद्री आत्मरक्षा बल (एमएसडीएफ) के दो एसएच-60 के हेलीकॉप्टर में चालक दल के चार-चार सदस्य मौजूद थे और शनिवार देर रात टोकियो से लगभग 600 किलोमीटर दक्षिण में तोरीशिमा द्वीप के पास उनसे संपर्क टूट गया। उन्होंने आगे बताया कि इस हादसे का कारण अभी साफ नहीं हो पाया है, लेकिन दोनों हेलीकॉप्टर संभवत- आपस में टकराने के बाद पानी में गिरे होंगे। उन्होंने कहा कि बचावकर्मियों ने एक उड़ान डेटा रिकॉर्डर के साथ ही दोनों ही हेलीकॉप्टर से एक ब्लेड और एक ही क्षेत्र में दोनों हेलीकॉप्टर के टुकड़े बरामद किए हैं, जो संकेत देते हैं कि दोनों एसएच-60 के एक-दूसरे के करीब उड़ रहे थे। अब अधिकारी डेटा एकत्र कर यह मालूम करेंगे कि दुर्घटना किन कारणों से हुई। उन्होंने बताया कि एमएसडीएफ ने चालक दल के लापता सदस्यों की तलाश और बचाव के लिए 08 युद्धपोत और 05 विमान तैनात किए हैं।

महिला ने जन्मदिन पार्टी मना रहे लोगों को कार से रौंदा, 2 की मौत

वाशिंगटन। अमेरिका के मिशिगन राज्य में कथित तौर पर नशे की हालत में कार चला रही एक महिला ने जन्मदिन पार्टी मना रहे लोगों को रौंद दिया, जिससे भाई-बहन की मौत हो गई जबकि 15 अन्य लोग घायल हो गए। जानकारी अनुसार इस घटना में हुए घायलों में से कई की हालत गंभीर बनी हुई है। मिशिगन के मोनरोए काउंटी शेरिफ ट्रॉय गुडनॉघ ने हादसे की जानकारी देते हुए मीडिया को बताया कि हादसे में एक 08 वर्षीय बच्ची और उसके 05 वर्षीय भाई की मौके पर ही मौत हो गई। उन्होंने बताया है कि करीब 66 वर्षीय एक महिला ने डेट्रॉयट से करीब 30 किमी दूर दक्षिण में स्थित बर्लिन टाउनशिप में दोपहर करीब 03 बजे एक इमारत में हो रही जन्मदिन पार्टी में कार घुसा दी। पुलिस ने उक्त कार चालक महिला की पहचान उजागर नहीं की, लेकिन उसे नशे की हालत में कार चलाकर लोगों की जान लेने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है।

काबुल में विस्फोट, एक की मौत, तीन लोग घायल

काबुल। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में शनिवार को एक 'स्टिकी बम' फटा, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि 03 लोग घायल हो गए। पुलिस अधिकारी ने जानकारी देते हुए कहा कि बम एक कार में लगाया गया था, जिस कारण कार चालक की मौत हुई है। यह घटना काबुल के शिया बहुल इलाके में होना बताया गया है। पुलिस सूत्र बता रहे कि बम एक कार में लगाया गया था, जिसमें विस्फोट होने से कार चालक की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की संक्षिप्त जानकारी देने वाले काबुल पुलिस के प्रवक्ता खालिद ज़दरान ने यह नहीं बताया कि घायाल तीन लोग क्या कार में सवार थे, या आस-पास ही खड़े थे। खालिद जदरान ने यह जरुर कहा कि पुलिस मौके पर पहुंच गई है, और मआयना कर रही है, लेकिन घटना की विस्तृत जानकारी उन्होंने मीडिया को नहीं दी। यहां बतला दें कि यह विस्फोट वाणिज्यिक और रिहायशी इलाके कोत-ए-संगी में शनिवार की शाम को हुआ था। विस्फोट की जानकारी किसी आंतकी संगठन या समूह ने नहीं ली है।

अमेरिका में टिक-टॉक पर प्रतिबंध वाले विधेयक को मंजूरी

वाशिंगटन। अमेरिकी कांग्रेस (संसद) के निचले सदन 'हाउस ऑफ रिप्रजेंटेटिव' ने टिक-टॉक पर प्रतिबंध लगाने वाले एक विधेयक को मंजूरी प्रदान कर दी है। इस विधेयक में प्रावधान है कि यदि चीनी नागरिक के स्वामित्व वाले लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म टिक-टॉक अपने अमेरिकी कारोबार को नहीं बेचता तो उस पर देश में प्रतिबंध लगाया जा सकता है।

गाजा में इजरायली हमले में बंधक बनाये गये लोगों को रिहा कराने में असफल रहने पर राष्ट्रपति बेंजामिन नेतनयाहू कर विरोध करते हुए लोग।

पहली बार दूध में मिला बर्ड फ्लू वायरस : डब्ल्यूएचओ

वाशिंगटन। पहली बार दूध में बर्ड फ्लू वायरस की पुष्टि हुई है। डब्ल्यूएचओ ने कहा कि एच 5एन1 बर्ड फ्लू वायरस स्ट्रेन संक्रमित जानवरों के कच्चे दूध में बहुत अधिक मात्रा में मिला है, हालांकि यह वायरस दूध में कितने समय तक जीवित रह सकता है। इस लेकर अभी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। एवियन इन्फ्लूएंजा (एच5एन1) पहली बार 1996 में उभरा लेकिन 2020 के बाद से संक्रमित स्तनधारियों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ पक्षियों में इसके प्रकोप की संख्या तेजी से बढ़ी है। इस कारण लाखों मुर्गे-मुर्गियों की मृत्यु हो गई है, साथ ही जंगली पक्षी और भूमि और समुद्री स्तनधारी भी संक्रमित हुए हैं। पिछले माह गायों और बकरियों में भी बर्ड फ्लू के लक्षण पाए गए थे। विशेषज्ञों के लिए एक आश्चर्यजनक प्रगति क्योंकि उन्हें इस प्रकार के इन्फ्लूएंजा के प्रति संवेदनशील नहीं माना जाता था। अमेरिकी अधिकारियों ने कहा था कि टेक्सास में एक डेयरी फार्म पर काम करने वाला एक व्यक्ति मवेशियों के संपर्क में आने के बाद बर्ड फ्लू से उबर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन में वैश्विक इन्फ्लूएंजा कार्यक्रम के प्रमुख वेनकिंग झांग ने कहा, टेक्सास में मामला गाय द्वारा एवियन इन्फ्लूएंजा से संक्रमित किसी मानव का पहला मामला है। झांग ने बताया, इन मौजूदा प्रकोपों के दौरान पक्षी से गाय, गाय से गाय और गाय से पक्षी में संचरण भी दर्ज किया गया है, जो बताता है कि वायरस ने संक्रमण के अन्य मार्ग ढूंढ लिए हैं, जितना हम पहले समझते थे। अमेरिका में बर्ड फ्लू के लिए किसी मानव के सकारात्मक परीक्षण का यह केवल दूसरा मामला था, और यह वायरस के झुंडों को बीमार करने के बाद आया था जो स्पष्ट रूप से जंगली पक्षियों के संपर्क में थे।

इजराइल के खिलाफ चल रहे अमेरिका पर भड़के इजराइली पीएम नेतन्याहू

तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइल और हमास के बीच चल रही जंग के दौरान इजराइली सेना पर मानवाधिकार उल्लंघन के आरोप लगते रहे हैं। अब अमेरिका ने इजराइल के प्रति नाराजगी जाहिर की है। खबर है कि अमेरिका वहां आम लोगों को निशाना बनाने के आरोप में इजराइली रक्षा बलों की एक यूनिट पर प्रतिबंधों की घोषणा कर सकती है। अगर ऐसा होता है तो किसी इजराइली सैन्य टुकड़ी के खिलाफ बाइडन प्रशासन की पहली कार्रवाई होगी। इजरायली सेना की इस टुकड़ी का नाम नेत्ज़ाह येहुदा बटालियन है। खबरों के मुताबिक लीही कानूनों के तहत, नेत्ज़ाह येहुदा सैनिक अमेरिकी सैनिकों के साथ प्रशिक्षण नहीं ले पाएंगे या अमेरिकी फंडिंग के साथ किसी भी गतिविधि में भाग नहीं ले पाएंगे। इन प्रतिबंधों से बटालियन को अमेरिकी हथियारों के हस्तांतरण पर भी रोक लग जाएगी।

अमेरिका के इस संभावित कदम से इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू खासे नाराज दिख रहे हैं। उन्होंने ऐसी कार्रवाई को 'बेतुकेपन की पराकाष्ठा और नैतिक निम्नता' करार दिया है। नेतन्याहू ने ट्वीट किया, 'इजरायल रक्षा बलों पर प्रतिबंध नहीं लगाए जाने चाहिए! हाल के हफ्तों में, मैं इजरायली नागरिकों पर प्रतिबंध लगाने के खिलाफ काम कर रहा हूं, जिसमें वरिष्ठ अमेरिकी सरकारी अधिकारियों के साथ मेरी बातचीत भी शामिल है।' उन्होंने कहा, 'ऐसे समय में जब हमारे सैनिक आतंक के राक्षसों से लड़ रहे हैं, आईडीएफ की एक इकाई पर प्रतिबंध लगाने का इरादा बेतुकापन और नैतिक पतन की पराकाष्ठा है। मेरे नेतृत्व वाली सरकार इन कदमों के खिलाफ हर तरह से कार्रवाई करेगी।'

बता दें कि नेत्ज़ाह येहुदा, बेहद कट्टर पैदल सैनिकों की टुकड़ी है। इसमें केवल ऐसे ही सैनिक शामिल होते हैं जो अपनी मान्यताओं से समझौता किए बिना स्वतंत्र रूप से फोर्स की सेवा कर सकते हैं। इन सैनिकों को महिला सैनिकों के साथ बातचीत करने की अनुमति नहीं है और उन्हें धार्मिक अध्ययन एवं प्रार्थना के लिए अतिरिक्त समय दिया जाता है। दिसंबर 2022 में इज़रायल ने इस यूनिट को वेस्ट बैंक से बाहर ट्रांसफर कर दिया था और तब से यह ज्यादातर देश के उत्तरी हिस्सों में सेवा दे रहा है। हालांकि, यहूदी राज्य ने उन रिपोर्टों का खंडन किया कि सैनिकों के आचरण के कारण बटालियन को स्थानांतरित कर दिया गया था। नेत्ज़ाह येहुदा दक्षिणपंथी उग्रवाद और फ़िलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ हिंसा को लेकर पिछले कई दिनों से विवादों में घिरी रही है। इसमें 78 साल के फ़िलिस्तीनी-अमेरिकी नागरिक उमर असद की मौत भी शामिल है, जिनकी बटालियन के सैनिकों द्वारा हिरासत में लिए जाने के बाद मौत हो गई थी। रिपोर्ट के अनुसार, उसके हाथों में हथकड़ी डालकर और आंखों पर पट्टी बांधकर कड़ाके की ठंड में बाहर छोड़ दिया गया था, जिससे उनकी मौत हो गई।

लंदन मेयर पद की दौड़ में दिल्ली के तरुण, पाकिस्तानी सादिक को देंगे चुनौती

-अलोकप्रिय नीतियों को खत्म करना तरुण का प्रमुख उद्देश्य

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के लंदन में मेयर का चुनाव होने वाले हैं। लंदन में मेयर पद पर पाकिस्तान मूल के सादिक खान तीसरी बार जीत चुके हैं। लेकिन इस उन्हें भारतीय मूल के तरुण गुलाटी चुनोती दे रहे हैं। गुलाटी इस चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव में उतरेंगे।

दो मई को होने वाले मेयर चुनाव में 63 वर्षीय भारतीय मूल के तरुण गुलाटी पाकिस्तान मूल के सादिक खान को चुनौती देने उतर रहे हैं। मेयर पद के लिए उनकी लड़ाई 13 अन्य उम्मीदवारों से होने वाली है। गुलाटी ने कहा कि वह लंदन को एक अनोखे वैश्विक शहर के तौर पर देखता हैं। यह विश्व के वैश्विक बैंक की तरह है, जहां दुनियाभर के लोग आते हैं। दिल्ली में जन्मे तरुण का कहना है कि लंदन के नागरिकों को सभी राजनीतिक पार्टियों ने दुखी किया है। वह लंदन को अनुभवी सीईओ की तरह चलाना चाहते हैं, जिससे सभी को लाभ मिल सके।

उन्होंने आगे कहा कि मेयर के तौर पर मैं लंदन की बैलेंस शीट इस तरह से तैयार करूंगा कि यह निवेश के लिए विकल्प बन सके और सभी नागरिकों की सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित हो। लंदन को प्रभावी ढंग से बदलूंगा। इस यात्रा में आप सभी शामिल होंगे। लंदन की सड़कों में सुरक्षा उनके मुख्य एजेंडा में प्रमुख है।

लंदन में लेबर पार्टी के मौजूदा नेता सदिक खान की कुछ अलोकप्रिय नीतियों को खत्म करना भी तरुण का प्रमुख उद्देश्य है। तरुण गुलाटी ने कहा, हम यूएलईजेड, एलटीएन जैसी खराब नीतियां नहीं चाहते हैं। जलवायु परिवर्तन हो रहा है और हमें इसके प्रभावों को कम करने की जरूरत है। हमें जो भी परिवर्तन करना होगा, वह जनता की राय लेकर ही करेंगे। तरुण ने मेयर पद के लिए कंजर्वेटिव पार्टी के उम्मीदवार सुजैन हॉल पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कई वर्षों तक लंदन असेंबली के सदस्य होने के बावजूद वह इन नीतियों को रोकने में नाकाम रही हैं। उन्होंने कहा कि अगर राजनीतिक उम्मीदवार वह करते जो उन्हें करना चाहिए था, तो मैं मेयर पद की दौड़ में कभी शामिल नहीं होता। तरुण किफायती आवासीय व्यवस्था, पर्यटन को बढ़ावा देना, मुफ्त स्कूल भोजन सुनिश्चित करना और काउंसिल टैक्स को कम करने जैसे मुद्दों पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

अमेरिका ने चीन की तीन और बेलारूस की एक कंपनी पर लगाया प्रतिबंध

- पाकिस्तान को बैलिस्टिक मिसाइल प्रोग्राम के लिए उपकरणों की सप्लाई करने का आरोप

इस्लामाबाद (एजेंसी)। चीन की तीन और बेलारूस की एक कंपनी को पाकिस्तान की गुपचुप मदद करना भारी पड़ा है। अमेरिका ने पाकिस्तान को लंबी दूरी की मिसाइल सहित बैलिस्टिक मिसाइल प्रोग्राम के लिए उपकरणों की सप्लाई करने के आरोप में इन पर प्रतिबंध लगा दिया है। चीन, पाकिस्तान का सदाबहार दोस्त है, वह पाकिस्तान के महत्वाकांक्षी सैन्य आधुनिकीकरण कार्यक्रम के लिए हथियारों और रक्षा उपकरणों का मुख्य सप्लायर रहा है। अमेरिका ने चीन की जिन तीन कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया है, उनमें शियान लॉन्गडे टेक्नोलॉजी डेवलेपमेंट, तियानजिन क्रिएटिव सोर्स इंटरनेशनल ट्रेड और ग्रानपेक्ट कंपनी लिमिटेड शामिल है, जबकि बेलारूस के मिंस्क व्हील ट्रैक्टर प्लांट पर प्रतिबंध लगाया गया है। अमेरिका के विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा कि ये कंपनियां ऐसी गतिविधियों या लेन-देन में लिप्त पाई गई हैं, जिन्होंने सामूहिक विनाश के हथियारों या उनके वितरण के साधनों के प्रसार में भौतिक रूप से योगदान दिया है या जोखिम पैदा किया है, जिसमें पाकिस्तान द्वारा निर्माण, अधिग्रहण, स्वामित्व, विकास, परिवहन में सहयोग शामिल हैं। अमेरिका के कदम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पाकिस्तान के विदेश कार्यालय की प्रवक्ता मुमताज जहरा बलोच ने कहा कि हम निर्यात नियंत्रण के राजनीतिक उपयोग को अस्वीकार करते हैं। बलोच ने कहा कि यह सर्वविदित है कि उन्हीं न्यायाधिकार क्षेत्रों ने, जो परमाणु अप्रसार नियंत्रणों का कड़ाई से पालन करने का दावा करते हैं, कुछ देशों के लिए उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकियों के लिए लाइसेंसिंग आवश्यकताओं को माफ कर दिया है। वह स्पष्ट रूप से अमेरिका द्वारा भारत जैसे देशों को अत्याधुनिक हथियारों के निर्यात की अनुमति देने का जिक्र कर रही थीं। बलोच ने इस्लामाबाद में कहा कि इस तरह के भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण और दोहरे मानदंड सैन्य विषमताओं को बढ़ाकर परमाणु अप्रसार प्रशासन की विश्वसनीयता और क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और सुरक्षा के उद्देश्यों को कमतर कर रहे हैं।

रूस तालिबान को आतंकवादी संगठनों की सूची से हटाने पर कर रहा है विचार

न्यू कैसल (ब्रिटेन) (एजेंसी)। । अधिकारियों ने संकेत दिया है कि रूस फिलहाल तालिबान को आतंकवादी संगठनों की सूची से हटाने पर विचार कर रहा है। इस संबंध में हालांकि अभी तक कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है, लेकिन उनके बढ़ते सौहार्दपूर्ण संबंधों का एक संकेत मई में रूस के कजान शहर में आयोजित होने वाले एक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मंच के लिए तालिबान का निमंत्रण है। रूस के राष्ट्रपति कार्यालय क्रेमलिन ने पहले भी तालिबान के साथ चर्चा शुरू की है, और जब संगठन ने अफगानिस्तान पर नियंत्रण किया तो रूस एक राजनयिक को मान्यता देने वाले कुछ देशों में से एक था।

अफगानिस्तान के राजनीतिक एवं आर्थिक संकट और यूक्रेन युद्ध के कारण रूस पर पश्चिमी प्रतिबंधों का मतलब है कि दोनों पक्षों को मजबूत रिश्ते से कुछ हासिल करना होगा। वर्ष 1999 में, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने प्रस्ताव 1267 को अपनाया था। कुछ महीने बाद, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव को लागू करने और तालिबान के खिलाफ प्रतिबंध लगाने संबंधी एक डिक्री पर हस्ताक्षर किए। रूस के उच्चतम न्यायालय ने 2003 में तालिबान को आतंकवादी संगठन घोषित करते हुए कहा कि इसने

चेचन्या में अवैध सशस्त्र बलों के साथ संबंध बनाए रखे और उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान तथा किर्गिस्तान में सत्ता पर कब्जा करने की कोशिश की।

रूस ने खुद को एक शांति दूत के रूप में पेश करने प्रयास के रूप में अफगानिस्तान सरकार और तालिबान के बीच बातचीत के लिए 2017 में एक क्षेत्रीय पहल शुरू की। इन वार्ताओं का उद्देश्य अफगानिस्तान संकट का समाधान निकालना था। अफगानिस्तान पर कब्जा करने के बाद से, किसी भी देश ने तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दी है। तालिबान चाहता है कि अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध वापस लिए जाएं और जब्त की गई संपत्तियों को मुक्त किया जाए ताकि देश के आर्थिक विकास में मदद मिल सके।

यदि अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध वापस ले लिए जाते हैं, तो अफगानिस्तान को महत्वपूर्ण लापीस-लाजुली व्यापार गलियारे के विकास से आर्थिक रूप से लाभ होना चाहिए जो अफगानिस्तान को इस्तांबुल और यूरोप और उज्बेकिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान रेलवे लाइन से जोड़ता है। रूस द्वारा तालिबान को अपनी आतंकवाद सूची से हटाना वर्तमान अफगानिस्तान सरकार के लिए अंतरराष्ट्रीय मान्यता की दिशा में पहला कदम होगा। तालिबान के साथ सहयोग से रूस को भी लाभ होता है।

इसका लक्ष्य खुद को क्षेत्र के सुरक्षा प्रदाता के रूप में पेश करना है। क्षेत्र की स्थिरता, मादक पदार्थों की तस्करी और इस्लामी आतंकवाद के खतरों के बारे में भी चिंताएं है, खासकर मॉस्को के क्रोकस सिटी हॉल पर हाल में आईएसआईएस-के हमले के बाद। क्षेत्र में अपनी भू-आर्थिक और भू-राजनीतिक मौजूदगी बढ़ाने के लिए, रूस पहले से बनाए गए गठबंधनों का इस्तेमाल कर सकता है। तालिबान और रूस के बीच बढ़ते सहयोग का रूस और पश्चिम के बीच चल रही प्रतिद्वंद्विता के संदर्भ में निहितार्थ है। यूक्रेन युद्ध की शुरुआत के बाद से, रूस ने अन्य देशों को अपने इस रणनीतिक दृष्टिकोण को समझाने का प्रयास किया है कि युद्ध क्यों हो रहा है।

जापानी नौसेना के दो हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त, एक की मौत, सात लापता

बीजिंग । जापानी नौसेना के दो हेलीकॉप्टर के तोक्यो के दक्षिण में प्रशांत महासागर में दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि सात अन्य लोग अभी लापता है। ऐसी संभावना जताई जा रही है कि शनिवार रात प्रशिक्षण के दौरान दोनों हेलीकॉप्टर एक दूसरे से टकरा गए। इन हेलीकॉप्टर में चालक दल के आठ सदस्य थे। रक्षा मंत्री मिनोरू किहारा ने संवाददाताओं को बताया कि समुद्री आत्मरक्षा बल (एमएसडीएफ) के दो एसएच-60के हेलीकॉप्टर में चालक दल के चार-चार सदस्य सवार थे और शनिवार देर रात तोक्यो से लगभग 600 किलोमीटर दक्षिण में तोरीशिमा द्वीप के पास उनसे संपर्क टूट गया। किहारा ने बताया कि इस हादसे का कारण अभी पता नहीं चला है लेकिन दोनों हेलीकॉप्टर संभवत- आपस में टकराने के बाद पानी में गिरे। उन्होंने कहा कि बचावकर्मियों ने एक उड़ान डेटा रिकॉर्डर, प्रत्येक हेलीकॉप्टर से एक ब्लेड और एक ही क्षेत्र में दोनों हेलीकॉप्टर के टुकड़े बरामद किए हैं, जो संकेत देते हैं कि दोनों एसएच-60के एक-दूसरे के करीब उड़ रहे थे। अधिकारी यह पता लगाने के लिए उड़ान संबंधी डेटा का विश्लेषण करेंगे कि दुर्घटना का कारण क्या था।

इजरायल और ईरान की जंग बनेगी तीसरे विश्वयुद्ध का कारण : बाबा वेंगा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। बुल्गारिया के नास्त्रेदमस कहे जाने वाले बाबा वेंगा की ज्यादातर भविष्यवाणियां सच हुई हैं। उन्होंने यूक्रेन में चेरनोबिल आपदा, राजकुमारी डायना की मृत्यु, न्यूयॉर्क में 9/11 अटैक और यहां तक कि अपनी मौत के बारे में भी बिल्कुल सटीक भविष्यवाणी की थी, जो बिल्कुल सच साबित हुई थी। 2024 के लिए उनकी भविष्यवाणी में कहा गया है कि ईरान के साथ तनाव में ब्रिटेन और अमेरिका सहित सभी पश्चिमी देशों के इजरायल के समर्थन में खड़े होने की संभावना है। ईरान रूस का समर्थन करता है और पुतिन यूक्रेन को खत्म करने के लिए स्थिति का फायदा उठाने की कोशिश करेंगे। अगर ऐसा हुआ तो परमाणु युद्ध की ओर हालात बढ़ सकते हैं। अगर रूस ने जंग शुरू की तो अमेरिका और पश्चिमी देश चुप नहीं बैठेंगे। ईरान को सजा देने के लिए इजरायल को ताकत देंगे। उसे हथियार, गोला-बारूद मुहैया कराएंगे। क्योंकि उनका तो एक ही सपना है, हम पुतिन को यूक्रेन में जीतने नहीं दे सकते, हम ईरान को इजरायल को नष्ट करने नहीं दे सकते। हम जितना मजबूत होंगे, हम उतने ही सुरक्षित रहेंगे। सबसे ज्यादा डराने वाली भविष्यवाणी उन्होंने 2024 के लिए की थी, जिसमें तृतीय विश्व युद्ध की चेतावनी दी गई थी। बाबा वेंगा ने कहा था कि 2024 में आतंकी घटनाओं की लहर सी आएगी। एक प्रमुख देश जैविक हथियारों का टेस्ट भी कर सकता है। इसके सबूत भी मिलने लगे हैं। क्योंकि रूस में भयानक आतंकी हमला हुआ। एक्सपर्ट उनकी उस भविष्यवाणी को ज्यादा डराने वाली बता रहे हैं, जिसमें विश्वयुद्ध की बात कही गई है। बकिंघम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एंथनी ग्लीज ने कहा, ईरान-इजरायल के बीच तनाव ने इस आशंका को और बढ़ा दिया है। दुनिया की शांति एक धागे पर लटकी हुई है। यह धागा कभी भी टूट सकता है। ग्लीज ले कहा, ईरान के साथ रूस के घनिष्ठ संबंध हैं। इसलिए उसे इस जंग में घसीटा जा सकता है। क्योंकि ईरान रूस को मिसाइल और लड़ाकू जेट सहित यूक्रेन में इस्तेमाल होने वाले कई हथियार मुहैया करा रहा है। यह पश्चिमी देशों को पसंद नहीं आ रहा है। वे किसी भी तरह रूस को रोकना चाहते हैं। उसे फंसाना चाहते हैं।

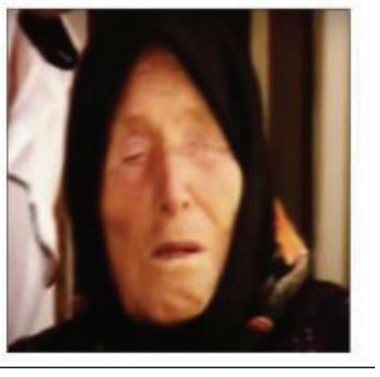

आईपीएल में आज होगा राजस्थान रॉयल्स और मुंबई इंडियंस में मुकाबला

जयपुर (एजेंसी)। कप्तान संजू सैमसन की राजस्थान रॉयल्स की टीम आईपीएल में सोमवार को मुंबई इंडियंस से खेलेगी। इस मैच में नंबर एक स्थान पर चल रही राजस्थान का पलड़ा भारी है क्योंकि उसे अपने घरेलू मैदान का भी लाभ होगा। टीम ने अब तक 7 मैचों में 6 मैच जीते हैं और वह अंक तालिका में नंबर एक स्थान पर है। टीम का प्लेऑफ में पहुंचना तय है। वहीं दूसरी ओर हार्दिक पंड्या की कप्तानी में मुंबई इंडियंस का प्रदर्शन अब तक उम्मीद के अनुरुप नहीं रहा है। मुम्बई की टीम ने अब तक 3 मुकाबले ही जीते हैं। 3 जीत हासिल की है।

यह इस सत्र का आखिरी मुकाबला होगा। अभी तक यहां की पिच बल्लेबाजी के लिए अच्छी रही है। इसमें किसी भी मैच में 200 का स्कोर नहीं बना। यहां 197 का लक्ष्य भी हासिल हो चुका है। ऐसे में पिच एक बार फिर बल्लेबाजी के लिए आसान होने वाली है। यही वजह है कि 200 रन बनने पर किसी को हैरानी नहीं होनी चाहिए। पहले गेंदबाजी यहां लाभदायक होगी।

जयपुर में तेज गरमी से खिलाड़ियों के लिए खेलना आसान नहीं रहेगा। इस मैच में राजस्थान की बल्लेबाजी सैमसन के अलावा पराग , जोस बटलर और यशस्वी जायसवाल पर आधारित रहेंगी। टीम के पास ट्रेंट बोल्ट, युजवेंद्र चहल जैसे गेंदबाज हैं।

मुंबई की बल्लेबाजी पंड्या के अलावा रोहित शर्मा और सूर्यकुमार पर आधारित रहेगी जबकि गेंदबाजी की कमान जसप्रीत बुमराह के पास रहेगी।

टीम

राजस्थान रॉयल्स- संजू सैमसन (कप्तान), जोस बटलर, शिमरोन हेटमायर, यशस्वी जायसवाल, ध्रुव जुरेल, रियान पराग, डोनोवन फरेरा, कुणाल राठौड़, रविचंद्रन अश्विन, कुलदीप सेन, नवदीप सैनी, संदीप शर्मा, ट्रेंट बोल्ट, युजवेंद्र चहल, आवेश खान , रोवमैन पॉवेल, शुभम दुबे, टॉम कोहलर-कैडमोर, आबिद मुश्ताक, नांद्रे बर्गर, तनुष कोटियन और केशव महाराज।

मुंबई इंडियंस- हार्दिक पंड्या (कप्तान), रोहित शर्मा, सूर्यकुमार यादव, डेवाल्ड ब्रेविस, जसप्रीत बुमराह, पीयूष चावला, गेराल्ड कोएट्जी, टिम डेविड, श्रेयस गोपाल, इशान किशन, अंशुल कंबोज, कुमार कार्तिकेय, आकाश मधवाल, क्वेना मफाका, मोहम्मद नबी, शम्स मुलानी, नमन धीर, शिवालिक शर्मा, रोमारियो शेफर्ड, अर्जुन तेंदुलकर, नुवान तुषारा, तिलक वर्मा, हार्विक देसाई, नेहल वढेरा, ल्यूक वुड।

30 की उम्र में मुगुरुजा ने टेनिस को अलविदा कहा

मैड्रिड (एजेंसी)। स्पेन की महिला टेनिस स्टार गार्बाइन मुगुरुजा ने खेल को अलविदा कह दिया है। 30 साल की मुगुरुजा पिछले काफी समय से खेल से दूर थीं। इसी कारण उन्होंने अचानक ही ये कदम उठाया है। वह दो बार मेजर चैम्पियनशिप जीती हैं। 2015 विम्बलडन के अलावा वह 2020 ऑस्ट्रेलियाई ओपन में उप विजेता रही थीं।वह जनवरी 2023 के बाद से खेल से बाहर हैं इसी कारण इस खिलाड़ी की लय भी पहले वाली नहीं रही। इस पूर्व नंबर एक खिलाड़ी ने कहा कि मुझे लगता है कि अब संन्यास लेने और नई राह पकड़ने का समय आ गया है।

मुगुरुजा ने साल 2016 फ्रेंच ओपन फाइनल में सेरेना विलियम्स और साल 2017 विम्बलडन फाइनल में वीनस विलियम्स को हराया था। वह एकमात्र खिलाड़ी हैं जो दोनों विलियम्स बहनों को हराने में सफल हुई हैं। उन्होंने अपनी करियर में 10 खिताब रहे हैं। मुगुरुजा महिला टेनिस स्पेन की शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी रही हैं। उन्हें साथ खिलाड़ियों ने भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

टी20 विश्वकप के लिए भारतीय टीम की घोषणा शीघ्र करेगा बीसीसीआई

-27 या 28 अप्रैल को कप्तान रोहित शर्मा के साथ बैठक करेंगे चयनकर्ता

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीसीआई) 2 से 29 जून तक वेस्टइंडीज और अमेरिका में होने वाले आगामी टी20 विश्व कप के लिए शीघ्र ही टीम की घोषणा करेगा। बीसीसीआई को टी20 विश्वकप के लिए आईसीसी को खिलाड़ियों की सूची एक मई तक देनी है। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार इसके लिए चयनकर्ता 27 या 28 अप्रैल को दिल्ली में कप्तान रोहित शर्मा के साथ बैठक कर सकते हैं.

बीसीसीआई प्रमुख अजीत अगरकर भी विदेश से लौट गये हैं। टीम चयन को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। इस रिपोर्ट के अनुसार टीम में 10 खिलाड़ियों का चयन पक्का है, वहीं कुछ खिलाड़ियों पर फैसला उनकी फिटनेस पर आधारित रहेगा। टीम में शामिल दस खिलाड़ियों में ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या शामिल नहीं हैं। पंड्या को गेंदबाजी किये जाने की स्थिति में ही शामिल किया जाएगा। आईपीएल सत्र में अब तक पंड्या अधिक गेंदबाजी नहीं कर पाये हैं। टीम इस प्रकार होने की संभावना है।

रोहित शर्मा (कप्तान), विराट कोहली, ऋषभ पंत, सूर्यकुमार यादव, जसप्रीत बुमराह, रवींद्र जडेजा, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद सिराज और कुलदीप यादव आदि, वहीं पंड्या की टी20 विश्व कप में जगह आईपीएल में उनके प्रदर्शन पर आधारित रहेगी। चयनकर्ता हार्दिक के प्रदर्शन पर नजरें रखें हुए हैं। आईपीएल के इस सत्र में अभी तक वह विफल रहे हैं। भारतीय टीम टी20 विश्व कप 2024 में अपने अभियान की शुरुआत 5 जून को आयरलैंड के खिलाफ करेगी।

बेंगलुरु की लगातार छठी हार, रोमांचक मुकाबले में कोलकाता ने एक रन से हराया

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता नाइट राइडर्स ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ आईपीएल 2024 के 36वें मैच में एक रन से जीत दर्ज की है। इसी के साथ ही अब आरसीबी की प्लेऑफ की उम्मीदें भी खत्म होती आ रही हैं क्योंकि यह उनकी छठी हार थी। फिल सॉल्ट की आक्रामक शुरुआत के बाद कप्तान श्रेयस अय्यर की अर्धशतकीय पारी से कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने इंडियन प्रीमियर लीग टी20 मैच में रविवार को यहां रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ छह विकेट पर 222 रन का बड़ा स्कोर खड़ा किया। इसके जवाब में शानदार बल्लेबाजी के बावजूद विल जैक्स (55) और रजत पाटीदार (52) के अर्धशतकों के बावजूद टीम को हार का सामना करना पड़ा।

पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद सॉल्ट और सुनील नारायण (10) ने एक बार फिर टीम को तूफानी शुरुआत दिलाते हुए चार ओवर में 55 रन जोड़ दिये। इस दौरान सॉल्ट ज्यादा आक्रामक दिखे। उन्होंने पहले ओवर में सिराज का छक्के से स्वागत करने के बाद चौथे ओवर में फर्ग्यूसन के खिलाफ दो छक्के और चार चौके की मदद से 28 रन बटोरे। सिराज ने पांचवें ओवर में हालांकि उनकी आतिशी पारी को खत्म कर टीम को बड़ी सफलता दिलाई। अगले ओवर में नारायण दयाल की गेंद को हवा में लहराकर विराट कोहली को कैच दे बैठे।

वेंकटेश अय्यर ने क्रीज पर आते ही दो चौके जड़े लेकिन दयाल ने अंगकृष रघुवंशी को आउट कर ओवर में दूसरी सफलता दर्ज की। पावर प्ले के बाद केकेआर का स्कोर तीन विकेट पर 75 रन था। कप्तान श्रेयस अय्यर ने फर्ग्यूसन और कर्ण शर्मा पर चौके के साथ हाथ खोला तो वहीं नौवें ओवर में गेंदबाजी के लिए आये ग्रीन की शॉट गेंद को वेंकटेश लांग लेग की दिशा में खड़े महिपाल लोमरोर के हाथों में खेल गये। इसी ओवर में रिंकू सिंह के चौके से केकेआर ने रनों का शतक पूरा किया। श्रेयस के साथ कुछ ओवरों तक संभल कर बल्लेबाजी करने के बाद रिंकू ने कर्ण की गेंद को दर्शकों के पास भेजा लेकिन वह दयाल की धीमी गेंद से सामंजस्य नहीं बिठा सके और 16 गेंद में 24 रन बनाकर आउट हो गए।

श्रेयस ने इसी बीच कर्ण के खिलाफ स्विच हिट पर शानदार चौका जड़ने के बाद 17वें ओवर में दयाल के खिलाफ छक्का और चौका लगाकर 35 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया। वह एक और बड़ा शॉट खेलने की कोशिश में ग्रीन की गेंद पर डुप्लेसी को कैच थमा बैठे। रसेल ने ओवर का समापन चौके से किया तो वहीं रमनदीप ने 19वें ओवर में सिराज के खिलाफ लगातार दो छक्के और चौका लगाकर केकेआर के स्कोर को 200 के पार पहुंचा दिया।

नौकायन में बलराज को मिला पेरिस ओलंपिक टिकट

चुंगजू । भारत के बलराज पंवार ने एशियाई और ओसनियाई रोइंग ओलंपिक क्वालिफिकेशन रेगाटा में पुरुष एकल स्कल्स (एम1एक्स) स्पर्धा में कांस्य पदक जीता है। इस जीत के साथ ही बलराज ने ओलंपिक टिकट भी हासिल कर लिया है। वह नौकायन से ओलंपिक टिकट हासिल करने वाले पहले खिलाड़ी हैं। बलराज ने दक्षिण कोरिया के चुंगजू में आयोजित स्पर्धा में हीट में 7:17.87 और सेमीफाइनल में 7:16.29 का समय निकालकर फाइनल में जगह बनायी। बलराज इस स्पर्धा में 7:01.27 का समय निकालकर तीसरे स्थान पर रहे। वहीं कजाकिस्तान के व्लादिस्लाव याकोवलेव ने 6:59.46 का समय निकालकर स्वर्ण जबकि इंडोनेशिया के मेमो ने 6:59.74 का समय निकालकर रजत पदक अपने नाम किया। इसके अलावा अरविंद सिंह और उज्जवल कुमार ने भी पुरुषों की लाइटवेट डबल स्कल्स (एलएम2एक्स) में कांस्य पदक हासिल किया। इस स्पर्धा में केवल शीर्ष दो खिलाड़ियों को ही पेरिस ओलंपिक के लिए टिकट मिला। अरविंद और अर्जुन लाल ने फाइनल रेस में 6:30.11 का समय निकलकर पहले रेपेचेज के जरिए फाइनल में स्थान बनाया।

एसएमएस स्टेडियम में हार्दिक पांड्या बने कैमरामैन

यशस्वी ने की बड़े शॉट मारने की प्रैक्टिस, सूर्यकुमार और संजू सेमसन की दोस्ती दिखी

जयपुर। जयपुर के सवाईमानसिंह स्टेडियम में सोमवार को राजस्थान रॉयल्स और मुंबई इंडियंस के बीच मुकाबला होगा। दोनों टीम जयपुर पहुंच चुकी हैं। मैच से पहले दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने शनिवार को सवाईमानसिंह स्टेडियम में जमकर नेट प्रैक्टिस की। इस दौरान मुंबई के कप्तान हार्दिक पांड्या कैमरामैन बनकर सभी की फोटो खींचते दिखे। सूर्यकुमार यादव और संजू सेमसन की दोस्ती भी नजर आई। इस दौरान स्टेडियम में आम लोगों की आवाजाही पूरी तरह बंद रही।

बड़े हिट मारने की प्रैक्टिस की

प्रैक्टिस सेशन के दौरान राजस्थान टीम के बैट्समैन बड़े हिट मारने की कोशिश करते हुए नजर आए। राजस्थान टीम के ओपनिंग बैट्समैन यशस्वी जयसवाल ने रविचंद्रन अश्विन की गेंद पर लगातार 3 बार बाउंड्री हिट की। वहीं, बल्लेबाज रोवमन पावेल लगातार सिक्स मारने की प्रैक्टिस करते हुए नजर आए। जयपुर पहुंचे मुंबई इंडियंस के खिलाड़ियों का राजस्थान रॉयल्स के खिलाड़ियों ने मैदान पर स्वागत किया। राजस्थान रॉयल्स के ऑलराउंडर खिलाड़ी शिमरोन हेटमायर ने मुंबई के सूर्यकुमार यादव को गले लगाकर कहा- स्वागत है। वहीं, राजस्थान के जोस बटलर और मुंबई के पोलार्ड एक दूसरे के साथ बल्लेबाजी की टिप्स साझा करते हुए नजर आए। जिन्हें देख मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या ने फोटो खींची।

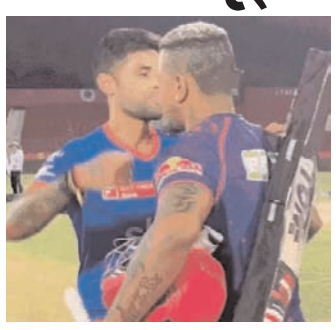

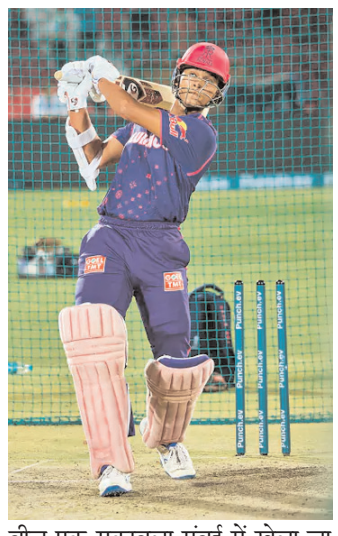

बीच एक मुकाबला मुंबई में खेला जा चुका है। इसमें राजस्थान रॉयल्स ने शानदार जीत हासिल की थी। वहीं, इस लीग में अब तक दोनों ही टीमें सात-सात मैच खेल चुकी हैं। इसमें से राजस्थान रॉयल्स की टीम 6 मैच जीत कर पॉइंट टेबल में नंबर वन पर है। वहीं, मुंबई इंडियंस की टीम सात में से महज तीन मैच जीत कर सातवें नंबर पर है।

पॉइंट टेबल में टॉप पर है राजस्थान की टीम

बता दें कि इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन में अब तक मुंबई इंडियंस और राजस्थान रॉयल्स के

आईपीएल में 300 रन भी बनने हुए दिखें तो कोई हैरानी नहीं होनी चाहिये : कार्तिक

कोलकाता । अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक ने कहा है कि जिस प्रकार से सनराइजर्स हैदराबाद के साथ ही कुछ अन्य टीमों के बल्लेबाज आक्रामक बल्लेबाजी कर रहे हैं। उससे आने वाले दिनों में 300 रन भी बनने हुए दिखें तो कोई हैरानी नहीं होनी चाहिये। कार्तिक के अनुसार अब बल्लेबाजों के मन में गेंदबाजों का डर नहीं रहा है। आईपीएल का सबसे बड़ा स्कोर सनराइजर्स हैदराबाद ने इस सत्र में 287 रनों का बनाया है। ये उसने रॉयल चैलेंजर्स बेगलुरु के खिलाफ तीन विकेट पर ही बना दिया था। वहीं टी20 में 300 रन केवल एक बार ही नेपाल ने पिछले साल हांग्झोउ एशियाई खेलों में मंगोलिया के खिलाफ तीन विकेट पर 314 रन बनाये थे। कार्तिक ने कहा, ''मुझे लगता है कि स्कोर लगातार बढ़ता ही जा रहा है। यह बहुत ऊपर आता जा रहा है। वहीं दुनिया भर में इस प्रारूप में खेले जा रहे टूर्नामेंट के इतिहास में आईपीएल के पहले 32 मैच में सबसे ज्यादा 250 रन बने हैं। इससे पता चलता है कि बल्लेबाजा अब गेंदबाजों से डर नहीं रहे हैं। साथ ही कहा कि 'इम्पैक्ट' खिलाड़ी नियम के कारण भी टीम की बल्लेबाजी आक्रामक हुई है। इस नियम से बल्लेबाजी में लाभ हो रहा है लेकिन गेंदबाजों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। युवा खिलाड़ी शॉट खेलने के लिए सीमाएं लांघ रहें और वे कुछ शानदार शॉट्स खेल रहे हैं। टूर्नामेंट की शुरुआत के बाद से ही ये सबसे बड़ा बदलाव आया है।

पाक ने न्यूजीलैंड को दूसरे टी20 में हराया, सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल की

लाहौर। बाबर आजम की कप्तानी में उतरी पाकिस्तान क्रिकेट टीम ने न्यूजीलैंड को दूसरे टी20 मैच में हराकर पांच मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। पाक टीम ने सीरीज के दूसरे टी20 मैच में मेहमान टीम न्यूजीलैंड को 90 रनों पर ही आउट कर आसानी से जीत हासिल की। पाकिस्तान ने कीवी टीम को 90 पर आउट करने के बाद जीत का लक्ष्य 12.1 ओवर में 3 विकेट पह ही हासिल कर लिया। सीरीज का पहला टी20 मैच बारिश के कारण नहीं हो पाया था। दूसरे टी20 मैच में तेज गेंदबाज शाहीन अफरीदी और मोहम्मद आमिर के बाद शादाब खान और अबरार अहमद ने जबरदस्त गेंदबाजी की। इस मैच में लक्ष्य का पीछा करते हुए पाक टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही। युवा सलामी बल्लेबाज सैम अयूब 4 रन बनाकर ही आउट हो गये। इसके बाद कप्तान बाबर आजम भी विफल रहे। बाबर 14 रन ही बना पाये। इसके बाद मोहम्मद रिजवान और युवा इरफान खान ने अच्छी साझेदार कर अपनी टीम को जीत दिलायी। रिजवान ने 34 गेंदों पर नाबाद 45 रन बनाए जबकि इरफान खान 18 रन नाबाद रहे। वहीं कीवी टीम की ओर से बेन लिस्टर, माइकल ब्रेसवेल और ईश सोढ़ी ने एक एक खिलाड़ी को आउट किया। इस मैच में पाक ने टॉस जीतकर न्यूजीलैंड को पहले बल्लेबाजी के लिए बुलाया। मेहमान टीम 18.1 ओवर में ही 90 रनों पर ही आउट हो गयी। मार्क चैपमैन ने सबसे ज्यादा 19 रन बनाये जबकि कोले मैककोंची ने 13 रन बनाए। न्यूजीलैंड की शुरआत अच्छी नहीं रही। सलामी बल्लेबाज ओपनर टिम सेइफर्ट शुरआत में ही पेवेलियन लौट गये। इसके बाद उसके विकेट एक के बाद एक गिरते चले गये।

शमी ने वीडियो जारी कर कहा, उन्हें जल्द टीम में वापसी की उम्मीद

नई दिल्ली । अनुभवी भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने टखने की सर्जरी के बाद अपनी रिहैबिलिटेशन प्रक्रिया का वीडियो साझा कर जल्द ही मैदान पर वापसी की उम्मीद जाहिर की। शमी ने दर्द के बावजूद पिछले साल वनडे विश्व कप में भाग लिया था। वह 24 विकेट चटकाकर टूर्नामेंट के सबसे सफल गेंदबाज साबित हुए।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व कप फाइनल मैच के बाद से चोट के कारण शमी खेल से दूर है। उन्हें इस साल फरवरी में सर्जरी करानी पड़ी। शमी ने वीडियो साझा करते हुए लिखा, '' चोट आपको परिभाषित नहीं करतीं, आपकी वापसी आपको परिभाषित करती है। मैं अपनी टीम के साथ जुड़ने का इंतजार कर रहा हूं।'' विश्व कप के बाद से शमी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला, दक्षिण अफ्रीका दौरे के बाद घरेलू सरजमीं पर अफगानिस्तान (टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला) और इंग्लैंड (टेस्ट श्रृंखला) के खिलाफ खेलने से चूक गए। टखने की सर्जरी के कारण वह आईपीएल के मौजूदा सत्र से बाहर है। शमी ने गुजरात टाइटंस के लिए पिछले दो सत्र (2022 और 2023) में 33 मैचों में 48 विकेट लिये हैं।

अगले चार महीनों में वजन प्रबंधन करना चुनौती होगी: विनेश फोगाट

कोलकाता (एजेंसी)। बिश्केश - ओलंपिक कोटा हासिल कर राहत महसूस कर रही विनेश फोगाट का मानना है कि पेरिस खेलों की तैयारी के लिए 50 किग्रा के सबसे निचले वर्ग में अपना वजन बनाये रखना उनके लिए चुनौतीपूर्ण होगा। विनेश ने एशियाई ओलंपिक क्वालीफायर में शानदार प्रदर्शन किया, जहां उन्होंने बिना अंक गंवाये अपना लगातार तीसरा ओलंपिक कोटा पक्का कर लिया।

विनेश भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह के विरोध के कारण लगभग डेढ़ साल तक नियमित अभ्यास और खेल से दूर रही। इस दौरान अंतिम पंघाल ने 53 किग्रा वर्ग में कोटा स्थान हासिल कर लिया। विनेश लंबे समय से इसी भार वर्ग में चुनौती पेश करते रही है। देश की सबसे सफल महिला पहलवान के पास ओलंपिक कोटा सुनिश्चित करने के लिए वजन वर्ग बदलने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

विनेश ने 50 किग्रा वर्ग में कोटा सुनिश्चित करने के बाद कहा, 'मुझे अपने वजन को बेहतर तरीके से प्रबंधित करना होगा। मैंने इतने लंबे समय के बाद अपने वजन को कम कर 50 किलो तक किया है इसलिए मैं इसे जितना संभव हो उतना बनाए रखने की कोशिश करूंगी।' इस 29 साल की पहलवान ने कहा, 'मेरी मांसपेशियां मजबूत हैं, इससे मेरा वजन जल्दी बढ़ जाता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कितनी फिट हूं, फिर भी मेरा वजन बढ़ता है। मैं सिर्फ अपना वजन नियंत्रित करना चाहती हूं। मेरे पास चार महीने बचे हैं और हर दिन बहुत महत्वपूर्ण है।' विनेश ने कहा, 'मैंने वजन में बदलाव इसलिए किया क्योंकि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मैंने अपनी खुशी से ऐसा नहीं किया। मैंने 50 किग्रा वर्ग में अपने देश के लिए कोटा जीता। मुझे खुशी है कि मैं ओलंपिक में जा सकती हूं। मैं 50 किग्रा वर्ग में जाऊंगा या 53 किग्रा वर्ग में, यह ट्रायल में तय होगा, लेकिन जो भी हो, मैंने अपने देश के लिए कोटा जीता है।' विनेश को इससे पहले रियो और तोक्यो ओलंपिक में निराशा का सामना करना पड़ा है। लेकिन वह अब हर हाल में ओलंपिक पदक के सपने को पूरा करना चाहती है। उन्होंने कहा, 'मैं बस अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहती हूं। मुझे कुश्ती करते हुए 20 साल हो गए हैं। मुझे बस ओलंपिक पदक चाहिए। हर कोई इसके लिए काम कर रहा है।' विनेश ने दावा किया था कि वह अवसाद से जूझ रही थीं और यहां तक कि वह कोविड-19 की चपेट में भी आ गई थीं और तत्कालीन डब्ल्यूएफआई प्रमुख के खिलाफ लंबे समय तक विरोध और कानूनी लड़ाई के

कारण मानसिक दबाव काफी बढ़ गया था। इन सब के बावजूद वह बिश्केक में कोटा जीतने में सफल रही। उन्होंने कहा, 'यह कठिन था लेकिन जब आप जीतते हैं तो हर चीज सार्थक हो जाती है। मैं अगले चार पांच दिन शांति के साथ रह सकती हूं। मेरा मुख्य लक्ष्य ओलंपिक में पदक जीतना है। मैं वह करने की कोशिश करूंगी जो पिछले दो ओलंपिक में नहीं कर सकी। मैं इस ओलंपिक में बेहतर प्रदर्शन कर सकती हूं।'

पुरुषों के मुकाबले महिलाओं के बैट का वजन होता है कम, महिलाओं के बल्ले का वजन रहता है 1 किलो 100 ग्राम

नई दिल्ली। क्या आपको मालूम है कि महिला क्रिकेटरों के लिए तैयार होने वाले बल्ले का पुरुषों के मुकाबले वजन कम होता है। पुरुष के लिए तैयार होने वाले बल्ले का वजन जहां 1 किलो 200 ग्राम रहता है। वहीं महिलाओं के लिए जो बल्ले तैयार किए जाते हैं। उनका वजन 1 किलो 100 ग्राम रहता है। वहीं एक स्पोर्ट्स व्यापारी के अनुसार महिलाओं के लिए तैयार होने वाले बल्ले में वजन के साथ-साथ उसकी हाइट भी कम रहती है। उन्होंने बताया की इन बल्ले की बात की जाए तो यह 33 इंच लम्बाई वाला होता है। वहीं पुरुषों के बल्ले की लंबाई 38 इंच रहती है। एक्सपर्ट के अनुसार भले ही पुरुषों के मुकाबले महिलाओं के लिए तैयार होने वाले बल्ले का वजन 100 ग्राम कम रहता हो।

पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में एक नक्सली ढेर

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में एक नक्सली को पुलिस ने ढेर कर दिया है। छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में सुरक्षा बलों के साथ अलग-अलग मुठभेड़ों में इस साल अब तक 80 नक्सली मारे जा चुके हैं। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि भैरमगढ़ थाना क्षेत्र के केशकुतुल गांव के पास एक जंगल में कई नक्सलियों के होने की सूचना मिली। सुबह करीब साढ़े पांच बजे गोलीबारी शुरु होगी। जब डीआरजी की एक टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली थी। उन्होंने कहा कि रायपुर से लगभग 400 किलोमीटर दूर स्थित केशकुतुल-केशमुंडी जंगलों में नक्सलियों के डिवीजन सप्लाई टीम कमांडर कवासी पंडारू और 15-20 अन्य कैडरों की मौजूदगी की सूचना के आधार पर ऑपरेशन शुरू किया गया था। दोनों ओर से गोलीबारी शुरु हुई जिसमें एक नक्सली को मार गिराया। अधिकारी ने बताया कि गोलीबारी रुकने के बाद घटनास्थल से एक नक्सली का शव, एक हथियार और विस्फोटक बरामद किया गया। उन्होंने बताया कि इलाके में तलाशी अभियान अभी भी जारी है। इस मुठभेड़ से पहले सुकमा में दो इनामी समेत तीन नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर किया था। आत्मसमर्पण करने वालों में एक महिला नक्सली भी है जो पूर्व में एसजेडसीएम बारसे देवा की गार्ड रही है। समर्पण करने वालों में एक लाख का इनामी डीएकेएमएस अध्यक्ष कवासी हुंगा , नुप्पो भीमा मिलिशिया डिप्टी कमांडर शामिल है।

शराब घोटाला मामले में ईडी ने छग के पूर्व आईएएस अधिकारी को किया गिरफ्तार

रायपुर। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में छत्तीसगढ़ के पूर्व आईएएस अधिकारी अनिल टुटेजा को गिरफ्तार किया है। आधिकारिक सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी देते बताया कि ईडी ने 2003 बैच के अधिकारी को शनिवार को रायपुर में आर्थिक अपराध शाखा और भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो कार्यालय से हिरासत में ले लिया जहां अधिकारी अनिल टुटेजा और उनके बेटे यश टुटेजा उसी मामले में अपना बयान दर्ज करने गए थे। सूत्रों ने कहा कि अनिल टुटेजा को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के प्रावि?धानों के तहत हिरासत में लिया गया है और उनकी रिमांड की मांग करते हुए कोर्ट के सामने पेश किए जाने की संभावना है। अनिल टुटेजा पिछले साल ही अपने पद से रिटायर्ड हुए थे। सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल ही में आयकर विभाग की शिकायत पर आधारित अपनी पिछली एफआईआर को रद्द करने के बाद ईडी ने कथित शराब घोटाला मामले में एक नया मनी लॉन्ड्रिंग मामला दर्ज किया था। ईडी ने आरोप लगाया था कि छत्तीसगढ़ में बेची गई शराब की हर बोतल से अवैध रूप से धन जमा किया गया है और रायपुर मेयर के बड़े भाई के नेतृत्व में शराब सिंडिकेट द्वारा 2,000 करोड़ रुपए के भ्रष्टाचार और धनशोधन के सबूत मिले हैं। इसी के तहत ईडी ने यह कार्रवाई की है।

मणिपुर में 22 अप्रैल को दोबारा होगी वोटिंग

- 11 मतदान केंद्रों पर पड़ेंगे वोट

इम्फाल । मणिपुर के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने घोषणा की है कि मणिपुर लोकसभा क्षेत्र के 11 मतदान केंद्रों पर दोबारा वोटिंग की जाएगी। 22 अप्रैल को दोबारा वोटिंग कराई जाएगी। बता दें ?कि निर्वाचन आयोग ने 19 अप्रैल को इन मतदान केंद्रों पर हुई वोटिंग को अमान्य घोषित करने और दोबारा से मतदान कराने को कहा था, इसके बाद ही ये फैसला आया है मणिपुर निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि यहां के खुरई निर्वाचन क्षेत्र के मोइरंगकम्पु साजेब और थोंगम लीकाई, क्षेत्रीगाओ के 4, इंफाल पूर्वी जिले के थोंगजू में 1, उरीपोक में 3 और इंफाल पश्चिम जिले के कोंथौजम में 1 मतदान केंद्रों पर दोबारा से वोट डाले जाएंगे। 19 अप्रैल को हुई वोटिंग के दौरान जातीय संघर्ष के चलते तनाव ग्रसित चल रहे मणिपुर के इन केंद्रों से गोलीबारी, धमकी देने और कुछ बूथों पर ईवीएम में तोड़-फोड़ करने जैसे मामले दर्ज हुए थे। मणिपुर की दो लोकसभा सीट इनर मणिपुर और आउटर मणिपुर के लिए शुक्रवार 19 अप्रैल को लोकसभा के पहले चरण में मतदान हुआ था, इस दौरान 72 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। मणिपुर में वोटिंग के दौरान हुई घटनाओं के मद्देनजर कांग्रेस ने मणिपुर के 47 मतदान केंद्रों पर फिर से वोटिंग कराए जाने की मांग की थी।

भाजपा अकेले ही जीतेगी 350 सीटें, जाने माने अर्थशास्त्री ने लोकसभा चुनाव को लेकर की भविष्यवाणी

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के पहले चरण का मतदान हो चुका है। कम मतदान ने राजनीतिक दलों और आयोग को चिंता में डाल दिया है लेकिन, दूसरे चरण में सभी राजनीतिक दल और उनके नेता बंपर वोटिंग की उम्मीद लगाए हुए हैं। इस बीच जाने माने अर्थशास्त्री ने लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर भाजपा की बड़ी जीत की भविष्यवाणी की है। उन्होंने दावा किया कि इस बार भाजपा को 330 से 350 सीटें मिल सकती है। इतना ही नहीं भाजपा तमिलनाडु जैसे राज्य में 5 सीट हासिल कर सकती है। अर्थशास्त्री सुरजीत भल्ला ने अपनी नई किताब हाउ वी वोट का विमोचन किया, ने एक टीवी चैनल को दिए साक्षात्कार में कहा कि भाजपा को इस आम चुनाव में 330 से 350 सीटें मिल सकती हैं। उन्होंने दावा किया भाजपा अपने दम पर 330 से 350 सीटें जीत सकती है। यहां उन्होंने सिर्फ भाजपा की बात की एनडीए की नहीं। सुरजीत की भविष्यवाणी के मुताबिक 2024 के चुनाव में भाजपा को 5 से 7 फीसदी ज्यादा सीटें मिल सकती हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन को 44 सीटें मिल सकती हैं। भल्ला ने कहा कि विपक्षी गठबंधन के साथ समस्या नेतृत्व की है। यह सच है कि अर्थव्यवस्था सबसे ज्यादा मायने रखती है, लेकिन नेतृत्व भी दूसरे नंबर पर आता है और इन दोनों पक्षों में भाजपा की स्थिति मजबूत है। अगर विपक्ष एक ऐसे नेता का चयन कर लेता जो पीएम मोदी तुलना में आधी भी अपील करता तो हो सकता था कि इस बार का चुनाव रोचक और कड़ा हो सकता था।

भारत में महिलाओं की लाइफ लाइन हुई बेहतर.....68 से 71 हुई उम्र

नई दिल्ली। भारत की आबादी लगातार बढ़ रही है। कुछ समय पहले भारत ने चीन को भी मामले में पछाड़ दिया है। रिपोर्ट्स की मानें हर साल देश की आबादी 1 प्रतिशत बढ़ रही है। अब यूएनएफपीए ने रिपोर्ट जारी की है, जिसमें बताया गया है कि भारत की अब डेढ़ अरब पहुंच गई है। वहीं महिलाओं के लिए अच्छी खबर है। इसमें बताया गया हैं कि महिलाओं की जीवन प्रत्याशा में लगभग साढ़े तीन साल की बढ़ोतरी हुई है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में पुरुषों की जीवन प्रत्याशा 71 साल और महिलाओं की 74 साल है। साल 2020 तक पुरुषों की जीवन प्रत्याशा 67.8 और महिलाओं की 70.4 साल थी। भारत की आबादी 144.17 करोड़ तक पहुंच गई है। जनसंख्या का आंकड़ा अगले 77 सालों में बढ़कर दोगुना होगा। साल 2050 तक भारत में दुनिया के 17 फीसदी बुजुर्ग होंगे। अभी देश में 65 साल से ज्यादा उम्र के बुजुर्ग 7 प्रतिशत से कम हैं। दुनिया में अनुमानित आबादी के साथ भारत सबसे आगे है, जबकि चीन 142.5 करोड़ के साथ दूसरे स्थान पर है। 2011 में पिछली जनगणना में देश की आबादी 121 करोड़ थी। इतना ही नहीं भारत में यौन संबंधों को लेकर भी जागरूकता आई है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में अब 30 सालों में प्रजनन स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। मातृ मृत्यु (प्रेग्नेंसी के समय मौत) में कमी आई है। दुनिया में ऐसी मौतों में भारत का हिस्सा 8 प्रतिशत है। इसका सारा श्रेय सस्ता, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को दिया जा रहा है। 2006-2023 में भारत में 23 प्रतिशत बाल विवाह भी हुए हैं। वहीं रिपोर्ट में कहा गया है कि 25 प्रतिशत महिलाएं यौन संबंध बनाने से मना नहीं कर पाती है, जबकि 10 में से एक महिला गर्भनिरोधक उपायों के बारे में खुद निर्णय लेने में असमर्थ हैं।

महावीर जयंती पर खड़गे, राहुल और प्रियंका ने देशवासियों को दीं शुभकामनाएं

नयी दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी ने महावीर जयंती पर समस्त देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए इस पवित्र पर्व पर सबकी खुशहाली की कामना की है। इस अवसर पर कांग्रेस अध्यक्ष खडगे ने शुभकामनाएं देते हुए कहा, कि भगवान महावीर का जीवन और शिक्षाएँ हमें दयालु और सरल बनने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी शिक्षाएँ हमें खुशी, संतुष्टि और निःस्वार्थता के जीवन का मार्ग दिखाती हैं।

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह ने कहा था- भ्रष्टाचार समाज के लिए एक कैंसर है

- सिसोदिया की जमानत पर सीबीआई के वकील ने कोर्ट को बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की एक कोर्ट में चल रहे दिल्ली शराब घोटाला में सीबीआई और ईडी द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार और मनी लॉउन्ड्रिंग मामलों में आम आदमी पार्टी (आप) नेता मनीष सिसोदिया की जमानत याचिकाओं पर सुनवाई हुई। कोर्ट ने दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला 30 अप्रैल तक के लिए सुरक्षित रख लिया।

सीबीआई ने कोर्ट को बताया कि आप नेता मनीष सिसोदिया ने जमानत के लिए ट्रिपल टेस्ट को पूरा नहीं किया है। सीबीआई ने सिसोदिया की जमानत याचिका का विरोध करते हुए कहा कि वह एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। वे जारी जांच में बाधा डाल सकते हैं। सीबीआई की ओर से पेश वकील पंकज गुप्ता ने कहा कि मनीष सिसोदिया ट्रिपल टेस्ट को पूरा नहीं कर रहे हैं। वह आप में बहुत शक्तिशाली पद पर हैं और दिल्ली सरकार के उपमुख्यमंत्री थे, सीबीआई ने कोर्ट को बताया जिस दिन उन पर केस दर्ज हुआ उसी दिन उन्होंने अपना मोबाइल फोन नष्ट कर दिया था। वह दस्तावेजों को गायब करने में भी शामिल हैं, क्योंकि पुराने कैबिनेट नोट वाली फाइल में से एक अब भी गायब है।

सीबीआई के वकील ने कहा कि सिसोदिया समानता के आधार पर जमानत के लिए योग्य नहीं हैं क्योंकि वह मुख्य आरोपी हैं। वकील ने उन्हें साजिश का मास्टरमाइंड बताते हुए कहा कि यह मनीष सिसोदिया निर्देश पर आधारित था कि अपराध किया गया था। पूरा समुदाय आर्थिक अपराधों का खामियाजा भुगत रहा है। इस दौरान सीबीआई के वकील ने कांग्रेस सरकार के पूर्व पीएम का जिक्र करते हुए कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा था, भ्रष्टाचार समाज के लिए एक कैंसर है। सीबीआई और ईडी का आरोप है कि दिल्ली शराब घोटाले को संशोधित करते समय अनियमितताएं बरती गईं, शराब के लाइसेंस धारकों को अनुचित लाभ दिया गया, लाइसेंस शुल्क माफ कर दिया गया या कम कर दिया गया और सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी के बिना लाइसेंस दिए गए। कोर्ट 30 अप्रैल को जमानत पर फैसला सुनाएगी।

कैफे ब्लास्ट मामले में कई खुलासे-पाकिस्तान कनेक्शन भी आ रहा सामने

बेंगलुरु । रामेश्वरम कैफे में हुए ब्लास्ट के मामले में अभी पूरी तरह पर्दाफास नहीं हुआ है। लेकिन जांच एजेंसियों को नए नए आउटपुट मिल रहे हैं। एजेंसियां अब आरोपियों के ऑनलाइन हैंडलर की पहचान करने की कोशिश कर रही हैं, जिसका कोडनेम कर्नल है। अब्दुल मथीन ताहा को इस अटैक का मेन प्लानर और मुसाविर हुसैन शाजिब को हमलावर बताया जा रहा है। अधिकारियों को संदेह है कि कर्नल इन दोनों से संपर्क में था जो 2019-20 में आईएस अल-हिंद मॉड्यूल से जुड़े थे। माना जाता है कि कर्नल दक्षिण भारत में कई युवाओं के संपर्क में था। उसने क्रिप्टो-वॉलेट के जरिए धन भेजा। साथ ही धार्मिक संरचनाओं, हिंदू नेताओं और प्रमुख स्थानों पर हमले के लिए प्रेरित करने का काम किया।सीनियर अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया, नवंबर 2022 में मंगलुरु ऑटोरिक्शा विस्फोट के बाद कर्नल नाम के हैंडलर के बारे में जानकारी मिली। वह मध्य-पूर्व में कहीं से काम करता है। ऐसा हो सकता है कि वह अबू धाबी में हो। जांच एजेंसियां आईएस समूह के छोटे मॉड्यूल बनाकर आतंकी गतिविधियों में पाकिस्तान की जासूसी एजेंसी आईएसआई के साथ कर्नल की मिलीभगत से इनकार नहीं कर रही हैं। मालूम हो कि आईएसआई ने पहले भी भारत में आतंकी मॉड्यूल को आईएस के गुर्गों से बढ़ावा देने का काम किया है, जैसे कि अक्टूबर में राजधानी दिल्ली में तीन आईएसआई-स्पॉन्सर्ड आईएस मॉड्यूल सदस्यों की गिरफ्तारी हुई थी।आतंकवाद-रोधी एजेंसी ने 1 मार्च के विस्फोट का मामला अपने हाथ में लिया था। बम विस्फोट के इस मामले में लगभग 10 लोग बम से घायल हुए थे। दोनों संदिग्धों की पहचान मुसाविर हुसैन शाजिब और अब्दुल मथीन ताहा के रूप में की गई है। शिवमोग्गा जिले के तीर्थहल्ली का रहने वाला मुसाविर हुसैन शाजिब इस हमले का मास्टरमाइंड है और उसी ने इस धमाके को अंजाम दिया था।

स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हुए तो भाजपा आसानी से केंद्र की सत्ता में वापस नहीं आने वाली : मायावती

गाजियाबाद (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने रविवार को इलेक?ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) को लेकर संदेह जाहिर करते हुए दावा किया कि अगर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हुए तो इस बार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) केंद्र की सत्ता में आसानी से वापस नहीं आने वाली। बसपा प्रमुख ने रविवार को अमरोहा में पार्टी उम्मीदवार मुजाहिद हुसैन और गाजियाबाद में नंदकिशोर पुंडीर के समर्थन में अलग-अलग जनसभाओं को संबोधित किया। बसपा प्रमुख ने अमरोहा में भाजपा पर मुसलमानों के उत्पीड़न और गाजियाबाद में पश्चिमी उप्र में क्षत्रियों को टिकट न देकर उनकी उपेक्षा का आरोप लगाया।

मायावती ने कांग्रेस, भाजपा और इनके अन्य सभी सहयोगी दलों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, ''आजादी के बाद केंद्र और राज्यों में सत्ता ज्यादातर कांग्रेस के हाथों में रहीं, लेकिन अधिकांश मामलों में गलत नीतियों के कारण उसे केंद्र तथा राज्यों की सत्ता से बाहर होना पड़ा।'' भाजपा पर कांग्रेस की राह पर चलने का आरोप लगाते हुए बसपा प्रमुख ने कहा, '' पिछले कई वर्षों से भाजपा और उनके सहयोगी दल केंद्र तथा राज्यों की सत्ता में काबिज हैं लेकिन इनकी जातिवादी, पूंजीवादी, संकीर्ण, सांप्रदायिक, द्वेष पूर्ण नीतियों, कार्यप्रणाली और इनकी कथनी तथा करनी में अंतर होने के कारण लगता है कि इस बार भाजपा केंद्र की सत्ता में आसानी से वापस नहीं आने वाली।''

उन्होंने कहा, '' बशर्ते अगर चुनाव इस बार स्वतंत्र और निष्पक्ष हुए और ईवीएम में गड़बड़ी नहीं की गई।'' मायावती ने कहा, '' वैसे भी इस बार चुनाव में इनकी (भाजपा) पुरानी और नयी नाटकबाजी, जुमलेबाजी, गारंटी आदि काम नहीं आने वाले क्योंकि अब देश की जनता इन्हें समझ चुकी है।'' उन्होंने आरोप लगाया, '' इनकी (भाजपा) पार्टी ने देश के गरीब, कमजोर तबकों व अन?य मेहनतकश लोग जिनसे उन्होंने अच्छे दिन दिखाने के वादे किये, उसका एक चौथाई कार्य नहीं किया।'' पूर्व मुख्यमंत्री ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा, '' इनका (भाजपा) ज्यादातर समय और ताकत बड़े पूंजीपतियों, धन्नासेठों को धनवान बनाने और उन्हें छूट देने तथा बचाने में लगा।''

मायावती ने दावा किया कि अब ऐसा लगता है कि कांग्रेस पार्टी की तरह भाजपा ने केंद्र की अधिकांश जांच एजेंसियों का ''राजनीतिकरण'' कर दिया है। गाजियाबाद में बसपा उम्मीदवार नंदकिशोर पुंडीर के समर्थन में आयोजित जनसभा में मायावती ने भाजपा पर पश्चिमी उप्र में क्षत्रिय समाज की उपेक्षा का आरोप लगाते हुए कहा कि पश्चिमी उप्र में उच?च जाति के लोग काफी तादाद में रहते हैं लेकिन दुख की बात यह है कि भाजपा व अन्य पार्टियां, जो अपने को क्षत्रिय समाज की हिमायती समझती हैं, उन्होंने इस चुनाव में क्षत्रिय समाज की उपेक्षा की है। मायावती ने कहा कि बसपा ने पश्चिमी उप्र में अन?य समाज के साथ ही क्षत्रिय समाज को पूरा पूरा आदर सम्मान दिया है और टिकट बंटवारे में उनको उचित भागीदारी दी है।

गाजियाबाद के मौजूदा सांसद व केंद्रीय मंत्री जनरल (सेवानिवृत्त) वीके सिंह को टिकट न देकर भाजपा ने उप्र सरकार के पूर्व मंत्री अतुल गर्ग को टिकट दिया है। सिंह, क्षत्रिय समाज से आते हैं। मायावती ने अमरोहा से कांग्रेस के प्रत्याशी एवं 2019 में बसपा के टिकट पर जीते दानिश अली का नाम लिए बिना कहा, ''2019 में बसपा ने अमरोहा सीट से जिसे टिकट दिया, आप लोगों ने उसे जिताकर भेजा। उस व्यक्ति ने सांसद बनने के बाद न ही पार्टी और न ही क्षेत्र की जनता का मान-सम्मान का ध्यान रखा। उन्होंने जनता और पार्टी के साथ विश्वासघात किया।'' बसपा के टिकट पर अमरोहा से जीतने वाले दानिश अली को इस साल जनवरी में पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया गया था। अली बाद में कांग्रेस में शामिल हो गए और कांग्रेस पार्टी के टिकट पर अमरोहा से चुनाव लड़ रहे हैं।

एक सीट के लालच में हमें छोड़ दिया

-उमर अब्दुल्ला डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष महबूबा पर बरसे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ल इंडिया गठबंधन की सहयोगी पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उनकी पार्टी अनंतनाग-राजौरी संसदीय क्षेत्र में ऐसे मित्र के खिलाफ चुनाव लड़ रही है जो एक सीट के लिए लालची बन गया है। अब्दुल्ला ने पीडीपी के दक्षिण कश्मीर की सीट से चुनाव लड़ने पर यह बात कही।

उन्होंने कहा कि दक्षिण कश्मीर सीट पर लड़ाई भाजपा से नहीं है। दुर्भाग्य से, वहां नेशनल कॉन्फ्रेंस का मुकाबला हमारे एक मित्र से है जो कुछ दिन पहले तक हमारे साथ था। अब एक सीट के लालच में हमें छोड़ दिया। अब्दुल्ला ने श्रीनगर लोकसभा क्षेत्र से पार्टी उम्मीदवार आगा सैयद रुहुल्लाह मेहदी के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित किया। इसके बाद उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में कहा एनसी और पीडीपी विपक्षी इंडिया गठबंधन का हिस्सा हैं। वे पीपुल्स अलायंस फॉर गुपकार डिक्लेरेशन का भी हिस्सा था जिसका गठन अनुच्छेद 370 को निरस्त किए जाने के बाद किया गया था। एनसी की ओर से पीडीपी के लिए एक भी सीट छोड़े बिना कश्मीर घाटी में सभी 3 निर्वाचन क्षेत्रों से उम्मीदवार उतारने की घोषणा किए जाने के बाद यह गठबंधन टूट गया। पीडीपी ने तीनों सीट पर अपने उम्मीदवार उतारने की घोषणा की।

उन्होंने कहा कि भाजपा घाटी में संसदीय चुनाव सीधे तौर पर नहीं लड़ रही है, बल्कि वह अपनी पार्टी और पीपुल्स कॉन्फ्रेंस जैसे दलों का समर्थन कर रही है। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि भाजपा यहां किसका समर्थन करती है, लेकिन उनके जीतने की कोई संभावना नहीं है। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि भगवान ने चाहा तो नेशनल कॉन्फ्रेंस सभी तीन सीट जीतेगी। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री ने एनडीए के 400 पार वाले भाजपा के दावे पर कहा कि नतीजों के बाद सब कुछ साफ हो जाएगा। उन्होंने दावा किया कि लद्दाख सीट उनके हाथ से फिसल रही है। उन्होंने कहा कि कल हुए मतदान के बाद ऐसा लगता है कि वे उधमपुर सीट नहीं बचा पाएंगे। देखते हैं कि जम्मू सीट पर भी क्या होगा।

प्रधानमंत्री को अपशब्द कहने वाले झामुमो नेता ने मांगी माफी

- एसडीओ कोर्ट ने नजरूल इस्लाम को जारी किया था नोटिस

साहिबगंज (एजेंसी)। पीएम मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता एसडीओ की कोर्ट में पेश होकर लिखित माफीनामा पेश कर माफी मांगी है। पीएम नरेंद्र मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता नजरूल इस्लाम ने कोर्ट में माफी मांग ली है। उन्होंने सदर एसडीओ की कोर्ट में पेश होकर लिखित माफीनामा पेश किया। नजरूल इस्लाम की पीएम पर की गई टिप्पणी के बाद बीडीओ सुबोध कुमार ने आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करने सहित अन्य मामलों में साहिबगंज नगर थाने में केस दर्ज कराया था। इसके बाद एसडीओ कोर्ट ने उन्हें नोटिस जारी किया था। नजरूल इस्लाम शनिवार को अपने समर्थकों के साथ थाने पहुंचे और बयान दर्ज कराया। इसके बाद एसडीओ कोर्ट में पेश होकर लिखित में अपना पक्ष रखा। नजरूल इस्लाम झामुमो की केंद्रीय कमेटी का सदस्य हैं। बता दें 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती पर एक कार्यक्रम में नजरुल इस्लाम के भाषण का वीडियो वायरल हो गया था इसके बाद विवाद खड़ा हो गया था। वायरल वीडियो में वह पीएम मोदी के अबकी बार 400 पार के नारे का जिक्र करते हुए नजरुल कहते हैं, मैं आप लोगों से कहना चाहता हूं कि 400 सीट नहीं, 400 फिट अंदर नरेंद्र मोदी को गाड़ दिया जाएगा। नजरूल के इस वीडियो की भाजपा नेताओं ने सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। विवाद बढ़ने पर नजरूल इस्लाम ने एक वीडियो जारी कर माफी मांगी थी। उन्होंने कहा था, मैं एक प्रोफेसर हूं, मुझे अच्छे-बुरे की परख है। यदि मेरे बातों से किसी को ठेस पहुंची है, तो माफी मांगता हूं। मेरा कहने का तात्पर्य था कि हम पीएम मोदी की गारंटी की 400 के अंदर गांठ बांध देंगे।

भाजपा की सुविधा के लिए 1 जून तक कराया जा रहा मतदान: सीएम ममता बनर्जी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग को लपेटे में लिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि भारतीय चुनाव आयोग ने पीएम नरेंद्र मोदी और बीजेपी के लोगों को आराम देने के लिए मतदान की तारीख 1 जून तक रखी है ताकि बीजेपी के लोगों देश के संसाधनों का जमकर उपयोग कर सकें और उन्हें चुनावी प्रचार का पूरा वक्त मिले।मालदा जिले के गाज़ोल में टीएमसी उम्मीदवार और पूर्व आईपीएस अधिकारी प्रसून बनर्जी के समर्थन में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने कहा कि 19 अप्रैल से 1 जून तक चुनाव निर्धारित किए गए हैं ताकि मोदी और उनके कैबिनेट सहयोगी विशेष विमानों से यात्रा कर सकें और जमकर प्रचार कर सकें। देश में हर चरण से पहले उन्हें विपक्ष पर हावी होना है।

पश्चिम बंगाल के भाजपा और कांग्रेस सांसदों पर हमला करते हुए , बनर्जी ने आरोप लगाया कि 2019 में राज्य से चुने जाने के बावजूद, उनमें से किसी ने भी मनरेगा धन जारी करने के संबंध में राज्य का मामला नहीं उठाया। उन्होंने कहा , हमारे (टीएमसी) सांसद जब पिछले साल नवंबर में मनरेगा की धनराशि जारी करने की मांग को लेकर दिल्ली गए थे तो उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन कांग्रेस और भाजपा सांसदों ने गरीबों के लिए क्या किया है? कुछ भी नहीं। लेकिन, बंगाल भीख नहीं मागेगा। मैं आपकी रॉयल बंगाल टाइगर हूं। हमें जितने अधिक सांसद मिलेंगे, उतना अधिक काम होगा। बनर्जी ने सीपीआई (एम) और कांग्रेस पर भाजपा को बढ़ावा देने का आरोप लगाया और लोगों से किसी भी गैर-टीएमसी उम्मीदवार को वोट नहीं देने का आग्रह किया। मैंने ही इंडिया ब्लॉक का नाम दिया था। लेकिन बंगाल में इंडिया गुट नहीं है। हमारे लिए, यह राज्य के बाहर है, अंदर नहीं। ममता बनर्जी ने आगे कहा, ÷पहले चुनाव मई तक समाप्त हो जाते थे, लेकिन इस साल, इसे 1 जून तक बढ़ा दिया गया है ताकि पीएम मोदी सैन्य विमानों पर विभिन्न स्थानों का दौरा कर सकें। जबकि, दूसरी तरफ हमें हेलीकॉप्टर अपने स्वयं की व्यवस्था से जुटाने करने के लिए कहा जा रहा है। इन हेलीकॉप्टरों को भी भाजपा नेता बुक करा रहे हैं ताकि हमें वो भी न मिल सकें। उन्होंने कहा, लोगों को चिलचिलाती गर्मी से काफी असुविधा हो रही है, लेकिन मोदी इससे बेपरवाह हैं क्योंकि वे (भाजपा नेता) सभी सुविधाओं के साथ चुनाव प्रचार कर रहे हैं।बनर्जी ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग मोदी और उनकी पार्टी के सहयोगियों द्वारा तय की गई लाइन पर चल रहा है। बता दें कि 2019 लोकसभा चुनाव में सात चरणों का मतदान 11 अप्रैल से 19 मई तक हुआ था।

न कांग्रेस की रणनीति समझ पा रहीं और न ही राहुल को भुला पा रहीं स्मृति?

अमेठी (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी भाजपा की जुबां पर हमेशा रहते हैं। चुनावी सभा में कोई उन्हे राहुल बाबा कहता है तो कोई शहजादा बताकर उन्हे घेरता है। जब कांग्रेस की परंपरागत सीट रही अमेठी की बात हो तो केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी इस मौके को कैसे छोड़ सकतीं हैं। वे लगातार बार बार राहुल गांधी को घेरने की कोशिश करतीं नजर आ रहीं हैं। भाजपा प्रत्याशी स्मृति इरानी की सक्रियता ने चाहे अनचाहे राहुल को फिर से चुनावी केंद्र में ला दिया है। असल में स्मृति ने अपनी हर सभा में राहुल को निशाने पर लेकर, आरोप मढ़कर, भगोड़ा बताकर और गांधी परिवार पर तोहमत मढ़कर आम जन को राहुल रूपी सवाल सौंप दिया है। उनके इस कदम ने कहीं न कहीं अमेठी में राहुल पर नई बहस शुरू कर दी है। यह बहस किस मोड़ पर जाती है, इसका अंदाजा अभी लगाना थोड़ी जल्दबाजी होगी। लेकिन चुनावी समर में जो मैदान कांग्रेस प्रत्याशी के बिन सूना था वह अब राहुल के नाम से रोमांचित जरूर करने लगा है।

इतना सब होने के बाद भी अमेठी को लेकर कांग्रेस ने अपने पत्ते अभी तक नहीं खोले। वहां से चुनाव कौन लड़ेगा इसकी चिंता कांग्रेस से ज्यादा भाजपा कर रही है। राजनीति के जानकार बताते हैं कि अमेठी में भाजपा की स्मृति एक मजबूत प्रत्याशी हैं तो उन्हे कांग्रेस के उम्मीदवार से क्या लेना देना। वहां कोई भी खड़ा हो जाए। उन्हे तो अपने आप पर भरोसा होना चाहिए। भाजपा न तो कांग्रेस की चुप्पी के मायने समझ रही है और न ही राहुल गांधी की रणनीति। असल में 2019 में राहुल गांधी अमेठी के साथ ही केरल के वायनाड से भी चुनाव लड़े। अमेठी से भाजपा प्रत्याशी स्मृति इरानी से करारी हार मिली, वहीं वायनाड से जीतकर वह संसद पहुंचे। इस बार भी अभी तक राहुल वायनाड से ही मैदान में हैं। उनके अमेठी से चुनाव लड़ने पर संशय बरकरार है। यहां से कभी प्रियंका गांधी तो कभी रॉबर्ट वाड्रा के नाम की चर्चा हो रही है। समीकरण साधने के लिए स्थानीय प्रत्याशी पर भी मंथन चल रहा है। इस सब के बीच कांग्रेस कुछ भी खुलकर बोलने को राजी नहीं है। पार्टी का मौन कार्यकर्ताओं की दुविधा बढ़ाने वाला है।

राहुल गांधी अमेठी से चुनाव हारे। अभी नया राजनीतिक ठिकाना वायनाड है। इस बीच अमेठी से उनका जुड़ाव करीब कट सा गया। 20 फरवरी को यहां पहुंची उनकी भारत जोड़ो न्याय यात्रा में भी न उल्लास नजर आया था और न ही कांग्रेस नेताओं में उत्साह। संसदीय चुनाव की रंगत के बीच जब भाजपा ने स्मृति इरानी को

मैदान में उतार मोर्चेबंदी शुरू कर दी है, तो वहीं कांग्रेस में प्रत्याशी पर ही मंथन चल रहा है। हालांकि अमेठी में पांचवें चरण में 26 अप्रैल से नामांकन की शुरुआत होने वाली है। तीन माई नामांकन की अंतिम तिथि है और 20 मई को मतदान। इस सब के बीच अमेठी से दूर रहते हुए भी बीते 15 दिनों से राहुल गांधी फिर चर्चा में हैं। यह कांग्रेस की पहल नहीं, बल्कि भाजपा प्रत्याशी स्मृति इरानी की रणनीति का ही प्रतिफल है।

बिजनेस छोड़ यूपी के व्यापारी ने ली दीक्षा

जयपुर में सोने से चमकते रथ के साथ भगवान महावीर की भव्य शोभायात्रा निकली

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर में आज जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जयंती मनाई जा रही है। इस मौके पर रामलीला मैदान तक भव्य झांकियां निकाली गईं। इन झांकियों में अलग-अलग मैसेज समाज को दिए गए। साथ ही लोग नाचते-गाते शोभायात्रा में शामिल हुए। जो रामलीला मैदान पहुंचकर धर्म सभा में बदल गई।

सभा के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन व महामंत्री मनीष बैद ने बताया- रामलीला मैदान में आचार्य चैत्य सागर, आचार्य शशांक सागर महाराज और गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ के सानिध्य में धर्म सभा रखी गई। इस धर्म सभा के लिए विशाल पाण्डाल बनाया गया है। धर्म सभा के दौरान दीक्षा का भी आयोजन किया गया। आचार्य चैत्य सागर महाराज के सानिध्य में दीक्षार्थी राकेश वीर भानू जैन ने दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षार्थी राकेश जैन का जन्म 27 जनवरी 1960 को कासगंज (उत्तर प्रदेश) में हुआ है। उनकी शिक्षा बीए तक हुई है। राकेश जैन के परिवार में माता-पिता, पत्नी सुमन लता, तीन पुत्र, एक पुत्री है। इनके आयरन स्टोर का बिजनेसमैन है। उन्होंने 2019 में आचार्य चैत्य सागर महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया था।

जयपुर के किशनपोल विधानसभा क्षेत्र में सबसे ज्यादा वोटिंग हुई

बीकानेर के नोखा एरिया में सबसे कम मतदान हुआ, 14 जगह 50 प्रतिशत से भी कम हुई वोटिंग

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। राजस्थान में लोकसभा चुनाव के पहले चरण की वोटिंग खत्म हो गई है। 12 लोकसभा सीटों पर इस बार हुई वोटिंग साल 2019 में हुए लोकसभा चुनावों की तुलना में 6.15 फीसदी कम रही। वोटिंग कम होने के पीछे कारण सावे और लोगों में चुनावों को लेकर कम रूझान माना जा रहा है। वहीं, इन 12 लोकसभा सीटों में शामिल 96 विधानसभा एरिया में हुई वोटिंग की स्थिति देखें तो सर्वाधिक वोटिंग किशनपोल विधानसभा क्षेत्र में हुई, जहां वोटिंग का प्रतिशत 68.72 फीसदी रहा। सबसे कम वोटिंग बीकानेर जिले की नोखा विधानसभा में रही, जहां वोटिंग प्रतिशत 40.27 फीसदी रहा। निर्वाचन आयोग की रिपोर्ट देखें तो प्रदेश में 12 लोकसभा सीटों पर इस बार वोटिंग प्रतिशत 57.88 फीसदी रहा, जो साल 2019 की तुलना में 6.15 फीसदी कम है। इन सभी 12 सीटों की विधानसभावार स्थिति देखें तो सबसे ज्यादा वोटिंग जयपुर शहर में किशनपोल विधानसभा एरिया में हुई। किशनपोल के अलावा तीन अन्य ऐसी विधानसभा भी रही, जहां का वोटिंग प्रतिशत 68 फीसदी से ऊपर रहा। इसमें तारानगर सीट पर 68.52 फीसदी, नोहर सीट पर 68.44 और हवामहल सीट पर 68.19 फीसदी वोटिंग हुई।

इन विधानसभा में 50 फीसदी से कम वोटिंग

विधानसभावार स्थिति देखे तो नोखा के अलावा 14 अन्य ऐसी विधानसभा सीटे है जहां वोटिंग प्रतिशत 50 फीसदी या उससे कम रहा। इसमें खेतड़ी (48.03), पिलानी (49.11), कोलायत (46.20), श्रीडूंगरगढ़ (48.98), श्रीमाधोपुर (48.54), नीमकाथाना (49.75), बानसूर (49.10), डीग-कुम्हेर (47.90), नदबई (49.61), वैर (50.01) बयाना (45.98), टोडाभीम (46.30), करौली (47.21), सपोटरा (43.20) और हिंडौन (50) शामिल है।

मां की हत्या में बेटी को फंसाना चाहते थे पुलिसवाले

जयपुर में नाबालिग को थाने में लाकर पूछा- तूने ही तेरी मम्मी को गोली मारी है ना

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर में 3 साल पहले हुए हत्या के केस में पुलिस पर सवाल खड़े हो गए हैं। दरअसल, केस की जांच कर रही मानसरोवर थाना पुलिस मृतक महिला की नाबालिग बेटी को ही आरोपी बनाना चाहती थी। थाने में बैठाकर पूछताछ की। इस दौरान कहा- बता तूने ही तेरी मम्मी को गोली मारी है ना। अब इस केस में मानसरोवर थाने के तत्कालीन एसएचओ सहित 4 पुलिसकर्मियों पर केस दर्ज किया गया है। पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ ने बताया- साल 2021 में स्वर्णपथ मानसरोवर निवासी सुमन (38) पत्नी पूरणचंद की गोली मारकर हत्या हुई थी। सुमन घरों में साफ-सफाई का काम करती थी। अगस्त 2021 में सुमन अपनी 14 साल की बेटी के साथ रामवीर के घर काम करने गई थी। घर पहुंची मां-बेटी को रामवीर अपनी पिस्टल दिखा रहा था। तभी अचानक ट्रिगर दबने से फायर हो गया। गोली सीधे सुमन के सिर में लगने से उसकी मौत हो गई थी। घटना के बाद हत्या और आर्म्स एक्ट में रिपोर्ट दर्ज कर तत्कालीन एसएचओ दिलीप कुमार सोनी ने जांच शुरू की। मामले में आरोपी रामवीर (26) पुत्र चरण सिंह निवासी खेडली अलवर हाल स्वर्ण पथ मानसरोवर को अरेस्ट किया था। पूछताछ में रामवीर ने बताया कि एक दिन पहले अपने दोस्त राजू जायसवाल से पिस्टल लेकर आया था। पुलिस ने दबिश देकर आरोपी राजू जायसवाल (33) पुत्र कुन्दनलाल निवासी खेडली अलवर हाल कावेरी पथ मानसरोवर को भी अरेस्ट कर लिया। दोनों आरोपी के खिलाफ चालान कोर्ट में पेश कर ट्रायल शुरू कर दिया गया था।

मेहंदीपुर धाम में 'अपने-अपने राम' आध्यात्मिक ऊर्जा सत्र आज से

कुमार विश्वास देंगे मोटिवेशनल सेशन, राज्यपाल और श्रीश्री रविशंकर भी आएंगे

राजस्थान की राजनीति

दौसा। धार्मिक नगरी मेहंदीपुर बालाजी धाम में हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर राम नाम की सरिता बहेगी। यहां बालाजी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत डॉ. नरेशपुरी महाराज के सान्निध्य में दो दिवसीय 'अपने-अपने राम' आध्यात्मिक ऊर्जा सत्र का आयोजन सोमवार को शुरू होगा। जिसमें आध्यात्मिक वक्ता डॉ. कुमार विश्वास द्वारा राम कथा पर मोटिवेशनल सेशन आयोजित किया जाएगा। 22 व 23 अप्रैल को होने वाले आयोजन के अवसर पर राज्यपाल कलराज मिश्र, आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्रीश्री रविशंकर, महामंडलेश्वर स्वामी महेश्वरानंद, पंचदशनाम अखाड़े के स्वामी अरुणगिरी, सूर्य पीठाधीश्वर लोहार्गल धाम स्वामी अवधेशाचार्य, त्रिवेणी धाम के रामरिछपालदास महाराज व हनुमानगढ़ी के महंत राजूदास समेत कई धर्म गुरु मौजूद रहेंगे।

कुमार विश्वास पहुंचे, दर्शन किए

रविवार दोपहर आध्यात्मिक वक्ता डॉ. कुमार विश्वास के बालाजी धाम पहुंचने मंदिर ट्रस्ट द्वारा उनका स्वागत किया गया। उन्होंने बालाजी महाराज के दर्शन कर खुशहाली की कामना की। इसके बाद महंत निवास में महंत डॉ. नरेशपुरी महाराज से मुलाकात करने पहुंचे। महंत ने उन्हें रुद्राक्ष की माला पहनाकर चांदी का श्रीफल भेंट किया।

आध्यात्मिक वक्ता डॉ. कुमार विश्वास ने बालाजी पहुंचकर भगवान के दर्शन किए।

राम कथा के आयोजन को लेकर तैयार किया जा रहा मंच।

22 बीघा में बनाया पंडाल

राम कथा के आयोजन को लेकर 22 बीघा भूमि में डोम बनाया गया है। जिसे बंगाल व यूपी के कारीगरों द्वारा सजाया गया है। पंडाल में हजारों लोगों की बैठक व्यवस्था के लिए कुर्सियां लगाई गई हैं। कार्यक्रम की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर एसपी रंजीता शर्मा ने जायजा लिया। 250 पुलिसकर्मियों समेत मंदिर ट्रस्ट के सुरक्षा गार्ड भी तैनात रहेंगे। आयोजन को लेकर बालाजी धाम की आकर्षक सजावट की गई है।

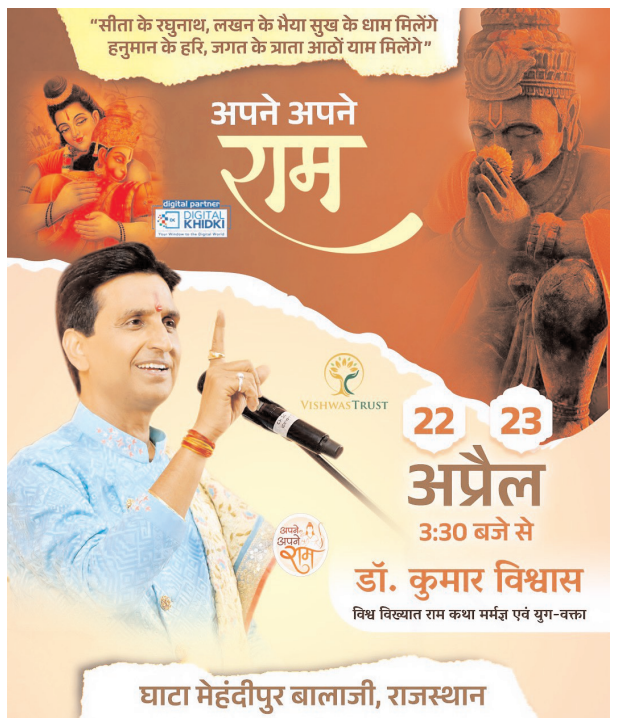

कार्यक्रम में हजारों श्रोताओं के बैठने के लिए कुर्सियां लगाई गई है।

जयपुर में शराब के नशे में दौड़ाई कार

टक्कर के बाद गाड़ी से निकलकर भागे युवक-युवती, ड्राइवर को लोगों ने पकड़ा

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। जयपुर के त्रिमूर्ति सर्किल पर देर रात एक बजे तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकरा गई। इससे कार के दोनों एयर बैग खुल गए। घटना के दौरान कार में चालक सहित चार लोग मौजूद थे। प्रत्यक्षदर्शियों का आरोपी है कि सभी शराब के नशे में थे। हादसा होते ही दो युवक और एक युवती कार से निकलकर भाग गए। एक युवक को लोगों ने पकड़ लिया, जो एसबीबीएस कर रहा है।

पकड़े गए युवक को लोगों ने मोती डूंगरी थाना पुलिस के सुपुर्द कर दिया। बताया जा रहा है कि तेज रफ्तार में कार सर्किल से निकल रही थी। इसी दौरान कार चालक का कार पर से कंट्रोल खत्म हो गया। जिस के बाद डिवाइडर से टकरा गई।

दुर्घटना थाना ईस्ट के एएसआई ईश्वर सिंह ने बताया- देर रात सूचना मिली की त्रिमूर्ति सर्किल पर कार डिवाइडर से टकरा गई है। जिस पर टीम को मौके पर भेजा गया। कार

सिटी से गणेश मंदिर की ओर जा रही थी। इस दौरान कार डिवाइडर से टकरा गई। किसी को भी चोट नहीं आई है। कार क्षतिग्रस्त हो गई है। इन लोगों के खिलाफ अभी तक दुर्घटना थाना पुलिस ने किसी भी प्रकार की कोई लापवरवाही का मुकदमा दर्ज नहीं किया है।

शराब के नशे में थे चारों

मौके पर मौजूद दीपक ने बताया- कार सवार लोग शराब के नशे में थे। घटना के बाद दो युवक और एक युवती मौके से भाग निकले। कार चालक इतना ज्यादा शराब के नशे में था कि वह भाग ही नहीं सका। इस पर लोगों ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया। दुर्घटना में समय पर एयरबैग खुल गए नहीं तो दुर्घटना में किसी की जान भी जा सकती था।

दूसर हादसे में कार ने पुलिसवालों को मारी टक्कर

वहीं, जयपुर में दूसरा हादसा जवाहर सर्किल इलाके में हुआ। जहां देर रात करीब एक बजे तेज रफ्तार कार ने पुलिस की 'डायल 112' को जोरदार टक्कर मार दी। इससे 'डायल 112' में बैठे तीन पुलिसकर्मी और एक परिवादी घायल हो गया। जिन्हें उपचार के लिए जयपुरिया अस्पताल भेजा गया।हादसे की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे मालवीय नगर एसीपी आदित्य पूनिया ने बताया कि टक्कर मारने वाली कार में सवार युवक हादसे के बाद कार छोड़कर भागने लगे, जिन्हें पास के नाकाबंदी पॉइंट पर तैनात पुलिसकर्मियों ने पकड़ लिया, जिनसे पूछताछ की जा रही है।

प्रोफेशनल्स हुए शामिल: श्री कृष्ण बलराम मंदिर में

370 महिला - पुरुषों ने लिया श्रील प्रभुपाद आश्रय

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। सच्चे सुख और आनंद की चाहत हो तो वो सिर्फ भगवान के चरणों का आश्रय लेने से ही प्राप्त होते हैं। जीवन के दुखों को त्यागकर सुख का मार्ग कैसे अपनाया जाए, इस ज्ञान का पथप्रदर्शन करता है भक्ति वेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद का मार्ग और भक्ति के मार्ग में प्रशस्त होने का रास्ता दिखाता है श्रील प्रभुपाद आश्रय समारोह।

रविवार को श्री श्री कृष्ण बलराम मंदिर में इस समारोह का आयोजन हुआ जिसमे भक्ति मार्ग की परीक्षा एवं इंटरव्यू पास कर चुके 370 लोगों ने इस मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा ली। गौरतलब है कि आश्रय लेने वालो में देश विदेश से लोग शामिल हुए जिनमें डॉक्टर्स, आर्मी , इंजीनियर , एडवोकेट , सरकारी कर्मचारी, राजनीति से जुड़े लोग,

शिक्षक आदि थे।

भक्ति मार्ग पर आगे बढ़ने का लिया संकल्प

आश्रय में भाग लेने वालों में पुरुष और महिलाएं दोनों ही शामिल हुए। कल्चर सेंटर के सुधर्मा हाल में आयोजत हुए श्रील प्रभुपाद आश्रय समारोह में लोगों ने साधना भक्ति मार्ग पर आगे बढ़ने का संकल्प लिया। आश्रय लेने वाले सभी लोगों के चेहरों पर उत्साह साफ झलक रहा था, सभी भक्त भक्ति मार्ग में आगे बढ़ने के लिए बहुत ही उत्सुक थे।

मंदिर के अध्यक्ष अमितासन दास ने आश्रय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा की भगवान श्री कृष्ण का भक्ति मार्ग सर्वश्रेष्ठ है और भक्ति वेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद श्री गौड़ीय वैष्णव परंपरा के महान आचार्य एवं गुरु हैं जिन्होंने पूरे विश्व में हरे कृष्ण आंदोलन को स्थापित किया। उन्होंने आश्रय की प्रक्रिया के बारे में आगे बताया कि इसके लिए पहले रजिस्ट्रेशन होता है।

यह कार्यक्रम 6 अलग-अलग स्तरों पर होता है जिन्हें पास करके भक्त श्रील प्रभुपाद का आश्रय लेने के हक़दार होता है। यह दीक्षा से पूर्व की प्रक्रिया है जिसमें कम से कम 2 साल का समय लगता है। परीक्षा के लिए पुस्तकों का पठन करना होता है , लिखित परीक्षा पास करना और साक्षात्कार अगले चरण होते हैं। सभी चरणों को पास करके दीक्षा के लिए भक्त तैयार होता है और भक्ति मार्ग में आगे बढ़कर अपना जीवन सफल बनाता है।

शहर में भगवान महीर के जन्म कल्याण उत्सव की धूम

राजस्थान जैन सभा जयपुर की महावीर जयन्ती स्मारिका के 59 वें अंक का विमोचन

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। राजस्थान जैन सभा जयपुर द्वारा प्रकाशित महावीर जयन्ती स्मारिका के 59 वें बहुरंगीय अंक का विमोचन परम पूज्य आचार्य चैत्य सागर, आचार्य शशांक सागर महाराज, गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में महावीर जयंती समारोह में किया गया।प्रबंध सम्पादक यश कमल अजमेरा ने बताया कि भगवान महावीर के जीवन चरित्र, सिद्धांतों एवं जैन धर्म के ज्ञान वर्धक तथा संदेशात्मक लेखों से सुसज्जित इस स्मारिका का विमोचन अतिथियों ने किया। स्मारिका के प्रधान सम्पादक का दायित्व डॉक्टर प्रेम चंद राँवका ने निभाया । अध्यक्ष सुभाष चंद जैन ने बताया कि प्रबंध सम्पादक यश कमल अजमेरा के साथ साथ समस्त सहयोगियों की टीम ने इसे मात्र 15 दिनो के इतने अल्प से समय में पूर्ण करने में अपना अतुलनीय सहयोग व योगदान दिया। महामंत्री मनीष बैद के ने बताया कि इस मौके पर सभा के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष दर्शन जैन, उपाध्यक्ष मुकेश सोगानी ,महामंत्री मनीष बैद, मंत्री विनोद जैन %कोटखावदा% ,कोषाध्यक्ष राकेश छाबड़ा, प्रबंध सम्पादक यश कमल अजमेरा, महावीर जयंती समारोह के प्रमुख समन्वयक अशोक जैन नेता एवं कार्यकारिणी सदस्यों सहित बड़ी संख्या में समाजश्रेष्ठी उपस्थित थे।मंत्री विनोद जैन %कोटखावदा% ने बताया कि स्मारिका में सभा द्वारा की जा रही समाजोपयोगी गतिविधियों की जानकारी तथा किये गये विभिन्न आयोजनों की झलकियां शामिल की गई है। स्मारिका में आचार्य, मुनिराजो, आर्यिका माताजी तथा माननीय राज्यपाल, मुख्यमंत्री, सासंद सहित कई राजनेताओं, गणमान्य समाज श्रेष्ठीयो एवं प्रशासनिक अधिकारियों के शुभकामना संदेश भी प्रकाशित किये गये हैं। स्मारिका के अंक को देश में जैन धर्म के सभी साधु संतो, तीर्थ क्षेत्रों, विद्वानों, समाजश्रेष्ठीयो सहित श्रावकों को भिजवाई जावेगी।

जयपुरिया अस्पताल: सोनोग्राफी के रोज 250 मरीज, 170 की जांच, बाकियों को 10 दिन की वेटिंग

जयपुर। जयपुरिया अस्पताल में मरीजों को सोनोग्राफी के लिए कई दिन तक इंतजार करना पड़ रहा है। स्थिति यह है कि सामान्य मरीजों के अलावा गर्भवती महिलाओं को भी 10 दिन बाद जांच की तारीख दी जा रही है। ऐसे में या तो मरीजों को इंतजार करना पड़ता है या फिर निजी लैब पर जाने को मजबूर होते हैं। अस्पताल में रोजाना 170 से अधिक सोनोग्राफी होती हैं और चार मशीनें हैं। तीन मशीनों पर तो नियमित रूप से जांच होती हैं, लेकिन एक मशीन अभी काम में नहीं ली जा रही है।

वजह यह कि इस मशीन को चलाने के लिए स्टाफ ही नहीं है। वहीं अन्य तीन मशीनों में से भी दो ही मशीन नियमित रूप से चलती हैं, क्योंकि कभी स्टाफ के अवकाश पर होने या कोर्ट में तारीख पर होता है। अस्पताल में रेडियोलॉजी के एचओडी डॉ. जीवराज सिंह बताते हैं कि स्टाफ और रेजिडेंट की कमी है, लेकिन इमरजेंसी व एडमिट केस या गंभीर मरीजों के लिए कोई वेटिंग नहीं है।

अस्पताल में गर्भवती से लेकर पेट और अन्य बीमारियों की जांच के लिए रोजाना 250 से अधिक सोनोग्राफी लिखी जाती हैं, लेकिन हर दिन इतने अधिक मरीजों की जांच नहीं हो पाती और उन्हें वेटिंग दे दी जाती है। परेशानी की बात यह भी है कि जांच के लिए कभी भी जाने पर दो से तीन घंटे का इंतजार करना ही होता है।

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक एवं संपादक रमाकांत गोस्वामी द्वारा महारानी प्रिन्टर्स, 17 मां वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड़ जयपुर छपवाकर/मुद्रित कर, पीपलेश्वर मंदिर के पीछे, नला मौहल्ला,दौसा (राजस्थान)-303303 से प्रकाशित किया। संपादक: रमाकान्त गोस्वामी, कार्यकारी संपादक भूपेंद्र कुमार शर्मा, स्थानीय संपादक: संजय लाटा (अवैतनिक) आरएनआई नं. RAJHIN/2012/43137, ब्रांच ऑफिस: 18k3, पंकज सिंघवी मार्ग, ज्योति नगर, जयपुर-302002, मो. नं. 7610866001, हैल्प लाईन नं.: 8946840063, ईमेल- tniawaz.news@gmail.com, Group of Sites- www.hpnews.in, www.right2action.in, www.jaipurtak.com, www.dharmjagran.com, www.hindus-tanpatrika.com, www.freedomathought.com, www.tniawaaz.in (* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तदायी), किसी भी वाद-विवाद से निपटने के लिए न्यायालय जयपुर मान्य होगा।